भगवान सदा तुम्हारे साथ हैं

(कल्याण-कुन्ज-भाग-3)

॥श्री हरिः॥

'शिव का निवेदन'

मन तरङ्गों का समुद्र है। 'शिव' के मनमें भी अनेक तरङ्गें उठती हैं, उन्हींमेंसे कुछ तरङ्गे लिपिबद्ध भी हो जाती है और उन्हीं अक्षराकारमें परिणत तरङ्गोंका यह एक छोटा-सा संग्रह प्रकाशित हो रहा है। इस संग्रहमें पुररुक्ति और और क्रमभङ्ग दोष दिखायी देंगे, तरङ्गें ही जो ठहरीं। यह सत्य है कि तरङ्गोंके पीछे भी एक नियम काम करता है और वहाँ भी एक नियमित क्रमधारा ही चलती है, परन्तु उसे हम अपनी इन आँखोंसे देख नहीं पाते। हमें तो हवाके झोंकोंके साथ-साथ तरङ्गोंके भी अनेकों क्रमहीन और अनियमित रूप दीख पड़ते हैं। सम्भव है सूक्ष्मदृष्टि से देखनेवाले पुरुषोंको इस तरङ्ग-संग्रहमें भी किसी नियमका रूप दिखलायी दे। 'शिव' को इससे कोई मतलब नहीं। 'शिव' ने प्रकाशकों के कहनेसे इतना ही किया कि इधर-उधर बिखरे वाक्योंको एकत्रकर उनपर कुछ शीर्षक बैठा दिये हैं। पाठकोंका इससे कोई लाभ या मनोरजंन होगा या नहीं, इस बातको 'शिव' नहीं जानता।

यह दूसरे भागका निवेदन है। इसी निवेदकके साथ यह तीसरा भाग प्रकाशित हो रहा है।

॥श्री हरिः॥

आठवें संस्करणके विषयमें निवेदन

"कल्याण-कुन्ज भाग-3" का आठवाँ संस्करण पाठकों की सेवामें प्रस्तुत करते हमें प्रसन्नता हो रही है। "कल्याण" कामी महानुभावोंने इस पुस्तिकाका जो आदर किया है, वह अभिनन्दनीय हे। इस पुस्तिकाके रूपमें किन महानुभावके पूत हृदयके उदात्त विचार हैं, यह जाननेकी अभिलाषा पाठकोंके मनमें वर्षोंसे रही है। अनेकों पाठकोंने व्यक्तिगत रूपसे पत्र लिखकर हमसे यह पूछा है और हमने उन्हें इसका स्पष्टीकरण भी किया है, परन्तु खले रूपमें यह बात कभी प्रकट नहीं की गयी कि ये विचार हमारे परम श्रद्धास्पद भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दारके पावन हृदयके उद्गार हैं, जो उन्होंने "कल्याण" मासिक पत्रमें प्रतिमास "कल्याण" शीर्षकसे प्रकाशित किये थे। पीछे उन्हीं विचारोंको संगृहीत करके पुस्तकरूप दे दिया गया।

"कल्याण" शीर्षकसे "कल्याण" में प्रकाशित इन विचारोंके अन्तें श्रीभाईजी अपने नामके स्थानपर 'शिव' नाम दिया करते थे। ऐसा करनेका वास्तविक हेतु तो अन्तर्यामी प्रभु या श्रीभाईजी स्वयं ही जानते थे, पर इतने वर्षोंतक साथमें रहकर श्रीभाईजी प्रकृतिको देखने-समझनेसे यह अनुमान होता है कि उनका वैष्णवोचित दैन्य इतनी पराकाष्ठाको पहुँच चुका था कि वे आदेश-उपदेशके रूपमें लिखी पराकाष्ठाको पहुँच चुका था कि वे आदेश उपदेशके रूपमें लिखी वस्तुको अपने नामसे प्रकाशित करनेमें संकोच-अनुभव करते होंगे; यद्यपि मेरी अल्पदृष्टिसे श्रीभाईजी इतनी ऊँची आध्यात्मिक भूमिकापर आरूढ़ थे कि सभी प्रकारका उपदेश आदेश देनेके वे सर्वथा अधिकारी थे।

"कल्याण" शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित इन लेखोंको "सम्पादकीय लेख' के रूपमें ग्रहण कियाजा सकता है।

"कल्याण" के सभी श्रेणीके पाठक एवं पाठिकाएँ इन विचारोंको सबसे पहले पढ़ते थे और इनसे बड़े प्रभावित होते थे। श्रीभाईजीकी दीर्घकालीन साधना, तपस्या, चिन्तन, अध्ययन एवं अनुभूतियोंपर आधारित ये विचार न जाने कितने-कितने लोगोंके जीवनमें परिवर्तन करने, उनमें भगवद्विश्वासकी प्रतिष्ठा करने, उन्हें सत्पथ दिखाने, आशा-उत्साहका संचार करने, साधनका सही मार्ग बताने आदिमें हेतु बने हैं, इसका हिसाब लगाना सम्भव नहीं है। आशा है, सहृदय पाठक-पाठिकाएँ भी इन विचारों का मनोयोगपूर्वक अध्ययन, मनन कर इनमें लाभ उठानेका प्रयत्न करेंगे।

विनीत

प्रकाशक

भगवान् सदा तुम्हाने साथ हैं

(कल्याण-कुन्ज भाग-3)

विषय-चिन्तन ही पतनका कारण है।

तुम्हारे पतन और विनाशका कारणहै-विषय-चिन्तन और उत्थान तथा अमरपदकी प्राप्तिका कारण है-भगवचिन्तन। जबतक मन केवल विषयों का ही स्मण करता है, तबतक पाप-तापसे कभी छुटकारा नहीं मिल सकता। तुम यदि असलमें पाप-तापसे छूटकर अपने जीवनको पुण्यमय, शान्तिमय, ऊँची स्थितिके भगवदभावसे युक्त बनाना चाहते हो तो भगवान् का स्मरण करो।

- - -

याद रखो-जो भगवान्के स्मरणसे भरा है- उस मनसे किसी भी कर्मके लिये जो प्रेरणा होती है, वह विशुद्ध होती है और उसके अनुसार होनेवाला कर्म, चाहे देखनेमें बहुत ऊँचा न भी मालूम हो तो भी वह होता है परम पवित्र और भगवान्की पूजा-स्वरूप! युद्ध-जैसा कर्म भी भगवत्प्राप्तिमें हेतु होता है, यदि वह भगवान्के स्मरण से युक्त हो। इसीसे तो भगवान्ने अर्जुनसे कहा है-'तुम सदा-सर्वदा मेरा स्मरण करते हुए युद्ध करो।'

- - -

भगवान्का स्मरण होते-होते जब भगवान्में ऐसा आकर्षण हो जायगा जैसा विषयोंमें विषयी पुरुषका और कामिनीयोंमें कामियोंका होता है, तब स्मरण अपने-आप ही होगा और तभी उस स्मरणमें आनन्दका अनुभव होगा। जबतक वैसा नहीं होता, तबतक भगवान्के गुण, प्रभाव, लीला, नाम आदिको सुन-सुनकर उनमें मन लगाते रहो।

- - -

याद रखो- अभी तुम्हारी चित्तवृत्ति व्याभिचारिणी हो रही है; क्योंकि उसने भोगोंको ही आनन्द देनेवाला मान रखा है और रात-दिन वह उन्हींके साथ रमण कर रही है। भगवान्को छोड़कर, जो भोगोंके प्रति आकर्षण है, यही तो मनका व्याभिचार है। इसीसे तो वह भगवान्के प्रति खिंचता नहीं है। मन भगवान्की ओर जाय इसके लिये लगातार चेष्टा करते रहो। भगवान्के गुण सुनों, उनके नामोंका कीर्तन करो, सब कामोंमें भगवान्का हाथ देखो, उनकी मङ्गलमयी मूर्तिका ध्यान करो, उनके भक्तोंका सङ्ग करो और उनके माहात्म्यको प्रकट करनेवाले ग्रन्थोंको बार-बार पढ़ो!

– – –

अपने मनको देखते रहो, वह कितनी देर भोगोंका चिन्तन करता है और कितनी देर भगवान्का? सावधान! मन बड़ा धोखा देगा। तुम समझोगे, हमने उसे भगवान्के चिन्तनमें लगा रखा है और वह छिपकर ऐसा भागेगा तथा इस प्रकार भोगोंमें रम जायगा कि तुम्हें पता भी नहीं लगेगा। बार-बार देखते रहो। जितना ही अधिक मनकी ओर देखोगे, उतना ही वह जल्दी वशमें होगा। ज्यों-ज्यों वह भागे त्यों-ही-त्यों उसे खींच-खीचंकर भगवान्में लगाओ। उसके सामने भगवान्के सौन्दर्य, माधुर्य, ऐश्वर्य, आनन्द, शान्ति और कल्याणमय मङ्गलस्वरूपको बार-बार रखो। बार-बार उसे लुभानेकी चेष्टा करो-भगवान्के मनोहर रूपसे। सचमुच विषय तो भयंकर हैं, ऊपरसे ही सुन्दर लगते हैं। अज्ञान शत्रुने उनको विष मिले हुए लड्डूकी तरह सुन्दर और स्वादिष्ट बना रखा है; परन्तु भगवान् तो नित्य सुन्दर और नित्य मधुर है। मन एक बार उनकी झाँकी कर लेगा, उनकी सौन्दर्य-सुधाका स्वाद चख लेगा तो फिर वहाँसे सहज में हटेगा नहीं। जिस दिन भगवान् माशूक बन जायँगे तुम्हारे मन आशिकके-उस दिन सब कुछ आप ही ठीक हो जायगा। चेष्टा करो और भगवान्की कृपापर विश्वास करके अपनेको बार-बार उनके स्वरूप-समुद्रमें डुबा देने का प्रयत्न करो। भगवत्कृपासे तुम सफल होओगे।

किसीसे भी घृणा मत करो

किसीसे भी घृणा न करो; घृणासे भय, द्वेष, क्रोध और हिंसा आदि महान् दोष उत्पन्न होते हैं, जो दूसरोंका बुरा करनेसे पहले तुम्हारा ही बुरा करते है। किसीका भी अहित न चाहो, किसीके भी पतनकी चाह न करो, किसीको भी दु:खी देखनेकी इच्छा मत करो। ऐसा करोगे तो उनका तो कुछ होगा या नहीं-पता नहीं, पर तुम्हारा अहित, तुम्हारा पतन और तुम्हें दु:ख-लाभ अवश्य हो जायगा।

– – –

किसीकी निन्दा न करो, किसीके भी दोष न देखो, न किसीमें दोषका आरोप ही करो। याद रखो-जगत्में दोष-गुण होते ही हैं। तुम दोषी ही ढूँढने और देखने लगोगे तो तुम्हें दोषी ही मिलेंगे! तुम अपने मनमें जैसा कुछ सोचते-विचारते हो वैसा ही तुम्हें प्रतिफल प्राप्त होता है। जो दूसरोंके प्रति घृणा, द्वेष, भय, वैर और डाह रखते हैं, उन्हें दूसरोंसे यही चीजें मिलती हैं।

– – –

चिढ़ो मत, ऊबो मत, झुँझलाओ मत, खीझो मत, अहंकारके भाव न मनमें आने दो, न जबानपर। ऐसा कर सके तो याद रखो-तुम्हारे बहुत-से दु:ख और संकट अपने-आप ही दूर हो जायँगे।

– – –

यह आशा मत करो कि सब तुम्हारे ही बात मानें, तुम्हारे ही मतका समर्थन करें, तुम्हारे ही आज्ञाकारी बनें और तुम्हारे प्रत्येक कार्यकी प्रशंसा ही करें। जब तुम दूसरोंके लिये ऐसा नहीं कर सकते, तब दूसरोंसे ऐसी आशा क्योंकर कर सकते हो। करोगे तो निराशा, दु:ख अपमानबोध और विषादके सिवा ओर कुछ भी हाथ न लगेगा।

– – –

धीरज रखो, शान्त रहो और जहाँतक बने सहनशील बनो! जगत् भगवान्की विचित्र मायाका विचित्र कार्य है। पता

नहीं, इसमें क्या-क्या भरा है। तुम्हारी अपनी छोटी-सी दुनिया है, तुम उसीमें विचरते हो, परंतु ऐसी अनन्त दुनिया भगवान्‌के इस विश्वमें है-क्योंकि विश्वमें अनन्त प्राणी हैं। तुम्हारी दृष्टिमें जो बात बुरी है, अनहोनी है, असम्भव है, वही बात दूसरोंकी दृष्टिमें अच्छी है, जरूरी होनेवाली औ सर्वथा सम्भव है। नयी बात-अपनेसे विपरीत अनोखी चीज देखकर उससे द्वेष न करो। भगवान्‌की अनन्त महिमा देख-देखकर प्रसन्न होओ।

– – –

भगवान् अनन्त हैं, एकमात्र भगवान् ही सब कुछ हैं-भगवान्‌से अतिरिक्त, भगवान्‌से बाहर और भगवान्‌से परे कुछ है ही नहीं। ऐसा स्थिति जो कुछ भी है, होता है, सब भगवान्‌में ही है और होता है। फिर खण्डन-मण्डन कैसा ? मतका आग्रह कैसा ? और लड़ाई कैसी ?

– – –

मनमें दोष विचार, व्यर्थ विचार आते ही उन्हें निकालनेकी चेष्टा करो। सदा चौकन्ने रहो। मनके बुरे विचार ही बुरे कार्योंकी जन्म-भूमि है।

अपनेको सदा सत्कर्मोंमें लगाये रखो। तुम्हारे मनको कभी फुरसत ही नहीं मिलनी चाहिये-असत् का विचार भी करनेके लिये। मनके सामने सदा इतने सद्विचार और सत्-कार्य रखो कि एकके पूरा होनेके पहले ही दूसरे की चिन्ता उसपर सवार रहे। निकम्मा मन ही प्रमाद करता है।

सदा भगवत्‌चिन्तन करो; सदा सबका भला चाहो और भला देखकर प्रसन्न रहो। किसी भी दल-विशेषमें मत मिलो। जहाँतब बने मनको एकान्त-मौन रखनेकी चेष्टा करो।

– – –

मन एकान्त-मौन न हो सके तो भगवान्‌से प्रार्थना करो। उन्हें नित्य अपने सामने, अपने अति समीप, अपने ही अंदर निश्चयरूपसे जानकर-उनके सामने रो पड़ो। उनसे शक्तिकी भीख माँगो, सद्विचारों की चाहना करो और चाहना करो उनके पावन अनन्य प्रेमकी। मनसे ऐसा करते रहोगे तो थोड़े ही दिनोंमें निहाल हो जाओगे।

उन्नति के चिन्ह

साधनमें प्रेम होना, साधनमें जरा भी परिश्रम न प्रतीत होना, त्यागी महानुरुषोंके जीवनमें श्रद्धा होना और भगवान्‌पर विश्वास होना-ये साधककी उन्नतिके प्रधान चिन्ह हैं। ऐसा साधक बहुत तेज चालसे आगे बढ़ता है।

– – –

प्रभु-प्राप्ति साधनको ही जीवनका मुख्य कार्य समझो। शरीरसे संसारमें रहो; परन्तु मनको तो निरन्तर प्रभुके चरणोंमें रखो।

– – –

केवल पुस्तकें पढ़नेसे काम नहीं चलेगा, न बड़ी-बड़ी बातें बनानेसे ही कुछ हाथ लगेगा। तुम्हें खुद अपने मनको प्रभुमें लगानेकी साधना करनी पड़ेगी।

– – –

भगवान्‌के स्मरण, चिन्तन और उनके गुण-गानमें समय बिताना ही समयका सदुपयोग है।

याद रखो—जिसपर भगवान्‌के सिवा और किसी भी पुरुष, किसी भी परिस्थिति, किसी भी घटना और किसी भी कालका कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् जो हर समय हर प्रकारसे भगवान्‌के ही शरण रहता है, वही महापुरुष है। तुम भी चेष्टा करो-सारे प्रभावोंसे छूटकर भगवान्‌के एकमात्र भगवान्‌के प्रभावमें रहनेकी।

– – –

तुम्हारा परिचय केवल भगवान्‌से ही रहे और सबको भूल जाओ और तुम जो कुछ भी करो, सब केवल भगवान्‌की प्रसन्नताके लिए ही।

चाहो केवल भगवान्‌को ही। यह भी मत सोचो कि भगवान् सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् हैं, वे मेरी आवश्यकताओंको आप ही पूर्ण कर देंगे। तुम्हारे मनमें भगवान्‌के सिवा न तो और कोई आवश्यकता ही रहे; और न किसी वस्तुकी चाह ही हो।

– – –

भगवान्‌में ही विश्वास, भगवान्‌की ही आवश्यकता, भगवान्‌की ही चाह और भगवान् ही साधन-ये चार बातें जिस साधकमें होती हैं, वह बड़ा ही भाग्यवान् है। इससे भी बड़ा वह है जो, केवल भगवान्‌के प्रेममें ही मस्त रहता है। जिसे न चाह है, न आवश्यकता।

– – –

भगवान्‌की प्रसन्नताके लिये ही कर्म करनेवाला पुरुष यह कभी नहीं सोचता कि लोग मेरे कार्यको सराहें, मेरी बड़ाई करें, मेरा सम्मान हो, मेरी जीवनी लिखी जाय या मेरा स्मारक बने। ये इच्छाएँ तो उसीमें रहती हैं, जो तुच्छ विषयोंका गुलाम है और भगवद्भक्तिका स्वाँग धरकर अपने-आपको धोखेमें डाल रहा है!

– – –

जगत्‌के लोगों के परिचयमें न जाओ, न उनको परिचय प्राप्त करो। ऐसी चेष्टा करो जिसमें वे तुम्हें भूल जायँ और तुम और तुम उनको भूल जाओ, फिर केवल प्रभुका और तुम्हारा-दोका ही परस्पर परिचय रहे। चुपचाप तुम प्रभुकी सेवा करो और प्रभु उसे स्वीकार करें। जो दूसरोंको दिखानेके लिये सेवा करता है, उसकी सेवा भगवान् स्वीकार नहीं करते।

– – –

जगत्‌को सुधारनेकी ठेकेदारी छोड़ दो, इसे प्रभु आप ही सुधारेंगे। तुम तो प्रभुके चरणोंपर न्योछावर हो जाओ। चुपचाप पड़े रहो दीन होकर उन दीन-बन्धुके दरवाजेपर।

– – –

जो मनुष्य जगत्‌के लोगोंमें बहुत परिचित होना तथा उनके साथ रहना चाहता है, याद रखो—वह प्रभुके परिचयसे अपनेको दूर करना चाहता है और प्रभुके सङ्गको भी छोड़ना चाहता है। जितना ही जगत्‌में अधिक परिचय प्राप्त करोगे, उतना ही प्रभुके परिचयसे हटोगे।

– – –

जो मनुष्य भोगोंके त्याग और भगवत्-प्रेमका बाना पहनकर भी लोगोंको अपना-अपने साधनका परिचय देना चाहता है, वह तो उस कुलटा स्त्रीके समान है जो किसी सुयोग्य पतिकी धर्मपत्नी होकर भी दूसरे लोगोंको रिझानेके

लिये उन्हें अपना रूप और शृगांर दिखाती फिरती है।

एक क्षण भी भगवत्कृपासे वन्चित नहीं

याद रखो—तुमपर भगवान्‌की कृपा नित्य-निरन्तर बस रही है। वह सदा सब ओरसे तुम्हें नहला रही है। ऐसा कोई क्षण नहीं जाता, जिस समय तुम भगवान्‌की कृपासे वन्चित रहते हो। वन्चित रहते भी कैसे? तुम उनकी अपनी प्यारी-से-प्यारी रचना जो ठहरे। तुमपर वे कृपा क्या करते, उनके हृदयमें तो पल-पलमें स्नेह उमड़ा आता है। सचमुच विश्वास करो—जबसे तुम हुए, न मालूम किस अज्ञातकालसे, तभीसे उन्होंने तुम्हें अपनी गोदमें ले रखा है। एक क्षणके लिये भी कभी उन्होंने तुमको दूर नहीं किया। उनका कल्याणमय करकमल निरन्तर तुम्हारे सिरपर रहता है और निरन्तर तुम उनका शीतल-मधुर स्पर्श पा रहे हो।

– – –

तुम पूछोगे—फिर यह जो जलन हो रही है; दिन-रात हृदयमें शोक और विषादका दावानल धधक रहा है, इसका क्या कारण है? ठीक है। इसका सच्चा उत्तर यह है—न तो आग है न तो जलन; यह सब उनकी लीला है। तुम जो जलनका अनुभव कर रहे हो और पूछ रहे हो, यह भी उनके लीलाभिनयका ही एक अंग है। तुम्हारा ज्ञान और अज्ञान, तुम्हारा सुख और दु:ख, तुम्हारी तृप्ति और अतृप्ति, तुम्हारी शान्ति और संताप—यहाँतक कि तुम और मैं—सभी कुछ उनकी लीला है, उन्हींमें हो रही है, वे ही कर रहे हैं। आश्चर्यकी बात तो यह है; लीला और लीलामय भी भिन्न नहीं, एक ही है। वे स्वंय लीला करते हैं और स्वयं ही उसे देख-देखकर हँसते हैं।

– – –

तुम्हारी यह सुखकी कामना, तुम्हारी यह शान्तिकी चाह, तुम्हारी यह मिलनकी उत्कण्ठा—सब उन्हींका खिलवाड़ है। उनका यह खेल पता नहीं कबसे चल रहा है। इसके आरम्भकालका पता आजतक किसीको न लगा और न आगे लगेगा ही। यह चलता ही रहता है। जिन्होंने देखा, इसे चलते ही देखा। खेलका रूप जरूर बदलता रहता है, सदा उसका एक-सा रूप नहीं रह सकता; परंतु खेल कभी खत्म नहीं होता। जब खिलाड़ी नित्य है तो खेल अनित्य कैसे हो? इसीसे जाननेवाले संतलोग भगवान्‌की लीलाको अनादि और अनन्त कहते हैं।

– – –

यह जो सृष्टि दीख रही है, इसमें जो प्रतिपल सृजन और संहारका चक्र चल रहा है, इसमें जो शान्ति-अशान्ति लहरें लहरा रही हैं, यह सब भी उन्हींका रूप है। कभी भयानक और कभी सौम्य—रात और दिनकी भाँति दोनों एक ही लीलाकी दो दिशाएँ हैं। यहाँ कुछ भी विपरीत नहीं होता। सभी अनुकूल, सभी यथार्थ, सभी कल्याणमय और सभी ठीक हो रहा है। जो होना चाहिये, जैसा होना चाहिये; वह वैसे ही हो रहा है। यह सारी सृष्टि और उसकी क्रिया—उनकी आनन्दमयी-चिन्मय लीला है। उनका स्वरूप ही है।

– – –

जो होता है, होने दो—किसीके रोकनेसे रुकेगा भी नहीं। तुम तो बस, अपनेको उनकी मङ्गलमयी इच्छाके प्रवाहमें डाल दो। किसी खास स्थितिकी कल्पना छोड़कर निश्चिन्त हो जाओ। अब भी उसी प्रवाहमें ही पड़े हो, परंतु तुम्हें पता नहीं है, इसीसे भयानक और सुन्दरका भेद दीखता है। लीलामय से प्रार्थना करो जिससे वे तुम्हें जता दें, जगा दें, तुम्हारी

असली आँखें खोल दें। फिर तुम प्रत्यक्ष देख सकोगे कि तुम न कभी उनसे अलग थे, न अब अलग हो, न आगे ही अलग हो सकते हो। तुम तो उनकी अपनी ही रचना हो, उन्हींके स्वाँग हो, उन्हींके स्वरूप हो और उन्हींकी इच्छासे—उन्हींके प्रेरणासे, उन्हींके खेलानेसे उन्हींमें खेल रहे हो। आनन्द! आनन्द!!

भगवान् सदा तुम्हारे साथ है

विश्वास करो—भगवान् सर्वज्ञ हैं, सर्वशक्तिमान हैं और सबके सुहृद् हैं और वे सदा-सर्वदा तुम्हारे साथ हैं, उनका रक्षक हाथ सदा तुम्हारी रक्षाके लिए तैयार है।

विश्वास करो—तुम्हारे अंदर भगवान् विराजमान हैं, तुम्हारे अंदर उनकी शक्ति छिपी हुई है। तुम चाहो तो अपने अंदर उनका अनुभव कर सकते हो, कि तु भगवान्से शून्य जगत्को देखते हो। जहाँ भी भगवान्का अभाव माना जाता है, वहीं तमाम अभाव, तमाम भय, तमाम दु:ख और तमाम विनाश अपनी सारी भयावनी सेनाको साथ लिये डेरा डाले पड़े रहते हैं। इन शत्रुओंके घेरेसे तुम तबतक नहीं निकल सकते, जबतक कि तुम भगवान्को सर्वत्र परिपूर्ण समझकर उनके दर्शन न पा लो।

भगवान् सर्वत्र हैं, इसलिये नित्य तुम्हारे साथ हैं। उनको देखकर सदाके लिये सुखी हो जाओ। तुम ऐसा कर सकते हो। सत्यस्वरूप तुमको सत्यकी प्राप्तिका पूर्ण अधिकार है। वह तो तुम्हारा ही स्वरूप है।

संत-दर्शन

याद रखो—जिसको अपने जीवनमें एक बार भी सच्चे संतके दर्शनका, उससे उपदेश प्राप्त करनेका, उसके करस्पर्शका और उसकी चरणधूलि सिर चढ़ानेका सौभाग्य प्राप्त हो गया, वह परम आनन्द और परम शान्तिका सहज ही अधिकारी हो गया।

याद रखो—संतोंके दर्शन, स्पर्श, उपदेश-श्रवण और चरणधूलिके सिर चढ़नेकी बात तो दूर रही, जो कभी अपने मनसे संतोंका चिन्तन भी कर लेता है, वही शुद्धान्त:करण होकर भगवत्प्राप्तिका अधिकारी बन जाता है।

– – –

याद रखो—संत-दर्शन और संत-प्राप्तिका फल परम कल्याणकारी होता है। अनजानमें यदि किसीको संत-समागम मिल जाता है तो वह भी संतके स्वाभाविक पाप-नाशक गुणका स्पर्श पाकर निष्पाप हो जाता है।

– – –

याद रखो—संतोंके द्वारा किसीका अहित तो हो ही नहीं सकता। वे यदि किसीको शाप दे देते हैं तो उवसे भी परिणममें हित ही होता है। नारदजीने नलकूबर और मणिग्रीवको शाप दिया था, वे अर्जुनके जुड़े वृक्ष बन गये; परंतु परिणामें उन्हें भगवान् श्रीकृष्णके दर्शनका सौभाग्य मिला।

– – –

याद रखो—संतोंके द्वारा उनका अहित करनेवालोंका भी कल्याण ही होता है। अमृतसे भले ही कोईमर जाय; परंतु

संतसे किसीका अहित हो नहीं सकता। कुल्हाड़ा चन्दनको काटता है, परंतु चन्दन अपने स्वभावज गुणसे उसे अपनी सुगन्ध देकर चन्दन बना लेता है, वैसे ही संत भी अपने प्रति बुरा करनेवालोंका कल्याण ही करते हैं।

– – –

याद रखो—संतका स्वभाव ही परहित होता है, लोक-कल्याणके लिये ही उनका जीवन होता है। उन्हें कुछ करना नहीं पड़ता, अपने-आप ही उनके द्वारा लोगोंका कल्याण होता रहता है।

– – –

याद रखो—संत स्वयं सांसारिक सुख-दु:खोंसे परे होते हैं, उन्हें किसी वस्तुपर ममता नहीं होती और कहीं भी उनमें अहङ्काररूप विकार नहीं रहता, तथापि वे दूसरोंके सुख-दु:खसे सुख-दु:खी-से होते देखे जाते हैं। यह उनका स्वभाव है।

– – –

याद रखो—संतोंको शरीरका कोई मोह नहीं होता, वे शरीरको सर्वथा असत् मानते हैं। एक परमात्म-सत्ताके सिवा उनकी दृष्टिमें और कुछ रहता ही नहीं। तथापि दूसरोंके शरीपर आये हुए कटोंके निवारण के लिये वे अपने शरीरकी सहज ही आहुति दे डालते हैं, यह भी उनका स्वभाव है।

– – –

याद रखो—संतोंकी पहचान कोईभी मनुष्य विषयोंमें फँसी हुई अपनी बुद्धि से नहीं कर सकता। वे बुद्धिमें आनेवाले भावोंसे बहुत ऊपर उठे होते हैं, किसी भी बाहरी लक्षणसे उन्हें कोई नहीं पहचान सकता। संतोंकी प्राप्ति और पहचान भगवान् और संतोंकी कृपासे ही हो सकती है। अतएव संत-समागम और संत-परिचय के लिये भगवान्से और संतोसे प्रार्थना करो।

– – –

याद रखो—संत-सेवा और संत-पूजाका सबसे प्रधान साधन है संतोंके बतलाये हुए मार्गपर श्रद्धा और साहसके साथ चलना। जो अपनी साधनाके द्वारा संतोंकी साधनाकी पूजा करता है, वही असलमें सच्ची संत-सेवा करता है।

सारा गौरव भगवान्का ही है

याद रखो—मनके मलोंमें सबसे बढ़कर गहरा चिपटा हुआ मल है अहङ्कार। यह सहज ही दूर नहीं होता। इसके नाशके लिये लगातार जीतोड़ जतन करना पड़ता है; परन्तु जबतक अहङ्कार रहता है, तबतक साधना सिद्ध नहीं हो सकती। अहङ्कारकी जरा-सी हुंकारसे ही किया-कराया चौपट हो जाता है। अहङ्कारका नाश होता है अपने गौरव या बड़प्पनका त्याग करनेसे। बात भी यही है—मनुष्यके पास अपने बड़प्पनकी वस्तु ही कौन-सी है? यदि कहीं कुछ गौरव है तो वह श्रीभगवान्का ही है जो मनुष्य मोहवश भगवान्के गौरवको छीनकर अपनेमें आरोप करनेकी चेष्टा करता है, वह अहङ्काकरके वशमें हो जाता है। और जहाँ अहङ्कारका अंकुर पैदा हुआ, वहीं सारे पुण्य नष्ट हो जाते हैं।—**'अहङ्कारकुंरस्याग्र तदा पुण्यं न तिष्ठति'।**

– – –

याद रखो—भगवान्‌को छोड़कर और किसीका भी सहारा ऐसा नहीं है, जो तुम्हारी सारी विपत्तियोंका समूह नाश कर दे। यहाँतक कि साधन करनेवाला पुरुष भी यदि यह मानता है कि इस साधनके बलसे मैं सारी बाधा-विपत्तियोंसे छूट जाऊँगा, तो वह भी गलती करता है। सर्वविपद्‌भजन तो एकमात्र श्रीभगवान् ही हैं। उनकी अहैतुकी और असीम दयापर विश्वास करके उन्हींकी दयाका आश्रय करके साधन-भजन करना चाहिये।

– – –

याद रखो—श्रीभगवान् मङ्गलमय हैं, उन्होंने तुम्हारे लिये जो कुछ विधान कर दिया है, वह सर्वथा मङ्गलसे परिपूर्ण है। यदि तुम उनके मङ्गल-विधानको प्रसन्नताके साथ स्वीकार न करोगे तो निश्चय समझो तुम बड़े ही अभागे हो। तुम अबोध हो, तुम्हें वह बुद्धि ही कहाँ है कि जिससे तुम अपनी सच्ची भलाई-बुराईको समझ सको। इसीसे दयासागर सर्वज्ञ भगवान्‌ने तुम्हारा सारा भार अपने ऊपर ले रखा है। तुम्हारा तो बस यही काम है कि तुम उनके मङ्गलमय श्रीचरणोंमें अपनेको समर्पित कर दो और पूर्णरूपसे निर्भय तथा निश्चिन्त होकर उनके प्रत्येक विधानको सानन्द सिर चढ़ाते रहो।

– – –

याद रखो—जिसका हृदय संकीर्ण है, जो दूसरों की श्री, कीर्ति, सम्पत्ति, शान्ति और उन्नतिको देखकर सदा जलता रहा है, जो दूसरोंकी हानिमें आनन्दलाभ करता है, वह न तो कभी परमार्थ-पथपर अग्रसर हो सकता है और न कभी असली सुखका ही मुँह देख सकता है। अतएव हृदयके इन क्षुद्र और नीच विचारोंका त्याग करके हृदय को विशाल बनाओ। दूसरोंकी उन्नतिमें ही अपनी उन्नति, मङ्गलमें ही अपना मङ्गल और सम्पत्तिमें ही अपनी सम्पत्ति समझकर प्रसन्न होते रहो एवं सदा सच्चे हृदयसे यही चाहो कि संसारमें भी सभी जीव सच्ची श्री-कीर्ति, सम्पत्ति-उन्नति और सुख-शान्ति को प्राप्त करें।

याद रखो—जब कभी तुमपर विपत्ति आयी है तब विपद्‌हारी भगवान् सदा तुम्हारी रक्षाके लिये तुम्हारे पीछे खड़े होते हैं। तुम जो अपने सामने एक घना अन्धकार देखते हो, वह तो तुम्हारी अपनी ही छाया है। भगवान्‌के उस परम प्रकाशमय दिव्य स्वरूपको देखो, जो अपनी विशाल भुजा पसारे तुम्हें अपनी छातीसे चिपटाकर सदाके लिये सुखी करनेको तैयार खड़े हैं।

– – –

याद रखो—विकाररूपा प्रकृतिमें स्थिति सभी जीव भूलसे भरे हैं। किसीमें कम तो किसीमें अधिक, दोष सभीमें रहते है! तुम कितने ही भले क्यों न हो, सर्वथा निर्दोश नहीं हो। अत: किसी भी दूसरेका दोष मत देखो, दीख जाय तो उसकी निन्दा मत करो। देखो—तुम्हारे अंदर वैसे ही दोष हैं या नहीं। यदि है तो उनके लिये पश्चाताप करो और चेष्टा करो जिसमें वे मिट जायँ। निश्चय समझो—दुनियाकी रंगकी दीखती है, जिस रंगका चश्मा होता है। तुम निर्दोष हो जाओगे तो फिर तुम्हें कहीं दोष्ज्ञ दीखेगा ही नहीं। ब्रह्मनिष्ठको सर्वत्र ब्रह्म ही दीखा करता है।

भक्तिमें आडम्बरकी आवश्यकता नहीं

याद रखो—भगवान्‌की भक्तिमें आडम्बरी आवश्यकता नहीं है। बाहरी दिखावा तो वहाँ होता है, जहाँ भीतरकी अपेक्षा बाहरका—करनेकी अपेक्षा दिखानेका महत्त्व अधिक समझा जाता है। भक्ति तो भीतरकी वस्तु है—करनेकी

चीज है, इसमें दिखावा कैसा? बस, चुपचाप मनको चले जाने दो उनके श्रीचरणोंमें और मस्त हो रहो! जब तुम्हारे पास मन ही अपना न होगा, तब दूसरी बात सोचोगे कैसे? दिन-रात आलिङ्गन करते रहो अपने प्रियतम भीतरके बंद कमरेमें और बाहरको भूल जाओ! वस्तुत: ऐसी अवस्थामें—इस मस्तीकी मौजमें बाहरकी याद आती ही किसे है?

– – –

याद रखो—किसी दूसरे किसी दूसरे कामके लिये भगवान्‌से प्रेम करना सच्चा प्रेम नहीं है। वह तो असलमें प्रेमका तिस्कार है। प्रेममें चाह नहीं होती। 'फिर प्रेम क्यों करते हो?' इसीलिये कि 'किये बिना रहा नहीं जाता।' मनको न जाने दो उधर! 'जाने देनेकी कौन-सी बात; मन इधर तो आता नहीं। एक क्षणके लिये भी तो वहाँसे हटना नहीं चाहता। उसे न कोई चाह है, न परवा! वह तो मतवाला हो गया है।' यह है भगवत्प्रेम। इसीकी साधना करो।

– – –

याद रखो—जब सच्चे प्रेमका स्त्रोत हृदयमें बह निकलेगा, तब क्षणमें अनन्त कालकी सारी कालिमा धुल जायगी। फिर स्मरण, कीर्तन, ध्यान और तन्मयता अपने-आप ही होने लगेंगे। रोमांच, अश्रुपात आदि सात्त्विक भावों का उदय और अभ्युदय स्वाभाविक ही होता रहेगा। ऐसा ही भक्त भुवनको पावन करनेवाला होता है। '**मद्भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति।**'

– – –

याद रखो— सच्चा सौन्दर्य वही है, जहाँ भगवान्‌का प्रेम छलक रहा है। भगवत्प्रेमको छोड़कर जो कुछ भी है, वह तो सदा ही भयानक और बीभत्स है। मन जब विषयासक्तिसे रहित होकर सारी असद्भावनाओंसे मुक्त हो जाता है, तब उसमें भववत्प्रेमकी प्रतिष्ठा होती है। इस प्रेमसे जिस स्वरूका प्रकाश होता है, वस्तुत: वही यथार्थ सुन्दर है।

– – –

याद रखो—इस प्रेमकी साधनाके लिये आवश्यकता है निष्कपट प्रेम-कामनाकी। बस, उनका प्रेम ही चाहो, प्रेमसे ही चाहो, प्रेममें ही चाहो। दिल खोलकर सरलतासे उन्हें पुकारो। भगवत्प्रेम निष्कपट प्रेम-कामनासे ही मिलता है। मनको टटोल-टटोलकर देखते रहो—उसमें कोई दूसरी कामना छिपी तो नहीं है।

– – –

याद रखो— तुम जिसको चाहते हो, जिसको अपना बनाना चाहते हो उसके अनुकूल तो तुम्हें होना ही पड़ेगा। तुम भगवान्‌को और उनके प्रेम को चाहोगे तो तुम्हारा पहला कर्तव्य होगा तन-मनसे उनके अनुकूल चलना। साथ ही तुम्हें अपने बाहर-भीतरके आचरणोंसे यह भी सिद्ध कर देना होगा कि तुम उनके सामने भोग-मोक्ष—सभीको तुच्छ समझते हो। इसमें विशेष सावधानी की आवश्यकता है, नहीं तो विशुद्ध प्रेम-कामना ही उदय नहीं होगी।

– – –

भगवान् अशरण-शरण हैं

देखो, तुम्हारी क्या दशा है—शरीर रोगग्रस्त है, मन चंचल और अपवित्र है, बुद्धि व्याभिचार में प्रवृत्त है, जीवन दु:खोंका घर बना है और यों ही रोते-चिल्लाते तुम सतत मृत्युकी ओर बहे चले जा रहे हो।

– – –

संसारसमुद्रकी भीषण तरङ्गें उछल-उछलकर तुमपर चोट कर रही हैं। तुम कुछ भी विचार नहीं कर पाते कि इनसे कैसे छुटकारा होगा। कभी कुछ विचार स्थिर करने लगते हो तो उसी समय एक नयी तरङ्ग आकर तुम्हें झकझोर डालती है और तुम्हारे विचारको बहाकर न मालूम कहाँ ले जाती है।

– – –

इस प्रकार पता नहीं कितने दीर्घकालसे तुम इस दु:खसागरमें डुबकियाँ लगा रहे हो—कहीं भी न तो तुम्हें कोई बचनेका साधन दीखता है और न कहीं इसका ओर-छोर ही नजर आता है।

– – –

तुम्हारी इस दुर्दशाका अन्त एक ही उपायसे हो सकता है। वह उपाय है—'भगवान्‌के शरण होकर उन्हें पुकारना।' भगवान्‌ने कहा है—'जो मुझमें चित्त लगाते हैं, उनको संसार-ससागर से बहुत ही शीघ्र मैं तार देता हूँ।' भवसागरकी भयानक तरङ्गोंसे बचना चाहते हो तो उनको पुकारो। उनसे कहो—'नाथ! मैं जहाँ गया' वहींसे गिरा; क्योंकि मुझे अभीतक कोई अच्युत मिला ही नहीं। तुम अच्युत हो, आज मैं दु:खी-दीन होकर तुम्हारी शरण आया हूँ। मुझे इस भयानक भयसे बचा लो।

– – –

निश्चय समझो—तुम्हारी पुकार सच्ची होगी तो वे अवश्य-अवश्य तुमको बचा लेंगे। वे यह नहीं देखेंगे—तुम कौन हो, किस श्रेणीके हो, किस प्रकारके आचार-विचार रखते हो, पुण्यात्मा हो या पापी हो। वे देखेंगे केवल यही कि तुम्हारा उनपर—उनकी कृपापर विश्वास है या नहीं, और तुम्हारी पुकारमें कितनी सचाई है।

– – –

याद रखो—भगवान् अशरण-शरण हैं, दीनबन्धु हैं, पतित-पावन हैं। तुम अपनेको यथार्थ ही अशरण, दीन और पतित मानकर उनकी ओर निहारोगे और अपनोंके लिये उन्हें पुकारोगे तो निश्चय ही वे तुम्हें वैसे ही अपनाकर, पवित्र बनाकर अपनी गोदमें ले लेंगे, जैसे स्नेहमयी जननी मैलेसे भरे प्यारे पुत्रको गोदमें उठाकर स्वयं अपने ही हाथों से उसका मल धोकर उसे हृदयसे लगा लेती है।

– – –

निश्चय करो—भगवान्‌के समान तुम्हारे प्यारे, निकट-से-निकट आत्मीय, प्राणोंके प्राण, जीवन के और आत्माके आत्मा केवल भगवान् ही हैं। तुम उनको बहुत ही प्यारे हो। प्यारे! प्यार से उन्हें एक बार पुकारो तो सही। देखोगे, तुम्हें बदलेमें कितनी जल्दी और कितना अनोखा उनका प्यारा प्यार मिलता है।

– – –

शुभ निश्चय

निश्चय करो—मैं सर्वशक्तिमान् भगवान् का सनातन अंश हूँ; भगवान्‌की शक्ति मुझमें भरी है। किसी पाप-तापकी ताकत नहीं, जो भगवान्‌की शक्तिका सामना कर सके।

– – –

निश्चय करो—मैं सत् हूँ, चेतन हूँ और आनन्द हूँ। मेरी नित्य सत्ताको कोई भी मौत नहीं मिटा सकती। मेरे अखण्ड

चित्स्वरूपमें कभी अज्ञान या मोहका प्रवेश नहीं हो सकता; और मेरे अनन्त अनामय एकरस आनन्दमें तो कभी कोई रूपान्तर होता ही नहीं।

– – –

निश्चय करो—मेरे नित्य निरामय चित्-स्वरूपपर किसी भी जड पदार्थ या जागतिक स्थितिका कोई भी असर नहीं हो सकता। मेरी अखण्ड शाश्वत शान्तिको कोई भंङ्ग कर ही नहीं सकता।

– – –

निश्चय करो–मैं नित्य, निर्मल और अनन्त आनन्दके भण्डार भगवान्का स्वत-अंश हूँ। कोई भी रोग, शोक, विषाद, भय, निराशा, दरिद्रता, दुर्भावना और दुराचार मुझमें नहीं रह सकते। मैं सदा निरोग, सदा प्रसन्न, सदा निर्भय, सदा सम्पन्न, सदा सफल, सदा सद्विचारी और सदा सदाचारी हूँ।

– – –

निश्चय करो—भगवान्का निष्कपट निःस्वार्थ प्रेम मेरे हृदयमें भरा है। कृपा, सेवा, उदारता, स्वतन्त्रता, समानता, शान्ति, साधुता आदि तो मेरे उस प्रेमके परिकर हैं, जो नित्य-निरन्तर निकल-निकलकर सर्वत्र फैलते और सबको सुख पहुँचाते रहते हैं।

– – –

निश्चय करो—मुझमें कोई अशुभ या अकल्याण है ही नहीं; क्योंकि परम शुभ और परम कल्याणस्वरूप भगवान सदा मेरे हृदयमें बसते हैं और उसी हृदयको लेकर मैं सदा उन्हीं भगवान्में निवास कर रहा हूँ।

– – –

निश्चय करो—जो भगवान् मुझमें हैं और जिन भगवान्में मेरा निवास है, वही भगवान् सबमें हैं और उन्हीं भगवान्में सबका निवास है। अतएव दूसरा कोई है ही नहीं। भगवान् ही भगवान्में बसकर भगवान्की भागवती-लीला कर रहे हैं।

– – –

निश्चय करो—सत्य, अहिंसा, उत्साह, साहस, शक्ति, शान्ति, ज्ञान, वैराग्य, पुण्य, क्षमा, पवित्रता आदिसे मेरा हृदय सदा पूर्ण रहता है। ये कभी मेरे हृदयसे जा नहीं सकते, क्योंकि ये भगवान्के चरणसेवक हैं और भगवान् एक क्षणके लिये भी कभी मेरे हृदयसे विलग होते नहीं।

– – –

निश्चय करो—मैं कभी बुरा विचार, असत्-संकल्प, पाप-निश्चय और दूसरेके अनिष्टका चिन्तन कर ही नहीं सकता; क्योंकि भगवान्के सान्निध्यके कारण मेरा हृदय सदा सद्विचार, सत्-संकल्प, शुभ निश्चय और परहितके भावसे भर रहता है।

– – –

निश्चय करो—मैं जगत्में आया हूँ केवल सुख, शान्ति, पुण्य, प्रेम, परमात्माकी भक्ति और भगवान्का अखण्ड ज्ञान पाने और सारे जगत्में वितरण करनेके लिए। यही मेरे जीवनका परम व्रत है।

— — —

आनन्द और शान्ति

श्रीभगवान् परम आनन्द और परम शान्तिके सम्प्रद हैं। उन श्रीभगवान्के साथ तुम्हारा सम्बन्ध जितना ही बढ़ता जायगा, उतना ही आनन्द और शान्ति भी तुम्हारे अंदर बढ़ते जायँगे।

फिर तुम जहाँ भी जाओगे, आनन्द और शान्तिको साथ लेते जाओगे और तुम्हारे आनन्द तथा शान्तिसे जगत्के प्राणियोंको भी यथायोग्य आनन्द और शान्तिकी प्राप्ति होगी।

साथ-ही-साथ तुम भी क्रमशः अधिक-से-अधिक आनन्द और शान्तिकी प्राप्ति करते जाओगे; क्योंकि तुम्हारा हृदय हर समय, हर स्थानमें उनका आकर्षण करता रहेगा।

— — —

तुम्हारे हृदयका द्वार जिसके लिये खुला होता है तुम्हें वही वस्तु मिलती है। और जो वस्तु अंदर होती है, उसीको अधिक पानेके लिये हृदय द्वार भी खुला रहता हैं।

तुम यदि आनन्द और शान्ति चाहते हो तो आनन्द और शान्तिके सागर भगवान्से सम्बन्ध जोड़ो, तुम्हारे हृदयमें आनन्द और शान्ति आयेगी और ज्यों-ज्यों यह जगत्में फैलेगी, त्यों-ही-त्यों तुम्हारे अंदर भी बढ़ती जायगी।

— — —

तुम यदि भगवान्के सम्बन्धको भूलकर शोक और अशान्तिसे भरे विषय-वैभवसे सम्बन्ध जोड़ोगे तो तुम्हें आनन्द और शान्तिके बदले शोक और अशान्ति की प्राप्ति होगी।

फिर ज्यों-ज्यों तुम्हारा विषय-सम्बन्ध बढ़ता जायगा, त्यों-ही-त्यों शोक और अशान्ति भी बढ़ते जायँगे।

फिर तुम जहाँ जाओगे—शोक और अशान्ति भी तुम्हारे साथ जायँगे और जगत्के प्राणियोंमें फैलकर बदलेमें तुम्हारे शोक और अशान्तिको और भी बढ़ा देंगे।

तुम्हारे हृदयका दरवाजा आनन्द और शान्तिके लिये बंद हो जायगा और तुम शोक और अशान्तिसे सन जाओगे।

फिर जगत्की ऊँची-से-ऊँची किसी स्थितिमें भी तुम्हें आनन्द और शान्तिके यथार्थ दर्शन नहीं होंगे।

— — —

इसलिये परम शान्ति और परमानन्दमय भगवान्के साथ सम्बन्ध जोड़ लो, फिर तुम जहाँ भी रहोगे—वहीं शान्ति और आनन्दको आकर्षित कर सकोगे और दूसरों में वितरण भी कर सकोगे।

उन मनुष्योंका सङ्ग करो, अधिक-से-अधिक समय उनके साथ रहने और उनके निकट होकर उनकी सेवा करने में बिताओ, जिनका हृदय परम शान्ति और परम आनन्द के समुद्र भगवान्में निमग्न है, उसके सङ्गसे—अविरत सङ्गसे तुम्हारे हृदयका भी भगवान्के साथ सम्बन्ध जुट जायगा। फिर तुम्हारे हृदयके द्वार भी परम आनन्द और परम शान्तिके लिये खुल जायँगे।

ऐसे महापुरुष जगत्में सर्वत्र शान्ति और आनन्दका प्रवाह ही बहाया करते हैं; जहाँ शोक, अशान्ति, विषाद और भय होता है, वहाँ यदि उनकी हृदयस्थ शान्ति और आनन्दकी किरणें पहुँच जाती हैं तो वे शोक, अशान्ति आदि के अन्ध

ाकारका नाश करके आनन्द और शान्तिकी अत्युज्जवल चाँदनी फैला देती हैं।

सब कुछ भगवान्‌का हो गया

विश्वास करो—निश्चय करो—मुझपर भगवान्‌की अनन्त कृपा है। भगवत्कृपाकी अनवरत वर्षा हो रही है। मेरा तन-मन, मेरा रोम-रोग भगवत्कृपासे भींगकर तर हो गया है। मैं भगवत्कृपाके सुधासागरमें निमग्न हो रहा हूँ। मेरे ऊपर-नीचे, दाहिने-बायें, बाहर-भीतर सर्वत्र भगवत्कृपा भरी है। मैं सब ओरसे भगवत्कृपासे सराबोर हो रहा हूँ।

निश्चय करो—भगवत्कृपासकी बाढ़से मेरा सारा मैल धुल गया है, पाप-तापका सारा कूड़ा-कचरा बढ़ गया है। काम-क्रोध, लोभ-मोह, मद-मत्सर, दम्भ-अभिमान, ईर्ष्या-वैर सब नष्ट हो गये हैं। भगवत्कृपाके रहते मल-विक्षेप मेरे अंदर नहीं रह सकते।

– – –

निश्चय करो—भगवत्कृपाके प्रभावसे मेरे अंदर समता, शान्ति, अनासक्ति, ज्ञान और प्रेम बढ़े जा रहे हैं।

निश्यच करो—अब मेरे मनमें कोई भी बुराई धँस नहीं सकती, मेरी वाणीमें कभी मिथ्या और कटुताका विष आ नहीं सकता, मेरी कोई भी इन्द्रिय कभी भगवद्विमुख होकर चल नहीं सकती।

निश्चय करो—अब मेरा मन भगवान्‌के स्मरण-चिन्तनको, भगवान्‌के मधुर-मनोहर स्वरूपके ध्यानको कभी क्षणभरके लिये भी छोड़ नहीं सकता, मेरी वाणी भगवान्‌के नाम-गुणगानसे कभी विलग नहीं हो सकती और मेरा शरीर उनकी सेवासे कभी चूक नहीं सकता।

– – –

निश्चय करो—मैं भगवान्‌का हो गया हूँ और भगवान् मेरे हो गये हैं। हमारा यह सम्बन्ध अच्छेद्य और अटूट है। अब कभी भी मैं भगवान्‌से विमुख और भगवान् मुझसे अलग नहीं हो सकते।

निश्चय करो—अब यह शरी, मन इन्द्रियाँ सब कुछ भगवान्‌के हो गये हैं। अब इनके द्वारा जो कुछ भी होगा, भगवान्‌की प्रेरणासे, उन्हींकी शक्तिसे, उन्हींके मङ्गलमय संकल्पसे होगा। अतएव वह स्वाभाविक ही परम मङ्गलमय होगा। अब इस शरीरसे मङ्गलकार्य ही होंगे, मनसे मङ्गल-चिन्तन ही होगा और इन्द्रियोंसे मङ्गलका ही ग्रहण होगा।

निश्चय करो—मङ्गल एकमात्र मङ्गलमय भगवान् और मङ्गलमय भगवान्‌की मङ्गलमय लीला ही है। मङ्गलमय भगवान्‌को भुलाकर जो कुछ भी है, वह तो सर्वर्था अमङ्गलस्वरूप ही है। अत: अब अमङ्गलमय मेरे समीप कभी आ ही नहीं सकता।

निश्चय करो—अब वैराग्य, शान्ति, समता, प्रेम और आनन्द मुझसे कभी विलग नहीं हो सकते; क्योंकि अब भगवान् कभी मुझसे विलग नहीं होंगे और ये सब सद्भाव और सद्गुण भगवान्‌के साथ वैसे ही नित्य रहते हैं, जैसे सूर्यके साथ प्रकाश रहता है।

निश्चय करो—मेर चित्तभवन भगवान्‌से भर गया है, अब उसमें अन्य किसी भी वस्तुके लिये जगह ही नहीं रही।

– – –

निश्चय करो—'मैं' और 'मेरा' सब कुछ अब प्रभु का हो गया है। अब 'मैं' और 'मेरे' पर मेरा जरा भी अधिकार नहीं रह गया है। इनको अब एकमात्र प्रभु ही अपने इच्छानुसार बरतते हैं।

सबके साथ मित्रता का बर्ताव करो

सबके साथ सहानुभूति और नम्रतासे युक्त मित्रताका बर्ताव करो। संसारमें अधिक अनुष्य ऐसे ही मिलेंगे जिनकी कठिनाइयाँ, जिनके कष्ट तुम्हारी कल्पनासे कहीं अधिक हैं। तुम इस बातको समझ लो और किसीके साथ भी अनादर और द्वेषका व्यवहार न करके विशेष प्रेमका व्यवहार करो।

तुमसे कोई बुरा बर्ताव करे तो उसके साथ भी अच्छा बर्ताव करो और ऐसा करके अभिमान न करो। दूसरेकी भलाईमें तुम जितना ही अपने अहंकार और जागतिक स्वार्थको भूलोगे, उतना ही तुम्हारा वास्तविक हित अधिक होगा।

– – –

याद रखो—भगवान्‌के राज्यमें भलाईका फल बुराई कभी हो नहीं सकता। इसी तरह बुराईका फल भलाई नहीं होता। तुम्हारे साथ यदि कोई बुरा बर्ताव करता है और तुम भी यदि उसके साथ वैसा ही बर्ताव करोगे तो इससे यही सिद्ध होगा कि तुम्हारे अंदर कोई ऐसा दोष भरा है, जो यह चाहता है कि लोग तुमसे द्वेष करें और तुमको सतायें।

ऐसा न होता तो तुम अच्छा बर्ताव करते और उसके बदलेंमें भगवान्‌के न्यायसे, अब नहीं तो कुछ दिनों बाद तुम्हें अच्छा बर्ताव मिलता ही। अच्छे बर्तावके फलस्वरूप तुम्हारे हृदयमें अच्छाईका भरा तो अनिवार्य ही है।

– – –

अच्छा बर्ताव—निश्छल प्रेमका व्यवहार करके सबमें भलाईका—प्रेमका वितरण करो। यही सच्ची सहायता और सच्चा आश्वासन है। तुम जैसा व्यवहार करोगे, वैसा ही जगत्‌को दोगे और वैसा ही तुम पाओगे भी।

– – –

सभीको प्रेमभरी मधुरता और सहानुभूतिभरी आँखोंसे देखो। याद रखो—सुखी जीवनके लिये प्रेम ही असली खुराक है। संसार इसीकी भूखसे मर रहा है! अतएव प्रेम वितरण करो—अपने हृदयके प्रेमको हृदयमें ही मत छिपा रखो। उसे उदारताके साथ बाँटों। जगत्‌का बहुत-सा दुःख दूर हो जायगा।

– – –

जिसके बर्तावमें प्रेमयुक्त सहानुभूति नहीं है, वह मनुष्य जगत्‌में भाररूप है; और जिनके हृदयमें स्वार्थयुक्त द्वेष है वह तो जगत्‌के लिये अभिशापरूप है। हृदयमें विशुद्ध प्रेमको जगाओ, उसे बढ़ाओ और सब ओर उसका प्रवाह बहा दो। तुमको अलौकिक सुख-शान्ति मिलेगी और तुम्हारे निमित्तसे जगत्‌में भी सुख-शान्तिका प्रवाह बहने लगेगा। याद रखो—प्रेम ईश्वर का स्वरूप है।

– – –

याद रखो—जो कुछ बोओगे, वही अनन्तगुना होकर तुम्हें वापस मिलेगा। बीजके अनुसार ही फल होते हैं। भलाईके बीज बाओ—भलाईके फलोंसे तमाम खेत हरा-भरा हो जायगा। वह तुम्हें भी मिलेगा और जगत् भी उसे पाकर संतुष्ट होगा। द्वेष और वैरसे मनुष्य जैसे जगत्‌को नरक बना देता है, वैसे ही सहानुभूति और प्रेमसे उसे स्वर्गसे भी बढ़कर बना सकता है।

– – –

जो केवल अपना ही स्वाथ देखते हैं और जिनका 'अपना' बहुत ही सीमित होता है, वे बड़े संकुचित मतवाले होते हैं और उनसे भला बर्ताव नहीं हो पाता। जिनका 'अपना' विस्तृत हो गया है, जो सारे जगत्‌में 'अपनत्व' का अनुभव करते हैं, वे गंदे स्वार्थके वशमें होकर जगत्‌का अहित नहीं कर सकते। उनका स्वार्थ ही परमार्थ होता है।

– – –

मनुष्यमें ज्यों-ज्यों प्रेमका विस्तार होता है, त्यों-ही-त्यों उसके 'स्व' का दायरा भी बढ़ता जाता है। बढ़ते-बढ़ते वह सारे विश्वमें छा जाता है। फिर विश्व-कल्याणमें ही उसे अपना 'कल्याण' दीखता है। यही प्रेमका शुद्ध रूप है।

– – –

ऐसी हालमें विश्वके किसी मानवकी बुराई उसे अपने ही किसी अङ्गकी बीमारी मालूम होती है—अतएव उसे दु:ख होता है और स्वाभाविक ही वह उस बीमारीको मिटानेकी कोशिश करता है। उसका द्वेष बीमारीसे होता है, अङ्गसे नहीं। वह अङ्गको नुकसान पहुँचानेमें अपना लाभ नहीं समझ सकता, बल्कि अपने सारे अङ्गोंको सहज ही उस अङ्गको नीरोग करनेमें लगा देता है।

– – –

कदाचित् सड़न अधिक होने और उसके द्वारा सारे शरीरके विषक्रान्त होनेकी सम्भावना होती है तो उस बीमार अङ्गको वह कटवा भी देता है; परंतु उस समय भी उसके मनमें द्वेषकी जरा-सी भी कल्पना नहीं होती!

– – –

बस, प्रेमका विस्तार होनेपर इसी प्रकार सारे जगत्‌के साथ अपने आत्माके समान ही व्यवहार—बर्ताव होता है तथा इसी प्रकार सुख-दु:खमें भी समानता होती है। फिर किसीकी बुराई कैसे हो; क्योंकि उसमें अपनी ही तो बुराई होती है।

इस प्रेमका मर्म समझो, इसीमें तुम्हारा तथा विश्वका हित है और इसीमें भगवान्‌की पूजा है प्रेमका स्वरूप श्रीभगवान्‌की सच्ची पूजा पावन प्रेमसे ही होती है।

सच्चा क्या है?

सच्चा या वही है, जो भगवान्‌को प्रसन्न करनेवाला और जगत्‌का कल्याण करनेवाला हो।

सच्चा तप वही है, जो धर्मके लिये प्राणोंकी बलि चढ़ानेको प्रस्तुत कर दे।

सच्चा दान वही है, जो बिना फल चाहे दिया जाय और जिससे यथार्थ त्याग हो।

सच्चा जीवन वही है, जो केवल प्रभुकी सेवाके लिये लोकहित में लगा हो।

सच्चा मरण वही है, जो मौतको सदाके लिये मार दे।

सच्चा भोग वही है, जो भोक्तापनको भगा दे और सबके भोक्ता भगवान्‌से मिला दे।

सच्चा त्याग वही है, जो त्यागकी स्मृतिका भी त्याग करा दे।

सच्चा भोग वही है, जो सबको मनसे निकाल दे और प्रभु-सेवाके लिये एकान्तमें तैयार रहे।

सच्चा विश्वास वही है, जो विपत्ति और विनाशमें भी प्रभुकी कृपाके दर्शन करता रहे।

सच्चा स्मरण वही है, जो केवल भगवान्‌का हो और जो बिना हुए कभी रहे ही नहीं।

सच्चा भजन वही है, जो भजनके लिये ही नित्य-निरन्तर होता रहे।

सच्चा प्रेम वही है, जो गुण और कीर्तिसे हीन प्रेमास्पदमें भी बढ़ता ही रहे।

सच्चा सत्य वही है, जो कभी मिटे नहीं और भय तथा हानिकी सम्भावनामें भी प्रकट रहे।

सच्चा ज्ञान वही है, जो अनेकमें एक अखण्ड और अनन्त नित्य सत्ताके दर्शन करा दे।

सच्चा योग वही है, जो जीवका नित्य-सत्य-चिदानन्द-रूप भगवान्‌से नित्य संयोग करा दे।

सच्चा हित वही है, जो सर्वहितमय प्रभुसे मिला दे।

सच्चा कल्याण वही है, जो सारे अकल्याणोंको मिटाकर अपना एकच्छत्र प्रभुत्व स्थापित कर दे।

सच्चा रस वही है, जो सब रसोंको प्राण देनेवाला हो और नित्य एकरस बना रहे।

सच्चा कर्म वही है, जो भगवान्‌की कल्याणमयी लीलाका अंग बन जाय।

सच्चा धर्म वहीं है, जो सब धर्मोंके परम आश्रयरूप भगवच्छरणागतिमें पहुँचा दे।

सच्चा धन वही है, जो नित्य प्रभुकी सेवामें ही लगता रहे।

सच्चा तन वही है, जो विश्ववरूप प्रभुकी सेवा में ही नियुक्त रहे।

सच्चा मन वही है, जो सदा प्रभुके मनका ही अनुसरण करे।

सच्चा मित्र वही है, जो कुपथसे हटाकर सुपथें लगा दे और विपत्तिमें विशेष प्रेम करे।

सच्चा मन्त्र वही है, जो प्रभुको तुरन्त मिला दे।

सच्चा मनुष्यत्व वही है, जो पशुत्व-पिशाचत्वकी ओर न जाकर निरन्तर भगवान्‌की ओर आगे बढ़े।

सच्चा बन्धुत्व वही है, जो विपत्ति और असम्मानके समय साथ न छोड़े।

सच्ची इच्छा वही है, जो प्रभु-मिलनकी इच्छाके अतिरिक्त सारी इच्छाओंको नाश करनेवाली हो।

सच्ची सेवा वही है, जो परम सेव्य प्रभुके मनमें भी सेवा का लोभ पैदा कर दे।

सच्ची कमाई वही है, जो अखण्ड और अटूट रहे।

सच्ची महिमा वही है,जो महिमामय प्रभुकी महिमा बढ़ानेवाली हो।

सच्ची वासना वही है, जो प्रभुमें भी प्रेमकी वासना उत्पन्न कर दे।

सच्ची श्रद्धा वही है, जो बड़े-बड़े तूफानोंमें भी हिले नहीं।

सच्ची भक्ति वही है, जो भक्तिके लिये ही की जाय और भगवान्‌में भक्तसे मिलनेकी उत्कण्ठा पैदा कर दे।

सच्ची जिज्ञासा वही है, जो तत्त्व-मन्दितरतक पहुँचे बिना रुके ही नहीं।

सच्ची निष्ठा वही है, जो सदा एक-सी और एकमुखी रहे।

सच्ची शूरता वही है, जो धर्म, देश और असहायोंकी रक्षामें नियुक्त करे।

सच्ची शक्ति वही है, जो प्रभुकी कृपाशक्तिको आकर्षित कर सके।

सच्ची मुक्ति वही है, जो मुक्तको, मुक्तिके ज्ञानसे भी मुक्त कर दे।

निराशा, विषाद आदिको मनमें स्थान मत दो

मनमें कभी निराशा, विषाद, उदासी, असमर्थताको स्थान मत दो; यह समझो कि मुझे अपना ध्येय निश्चय ही प्राप्त होगा। मनमें कभी ऐसी कल्पना न आने दो कि मेरा जीवन निष्फल होगा, मुझे भगवान्‌की प्राप्ति नहीं होगी।

मनमें यह दृढ़ निश्चय करो कि मेरा भगवान्‌के साथ नित्य सम्बन्धहै, भगवान्‌की पूर्ण और अनन्त कृपा मुझपर सदा-सर्वदा बरसती रहती है। भगवान्‌की कृपा मेरा भगवान्‌से अलग रहना देख ही नहीं सकती। इसलिये भगवान्‌की कृपाके बलसे ही मैं इसी जीवनमें निश्चय ही भगवान्‌को प्राप्त करूँगा।

भगवान्‌की प्राप्तिके प्रतिबन्धक काम-क्रोध, लोभ-मोह, मद-मत्सर, शोक-विषाद, दम्भ-दर्प, वैर-विरोध, अभिमान-अहङ्कार और ममता-आसक्ति आदि को दोषोंको भगवत्कृपाने मारकर मेरे मनसे भगा दिया है, वे अब कभी मेरे समीप भी आनेका साहस नहीं कर सकते।

\- \- \-

मेरा मन भगवान्‌को पानेके लिये उत्साह, उमङ्ग, उत्कण्ठा और उल्लास आदिसे भर गया है। उसमें श्रद्धा, विश्वास, निश्चयका ही साम्राज्य हो गया है।

\- \- \-

मेरे मनसे सभी सात्त्विक भावोंका उदय हो गया है—श्रद्धा-विश्वासके प्रभावसे निर्भयता, निश्चिन्तता, अलोलुपता, अनुभूति, धृति, क्षमा, दया, अहिंसा, तेजस्विता, नम्रता, शान्ति, शुद्धि, तितिक्षा, उपरामता, समता, सत्य, शम, दम, आर्जव, तप, त्याग, वैराग्य, संतोष, ज्ञान, समाधान और प्रेम आदि सद्‌गुण और सद्‌भावोंका पूर्ण विकास हो गया है। इनके नित्य संयोगसे मेरा मन परमानन्दसे भर गया है। अब मुझे पद-पदपर और पल-पलमें भगवत्कृपाके शुभ मङ्गलमय दर्शन होते हैं और मैं यह अनुभव करता हूँ कि मेरे चारों ओर ऊपर-नीचे, बाहर-भीतर केवल कृपा-ही-कृपा, आनन्द-ही-आनन्द भरे हैं।

\- \- \-

मेरा मन मेरे कल्याणमें ही नियुक्त है; क्योंकि वह मेरे वशमें है और वह भगवान्‌की ओर झुक गया है।

इसलिये मेरा मन मेरा मित्र है, उसकी प्रत्येक चेष्टा मित्रताके भावसे ही होती है।

अब मुझे यह दृढ़ निश्चय हो गया है कि मेरा मन सर्वथा भगवान्‌का अनुगामी होकर केवल उन्हींके अधिकारमें आ गया है और उन्हींके इशारेपर चलता है।

मैं पाप-तापसे मुक्त और भगवत्प्रेमसे युक्त होकर निहाल हो गया हूँ।

अपनी गलतियोंको दखो

संसारमें ऐसा कोई नहीं है, जिसमें कोई दोष न हो अथवा जिससे कभी गलती न होती हो। अतएव किसीकी गलती देखकर जलो मत और न उसका बुरा चाहो।

अपनी गलतियाँ देखो और उन्हें सुधारनेकी सतत चेष्टा करो। दूसरोंको देखना हो तो उन्हें उन्हींके दृष्टिकोणसे और उन्हीं की परिस्थितिमें पहुँचकर देखो, फिर उनकी गलतियाँ उतनी नहीं दिखायी देंगी।

ऐसा कभी मत सोचो कि हम दूसरोंको सुधारनेके लिये ही जीवन धारण करते हैं। पहले अपना सुधार करो। तुम्हारा सुधार हो गया तो जगत्‌का एक अंग अपने-आप ही सुधर गया। यों यदि सब अपना-अपना सुधार करने लगें तो सारा जगत् अपने-आप ही सुधर जाय।

दूसरोंको सीख देना मतव सीखो; अपनी सीख मानकर उसके अनुसार बन जाना सीखो। जो सिखाते हैं, खुद नहीं सीखते—सीखके अनुसार नहीं चलते, वे अपने-आपको और जगत्‌को भी धोखा देते हैं।

– – –

सच्ची कमाई है उत्तम-से-उत्तम सद्‌गुणोंका संग्रह। संसारका प्रत्येक प्राणी किसी-न-किसी सद्‌गुणसे सम्पन्न है। गुण देखोगे—गुण पाओगे। दोष देखोगे—दोष मिलेगा। दुनियाके प्राणियोंमें दोष-ही-दोष देखनेवाला दोषोंका समुद्र बन जाता है।

जिसका जीवन सुन्दर है, शुभ है—वही वास्तवमें सुन्दर है। परंतु जिसकी केवल बातें ही सुन्दर है, जीवन कलुषित है, वह तो पूरा कलङ्की है। उसकी सुन्दर बातें वैसे ही हैं जैसे जहरसे भरे घड़ेके ऊपरका दूध। अथवा मलसे भरा हुआ चमकीला मटका।

प्रतिक्षण अपनेको देखते रहो; जरा-सा भी दोष मनमें दिखायी दे तो उसे निकालनेकी कोशिश करो। तुम्हें फुरसत नहीं मिलनी चाहिये अपने सुधारसे।

जब तुम सचमुच सुधर जाओगे, तब तुम्हारे बिना बोले ही तुम्हारा जीवन जगत्‌को सीख देगा। बल्कि यदि उस हालतमें तुम एकान्तमें भी रहोगे, तब भी तुम्हारे अंदरके सद्‌गुणोंके सुवाससे जगत्‌को सुख और कल्याण प्राप्त होगा।

'दूसरे लोगोंके साथ वैसा ही बर्ताव करो, जैसा तुम दूसरोंसे अपने लिये चाहते हो। सबके गुण देखो और अभिमान छोड़कर नम्रताके साथ उन्हें लेते चले जाओ।'

जैसे धनका लोभी चुपचाप धन कमानेमें लगा रहता है, वह धनके लिये व्याख्यान नहीं दिया करता, वैसे ही चुपचाप दैवी गुणोंकी सम्पत्ति कमानेमें लगे रहो। न तो ढिंढोरा पीटो और न केवल बात बनानेमें ही जीवन बिताओ।

– – –

यह विचार छोड़ दो कि बिना डाँट-डपटके, बिना डराने-धमकानेके और बिना छल-कपटके तुम्हारे मित्र-साथी, स्त्री-बच्चे या नौकर-चाकर बिगड़ जायँगे। सच्ची बात तो इससे उलटी है। डर-डाँट और छल-कपटसे तो तुम उनको पराया बनाते हो और सदाके लिये उन्हें अपनेसे दूर कर देते हो।

प्रेम, सहानुभूति, सम्मान, मधुर वचन, सक्रिय हित, त्याग और निश्छल सत्यके व्यवहारसे ही तुम किसीको अपना बना सकते हो। तुम्हारा ऐसा व्यवहार होगा, तो लोग तुम्हारे लिये बड़े-से-बड़े त्यागको तैया हो जायँगे। तुम्हारी लोकप्रियता मौखिक नहीं होगी। लोगोंके हृदयोंमें बड़ा मधुर और प्रिय स्थान तुम्हारे लिये सुरक्षित हो जायगा। तुम भी

सुखी हो जाओगे और तुम्हारे सम्पर्कमें जो आयेंगे, उनको भी सुख-शान्ति मिलेगी।

– – –

याद रखो—तुम जो कुछ दोगे, वही तुम्हें एक बीजके असंख्य फलकी भाँति बहुत बड़े परिणामें वापस मिल जायगा। सुख चाहते हो, सुख दो, प्रेम चाहते हो, प्रेमका दान करो; हित चाहते हो, सबके हितकीबात सोचो; सम्मान चाहते हो, सबका सम्मान करो; सद्‌गुण चाहते हो, सद्‌गुणोंका दान करो और संसारमें शान्तिपूर्वक रहकर अन्तमें अनन्त शान्ति प्राप्त करना चाहते हो तो जगत्‌के जीवन जिसमें शान्तिसे रह सकें—सहज ही शान्तिको प्राप्त कर सकें, ऐसे कर्म करते रहो।

मीठी और हितभरी वाणी बोलो

निश्चय करो—मीठी और हितभरी वाणी दूसरोंको आनन्द, शान्ति और प्रेमका दान करती है और स्वयं आनन्द, शान्ति और प्रेमको खींचकर बुलाती है।

मीठी और हितभरी वाणीसे आत्मका का पोषण होता है; मनको पवित्र शक्ति प्राप्त होती है, बुद्धि निर्मल होती है और जीवनकी क्रियाएँ सुचारूरूपसे सुव्यवस्थित चलती हैं।

मीठी और हितभरी वाणीमें भगवान्‌का आशीर्वाद उतरता है और उससे अपना-पराया सबका कल्याण होता है।

मीठी औरहितभरी वाणीमें ही सत्यकी रक्षा होती है और उसीमें सत्यकी शोभा है।

– – –

मुखसे कभी ऐसा शब्द मत निकालो, जो किसीका जी दुखावे और अहित करे।

कड़वी और अहितकारिणी वाणी सत्यको नहीं बचा सकती और उसमें रहनेवाले आंशिक सत्यका स्वरूप भी बड़ा कुत्सित और भयानक हो जाता है।

– – –

यह निश्चय करो कि जिसकी जबान गंदी होती है, उसका मन भी गंदा होता है।

– – –

एक बार महामना मालवीयजीसे किसी विशिष्ट विद्वान्‌से कहा—'आप मुझे सौ गाली देकर देखिये मुझे गुस्सा नहीं आयेगा।' मालवीयजी महाराजने उत्तर दिया—'आपके क्रोधकी परीक्षा तो पीछे होगी, मेरा मुँह तो पहले ही गंदा हो जायगा।'

– – –

दूसरा कोई बड़ा बोले, गाली दे तो उसे ग्रहण मत करो—तुमपर उसका कोई असर नहीं होगा, तुमपर तो तभी असर होता है जब तुम उसे ग्रहण करते हो।

– – –

तुम जिसकी भाषा नहीं समझते, चाहे वह कितनी ही गाली दे, तुम्हें कोई दु:ख नहीं होता या तुम शब्दका अर्थ समझनेपर भी जबतक यह समझ रहे हो कि वह दूसरे किसीको गाली बक रहा है, तबतक दु:ख भी नहीं होगा। दु:ख तब होगा जब तुम समझोगे कि गाली मुझको दे रहा है। इसका मतलब यह कि तुम गालीको ग्रहण कर रहे हो!

रज्जबने कहा है—

रज्जब रोष न कीजिये कोई कहो क्यों ही।
हँसकर उत्तर दीजिये हाँ बाबाजी! यों ही॥

– – –

भगवान् मङ्गलमय हैं, जगत् भगवान्से भरा है अतएव तुम भी मङ्गलमें ही निवास करते हो।

जैसे बादलमें सूर्य ढका रहता है और जैसे राखसे आग ढकी रहती है, वैसे ही तुम्हारे अविश्वाससे मङ्गलमय भगवान् ढके हुए हैं। वास्तवमें उनका मङ्गलमय स्वरूप नित्य और सर्वत्र है।

– – –

प्रत्येक स्थितिमें, प्रत्येक सिद्धि-असिद्धिमें, प्रत्येक चिन्तनमें भगवान्को—उनके मङ्गलमय स्वरूपको देखो। फिर तुम्हें कभी अमङ्गलके दर्शन नहीं होंगे। तुम मङ्गलमय भगवान्को भूलकर, मङ्गलमयी भगवत्कृपाको भूलकर-नित्य अमङ्गलका चिन्तन, अमङ्गलकी आशंका और अमङ्गलका भय करते हो, इसीसे व्यर्थ ही तुम्हारे सामने मनाना रूपोंमें अमङ्गल आ खड़ा होता है। वह तुम्हारी ही कल्पनाका है। वास्तवमें नहीं है।

– – –

यह निश्चय करो— मैं सर्वत्र और सर्वदा मङ्गलसे घिरा हूँ, मङ्गलसे भरा हूँ, मङ्गलमें डूबा हूँ, मङ्गलसे सना हूँ, मङ्गलसे तना हूँ और मेरे बाहर-भीतर भूत-भविष्य सभी मङ्गलसे ओत-प्रोत हैं, क्योंकि नित्य मङ्गलमय भगवान्का मुझमें नित्य निवास है और मैं नित्य मङ्गलमय भगवान्में स्थित हूँ।

ईश्वरमें विश्वास

तुम यदि निराशा, असफलता, दु:ख, शोक, विषाद, अशान्ति, अवनति, दुर्गति, अवरोध, कलह, युद्ध, भय, बन्धन, बीमारी और विनाश आदिकी बातें सोचते रहोगे, मनमें इन्हींकी कल्पना करके इन्हींके विविध भयानक चित्रोंको देखते रहोगे तो याद रखो— तुम्हारी कल्पनाके ये चित्र बाहर भी तुम्हारे लिये वैसा ही भयानक वातावरण, वैसे ही बुरे संयोग, वैसे ही असाधारण कारण और अन्तमें वैसी ही परिस्थिति पैदा कर देंगे। मनमें जैसा संकल्प होता है वैसा ही परिणाम भी होता है।

– – –

अतएव यदि शुद्ध परिणाम चाहते हो तो नित्य शुद्ध संकल्प करो। उत्साह, सफलता, सिद्धि, सुख, आनन्द, बाह्लाद, शान्ति, उन्नति, विकास, प्रेम, सेवा निर्भयता, मुक्ति, स्वस्थता और निर्माणके सुन्दर सुशोभन संकल्प करो। इनसे तुम्हारा चित्त-क्षे? बहुत ही निर्मल सुगन्धिसे भर जायगा। फिर बाहरके वातावरण, संयोग, कारण और परिस्थिति भी ठीक

वैसी ही बन जायगी। जीवन अपरिमित अपूर्व सुख-शान्ति से ओत-प्रोत हो जायगा।

– – –

याद रखो—जो लोग दिन-रात अशुभ संकल्प करते रहते हैं, वे स्वयं तो दु:खी रहते ही हैं, जगत्को भी स्वाभाविक ही अपने अशुभ भावोंको दान देकर—उन्हें फैलाकर सबको न्यूनाधिकरूपसे दु:खी करते हैं। इसी प्रकार शुभ संकल्प करनेवाले पुरुष स्वयं सुखी होते हैं और संसारके सब प्राणियोंको भी सुखी करते हैं।

– – –

यह भी याद रखो कि सारे सुखका परम आधार है—ईश्वरमें विश्वास। समस्त शुभ विचार, शुभ संकल्प, शुभ गुण और शुभ भाव इश्वर-विश्वाससे ही उदय होते और टिकते हैं। जिसका ईश्वरमें विश्वास नहीं, वह शुभ संकल्प और शुभ पदार्थोंका उत्पादन, संग्रह-संवर्धन और संरक्षण नहीं कर सकता। उसका चित्त बरबस अशुभ की ओर प्रवृत्ति होगा।

जिसका ईश्वरमें विश्वास होगा, वही यह समझेगा कि दुनिया जो कुछ है सब ईश्वर है और दुनियामें जो कुछ है सब ईश्वरका है। तथा वही अपनेको और अपने सब कुछको ईश्वरके अर्पण कर सकेगा। इस प्रकार जो अपना सर्वस्व ईश्वर अर्पण कर देता है, उसका फिर जगत्के साथ केवल पवित्र सेवाका सम्बन्ध शेष रह जाता है। वह केवल सेवाके लिये ही जीवन धारण और जीवनके समस्त कार्योंका यथाविधि सम्पादन करता है; क्योंकि वह सचराचर प्राणीमें अपने प्रभुको देखता है–**'मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत।'**

इस प्रकारके विश्वासी सेवक में सारे सद्गुण, सारे सद्विचार, सारे संत्संकल्प अपने-आप ही आ जाते हैं—उसके चित्तमें कभी अशुभका, असत्का उदय ही नहीं होता। वह सर्वथा और सर्वदा नित्य नयी-नयी उमंगसे अपने प्रभुके सुखमय स्मरणके साथ-साथ उनकी सेवाके ही शुभ संकल्प किया करता है और इसी आनन्दमें निमग्न रहता है कि प्रभु कृपापूर्वक सेवामें उसे निमित्त बनाते हैं, और उसकी सेवा स्वीकार करते हैं।

उसको न अपनेमें मोह-ममता रहती है और न तो जगत्के किसी पदार्थमें ही। वह अपने शरीरकी तथा जगत्के पदार्थोंकी इसीलिये देख-रेख करता है कि वे प्रभुकी सेवाके साधन हैं। ऐसी अवस्थामें उसके अन्त: करणमें अशुभका तो कोई लेश रहता ही नहीं, वरं वह आग्रहपूर्वक किन्हीं शुभ संकल्पोंको भी अपनेंमें रखनेका प्रयत्न नहीं करता। वे तो उसी प्रकार अनिवार्यरूपसे उसके हृदयमें स्वाभाविक ही बने रहते हैं, जैसे चन्द्रमाके साथ उसकी निर्मल शीतल सुधामयी ज्योत्स्त्रा और सूर्यके साथ उसका प्रखर प्रकाश रहता है।

जबतक ऐसा न हो, तबतक सत्सङ्ग, स्वाध्याय और भजनके द्वारा ईश्वरमें विश्वास बढ़ानेकी तथा बार-बार अशुभ संकल्पोंको हटाकर शुभके स्मरण, सवंर्धन और संरक्षणकी सतत चेष्टा करते रहो।

भगवान्के अस्तित्व में विश्वास

निश्चय करो—भगवान् हैं, भगवान् ही एकमात्र तुम्हारे परम प्रयोजनीय हैं—तुम्हें केवल उन्हीं की आवश्यकता है और तुम उन्हें पानेके निश्चित अधिकारी हो।

– – –

जबतक मनुष्य किसी वस्तुके अस्तित्वमें, उसके प्राप्त करनेकी आवश्यकतामें और उसे प्राप्त करनेकी अपनी

योग्यता और अधिकारमें पूर्ण श्रद्धा नहीं रखता तबतक उस वस्तुकी प्राप्तिके साधनमें तत्पर नहीं होता।

– – –

जो सोचता है कि 'पता नहीं वह वस्तु है या नहीं; जो सोचता है, वस्तु तो है पर मेरा काम तो उसके बिना भी मजेमें चलता है' उसकी ऐसी क्या आवश्यकता है कि केवल उसीके पीछे सब कुछ छोड़ दूँ, इतनी दूसरी-दूसरी वस्तुएँ भी तो मेरे सुखकी साधन हैं; और जो यह सोचता है कि 'वस्तु भी है और आवश्यक भी है—उसके प्राप्त होनेमें ही जीवनकी सफलता भी है, परन्तु मुझे-सरीखे अनधिकारीको, मुझ-सरीखे अयोग्यको वह वस्तु मिल नहीं सकती'—वह कभी भी वस्तुकी प्राप्तिके लिये प्राणपण से पूरा प्रयत्न नहीं कर सकता।

इसीलिये जो लोग भगवान्‌के अस्तित्वमें संदेह करते हैं, जीवनकी सफलताके लिये भगवान्‌की अनिवार्य आवश्यकता नहीं समझते और अपनेको भगवत्प्राप्तिके अयोग्य मानते हैं, वे भगवत्प्राप्तिके लिये साधना नहीं कर सकते।

पर सत्य तो यह है कि भगवान् हैं और नित्य सत्य हैं! जीवन-जीवनकी सफलताके लिये-अचल, अखण्ड, नित्य सत्य पूर्ण आनन्दकी प्राप्तिके लिये—जिसकी मनुष्यमात्रको आकांक्षा है—भगवान्‌की ही अनिवार्य आवश्यकता है औ मनुष्योनि भगवत्प्राप्तिके अधिकारके साथ ही मिलती है, अतएव कोई भी मनुष्य चाहे तो प्रयत्न करके भगवत्प्राप्ति कर सकता है।

– – –

अन्यान्य वस्तुएँ तो प्रारब्धाधीन हैं, किये हुए कर्मोंके फलस्रूपमें प्राप्त होती हैं, परंतु भगवान् तो केवल अनन्य इच्छा होनेसे मिल जाते हैं; क्योंकि जीव उनका सनातन अंश है, उनके साथ अखण्ड सम्बन्ध रखता है और उन्हींसे ओत-प्रोत हैं। वह जभी सारे अन्याय मनोरथोंका त्याग करके भगवान्‌को पानेकी इच्छा करेगा, जभी अपने नित्य अभिन्न अंशी पर प्रभु भगवान्‌के लिये व्याकुल होकर उसके प्राण रो उठेंगे, बस, भगवान् तभी प्राप्त हो जायँगे।

– – –

भगवान्‌के समान अपना आत्मीय, अत्यन्त समीप और नित्य-निरन्र सर्वत्रका साथी अपना और कोई भी तथा कुछ भी नहीं है। जैसे अपनी चीजपर—अपनेपर अपना अधिकार होता है, वैसा ही अधिकार परम प्रेममय प्रभुपर तुम्हारा है। अन्यान्य वस्तुएँ तो जड़ या सीमित ज्ञानवाली होनेके कारण चाहे तुम्हारे मनकी व्याकुलताको, तथा तुम्हारे अधिकारको नहीं समझें; पर भगवान् तो सर्वव्यापी सर्वतश्चक्षु तथा नित्य सत्य चेतनानन्दघन होनेसे तुम्हारे हरके बातको जानते हैं। जब देखेंगे कि तुम्हारे मनमें उनकी—एकमात्र उन्हींकी चाह जाग उठी है, तुम उनके दर्शनके लिये आतुर हो, बस, तभी तुरंत वे तुम्हें दर्शन देकर, तुम्हारे अपने बनकर तुम्हें सदाके लिये कृतार्थ कर देंगे!

भगवान् और भगवान्‌की लीला

याद रखो—दुनियामें दो ही चीजें हैं भगवा् और भगवान्‌की लीला। जड़-चेतन सब कुछ भगवान् हैं और इसमें जो कुछ हो रहा है, सब उनकी लीला हो रही है एवं जब भगवान् कल्याणमय-मङ्गलमय हैं, तब उनकी लीला भी वस्तुतः कल्याणमयी-मङ्गलमयी ही है।

– – –

अपने-आपको समझो कि तुम कौन हो? माता-पिता, पुत्र-कन्या, पति-पत्नी, राजा-प्रजा, धनी-गरीब और वृद्ध-बालक आदि बाहरी रूप क्या तुम्हारा वास्तविक स्वरूप है? नहीं, कभी नहीं। तुम्हारा असली स्वरूप तो त्रिकालमें एक तथा एक-सा रहनेवाला आत्मा है, जो परमात्मा-भगवान्‌का अभिन्न सनातन अंश है और जो जगत्‌के सारे प्राणियोंमें एक है।

– – –

उस विश्वात्मा भगवान्‌के अनन्तरूप ही जगत्‌के ये सब प्राणी हैं और वह विश्वात्मा भगवान्‌के ही इन सब प्राणियोंकी विविध विचित्र क्रियाओंके रूपमें अपनी लीला कर रहा है। वह स्वयं अपने-आप ही, अपने-आपसे ही, अपने-आपमें ही और अपने-आप बने हुए खिलौनोंसे सदा खेल रहा है!

– – –

खेल देखनेमें सुन्दर हो या भयानक, करुण हो या रौद्र, शान्त हो या वीभत्स... है खेल ही और उसके प्रत्येक स्तरमें तथा प्रत्येक स्थलमें खिलाड़ीकी सुन्दरतम समरस कलाका प्रदर्शन हो रहा है और साथ ही उसके अपने परम मधुरतम सौन्दर्यका भी!

– – –

इस रहस्यको समझो और इस दृष्टिसे जगत्‌के कार्योंको, जगत्‌की घटनाओंको और जगत्‌के स्वरूपको देखो; फिर इस अनित्य और असुख जगत्‌में सर्वत्र, सब समय और सब रूपोंमें नित्य अनन्त कल्याणमय सत्य-शिव-सुन्दर सच्चिदानन्द भगवान्‌का दर्शन और स्पर्श प्राप्त होगा और तुम सदा-सर्वदा परम शान्ति, परमानन्दमें निमग्न रहोगे।

– – –

याद रखो—तुम तभीतक भगवान्‌की इच्छाके साथ अपनी इच्छाका मेल नहीं कर सकते, जबतक अपनेको उनसे भिन्न, अपनी इच्छाको स्वतन्त्र और अपने विचारोंकी पृथक् सत्ता समझते तथा उन्हें महत्त्व देते हो!

– – –

सब कुछमें और सम्पूर्ण क्रियाओंमें भगवान्‌की अखण्ड और अनन्त मङ्गलमयी सत्ताका अनुभव प्राप्त होनेपर सभी बातोंमें तुम उनसे सर्वथा समस्त हो जाओगे। फिर अपनी स्वतन्त्र कामनाका अस्तित्व रहेगा ही नहीं। और जब भगवान्‌की मङ्गलमयी इच्छासे तुम्हारे इच्छातक ऐक्य हो जायगा, जब तुम स्वाभाविक ही जगत्‌में सदा-सर्वत्र उनकी इच्छानुकूल परिस्थितिका अनुभव कर सकोगे। फिर, तुम्हारा सभीके साथ मेल हो जायगा; क्योंकि तुम सबमें एकमात्र उन्हीं को देखोगे जो तुम्हारेमें हैं।

– – –

यह निश्चय करो कि मैं भगवान्‌में हूँ, भगवान् मुझमें हैं और बाहर-भीतर भगवान्‌से पूर्ण होनेके कारण मैं नित्य मङ्गल और नित्य कल्याणमें ही स्थित हूँ।

– – –

यह निश्च करो कि जगत्‌में अमङ्गल है ही नहीं, क्योंकि भगवान्‌में कभी अमङ्गलकी कल्पना ही नहीं होती। जेसे छोटे शिशुके मनमें कामकी भावनाका अभाव होनेसे वह कामकी कल्पना भी नहीं कर सकता, इसी प्रकार जब तुम्हारे

हृदयमें अमङ्गल-भावना नहीं होगी, तब तुम्हें जगत्‌में कहीं अमङ्गल नहीं मिलेगा।

– – –

यह निश्चय करो कि बाहर वर्ण, जाति, पद, व्यवसाय, शिक्षा, व्यवस्था और कार्य आदि मेरा स्वरूप नहीं है। मैं तो नित्य सच्चिदानन्दघन भगवान्‌में स्थित स्वरूपभूत अंश हूँ।

– – –

यह निश्चय करो कि भगवान्‌की लीला कल्याणकारिणी हैं, अतएव मुझे कभी अकल्याण छू नहीं सकता। इसी प्रकार मुझसे भी किसीका अकल्याण नहीं हो सकता; क्योंकि मुझमें अकल्याण है ही नहीं।

– – –

यह निश्चय करो कि मैं जहाँ रहूँगा, वहाँका वातावरण पवित्र-विशुद्ध और प्रेम-आनन्दसे पूर्ण रहेगा; क्योंकि प्रेमानन्दस्वरूप भगवान्‌ने ही मुझको अपनेमें स्थान दे रखा है।

– – –

यह निश्चय करो कि मेरे पड़ोसीसे मुझको कभी कष्ट नहीं मिलेगा; क्योंकि मुझसे उसे कभी कष्ट मिलनेकी सम्भावना नहीं है। यह इसलिये कि जो मङ्गलमय सुहृत्तम भगवान् उसमें हैं, वही मुझमें हैं, फिर वे अपने-आपको ही कष्ट कैसे देंगे।

– – –

असहिष्णु प्रेम प्रेम नहीं है; सहनशीलता प्रेमका एक अङ्ग है। प्रेम ही सहना जानता है। वह अनन्त दु:खोंके पहाड़ोंको उठा लेता है, पर प्रेमास्पदकी प्रसन्नता देखकर उसीमें सुखका अनुभव करता है। उसे एक ऐसे सात्त्विक आनन्दकी अनुभूति होती है, जो स्वार्थपरायण भोगीको किसी भी अनुकूल-से-अनुकूल भोगदशामें भी नहीं होती। वरं यों कहना चाहिये कि स्वार्थपरायण भोगीके भाग्यमें तो ऐसे सात्त्विक आनन्दकी कल्पना भी नहीं आती।

लम्बे संयोग-वियोगकी दशामें कालक्रमसे कामकी प्रीति शिथिल होकर क्रमश: नष्ट हो जाती है; परन्तु प्रेमका पवित्र बन्धन तो संयोग-वियोग दोनों ही अवस्थाओंमें दृढ़से दृढ़तर और दृढ़तम होता जाता है।

– – –

भगवान् अत्यन्त समीप हैं

विश्वास करो—भगवान् सदा ही तुम्हारे अत्यन्त समीप हैं, तुम्हारी प्रत्येक स्थितिको जानते हैं, तुम्हारी हरेक आवाजको सुनते हैं। बस, विश्वासपूर्वक पुकारनेकी देते है। तुरंत तुम्हारी पुकार सुनेंगे और तुम्हें कष्टोंसे छुड़ा देंगे।

विश्वास करो—भगवान् तुम्हारे परम सुहृद् हैं, निकटसे निकटतम स्वजन हैं। तुम्हारा दु:ख सुनकर वे स्थिर नहीं रह सकेंगे। सच्चे मनसे उन्हें अपना परम सुहृद् समझकर पुकारो, तत्काल तुम्हारी सुनवायी होगी और भगवत्कृपासे तुम दु:खोंसे तर जाओगे।

– – –

विश्वास करो—भगवान् परम दयालु हैं। तुम चाहे कितने ही पतित, कितने ही पातकी और कितने ही घृणित क्यों न हो, भगवान् तुमसे घृणा नहीं कर सकते। इसबात का निश्चय करो और कातर स्वर से उन्हें पुकारो। वे उसी क्षण तुम्हारी सारी विपत्ति हर लेंगे।

– – –

विश्वास करो—भगवान् परम आश्रय हैं, चाहे, सारा संसार तुम्हें भूल जाय, चाहे घर-परिवारके सभी लोग तुमसे मुख मोड़ लें, चाहे तुम सर्वथा निराश्रय हो जाओ, एक बार हृदयसे उनके परम आश्रय-स्वभावपर विश्वास करके मन-ही-मन उनका स्मरण करो। देखोगे, तुम्हें कितना शीघ्र और कितना मधुर और निश्चिय आश्रय मिलता है।

– – –

विश्वास करो—भगवान् सर्वशक्तिमान् हैं, तुम्हारा दु:ख चाहे कितना ही प्रबल हो, तुम्हें संकट चाहे कितने ही पहाड़ -जैसे हों और तुम्हारी विपत्ति चाहे किसी से भी न टलनेवाली हो, भगवान्‌की शान्तिके सामने सभी तुच्छ हैं। तुम विश्वास करके सर्वशक्तिमान्‌को पुकारो-उनकी शक्ति अविलम्ब तुम्हारी सहायता करेगी और तत्काल तुम्हारे पहाड़-से-दु:ख-कष्ट काजलके ढेर की तरह उड़ जायँगे।

– – –

विश्वास करो— भगवान् सव्रलोकमहेश्वर हैं, ईश्वरोंके महान् ईश्वर हैं। तुमपर कैसे भी नीच कुग्रहकी दशा आयी हो, तुमको जैसा भी प्रबल निकृष्ट कर्म बुरा फल भुगताने आया हो और तुमपर किसी भीमहान देवता या दैत्यका कोप बरसता हो, भगवान्‌को पुकारनेपर ये सभी डरकर हट जायँगे; क्योंकि ये सभी उनके चेरे हैं। इनका उन्हींपर वश चलता है, जो भगवान्‌की सर्वलोकमहेश्वरतापर विश्वास करके उनको नहीं पुकारते।

– – –

विश्वास करो—भगवान् पतितपावन हैं। जैसे सूर्यका स्वभाव ही अंधकारका नाश करना है। चाहे कितना भी गहरा अँधेरा हो, सूर्यके उदय होनेसे कुछ पहले ही मर जाता है, वैसे ही भगवान् के नामाभाससे ही पापसमूह नष्ट हो जाते हैं। मनमें इस बात पर श्रद्धा करो और उनके नामका आश्रम लो। फिर देखो, पापोंका कितने अल्प क्षणोंमें ही नाश हो जाता है। और यह तो निश्चिय ही है कि पाप-नाश होते ही ताप भी नष्ट हो जायँगे, क्योंकि त्रिविध तापके कारण तोये पाप ही है।

– – –

विश्वास करो—भगवान् भयके भी भयदाता है और भक्तभयहारी हैं। मृत्यु देवता यमराज भी उनसे भय करते हैं, परंतु भक्तोंको वे नित्य निर्भय रखते हैं। दम्भ-अहङ्कार, काम-क्रोध, लोभ-मोह, मद-मत्सर आदि भीतरी शत्रु और रोग-पीड़ा, दानव-मानव, सर्प-सिंह, नाश-निष्फलता आदि बाहरी वैरियोंसे चाहे तुम कितने ही डरे हुए होओ, उनके भक्तभयभन्जन विरदपर विश्वास करके ज्योंही उन्हें पुकारोगे त्योंही ये सारे शत्रु तुम्हें छोड़कर सटक जायँगे और तुम निर्भय हो जाओगे।

– – –

विश्वास करो—भगवान् परम उदार हैं, तुम चाहे कितने ही दरिद्र हो, कितने अभावग्रस्त हो और कितने ही दीन-हीन हो, विश्वास करके उन लक्ष्मीपतिकी ओर कातर दृष्टिसे देखकर हृदयसे उन्हें पुकारो, तुम्हारे सारे दैन्य-दारिद्रय्‌को और

तुम्हारे सारे अभावोंको हरकर वे तुम्हें तुरन्त निहाल कर देंगे।

विश्वास करो—भगवान् रसमय हैं और प्रेमस्वरूप हैं—तुम चाहे कितने ही शुष्क-हृदय हो, तुम्हारे हृदयमें चाहे कितनी ही नीरसता भरी हो, तुम चाहे प्रेमकी कल्पना भी नहीं कर पाते, हो उनके प्रेमस्वरूपपर विश्वास करके सरल हृदयसे उनके प्रेमकी भिक्षा माँगोगे तो वे अपना दुर्लभ प्रेम देकर तुम्हें कृतार्थ कर देंगे।

विश्वास करो— भगवान् मोक्षके एकमात्र आश्रय और मोक्षस्वरूप हैं। उनके नाम-रूपका चिन्तन करते ही सारे भवबन्धन कट जाते हैं, सारे पाश पटापट टूट जाते हैं। निश्चय करके उनकी शरण ग्रहण करो और सच्ची निर्भयकताके साथ उन्हें पुकारो, तुम्हारे अनादि कालके गहरे बन्धन क्षणोंमें कट जायँगे और तुम उनके दुर्लभ मोक्षस्वरूपको पाकर सफल जीवन हो जाओगे।

जबतक और तबतक

जबतक तुम्हें अपना लाभ और दूसरेका नुकसान सुखदायक प्रतीत होता है, तबतक तुम नुकसान ही उठाते रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें अपनी प्रशंसा और दूसरोंकी निन्दा प्यारी लगती हैं, तबतक तुम निन्दनीय ही रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें अपना सम्मान और दूसरेका अपमान सुख देता है, तबतक तुम अपमानित ही होते रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें अपने लिये सुखकी और दूसरेके लिये दु:खकी चाह है, तबतक तुम सदा दु:खी रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें अपनेको न ठगाना और दूसरोंको ठगना अच्छा लगता है, तबतक तुम ठगाते ही रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें अपने दोष नहीं दीखते और दूसरेमें खूब दोष दीखते हैं, तबतक तुम दोषयुक्त ही रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें अपने हितकी और दूसरोंके अहितकी चाह है, तबतक तुम्हारा अहित ही होता रहेगा।

– – –

जबतक तुम्हें तुम्हें सेवा करानेमें सुख और सेवा करनेमें दु:ख होता है, तबतक तुम्हारी सच्ची सेवा कोई नहीं करेगा।

– – –

जबतक तुम्हें तुम्हें लेनेमें सुख और देनेमें दु:खका अनुभव होता है, तबतक तुम्हें उत्तम वस्तु कभी नहीं मिलेगी।

– – –

जबतक तुम्हें भोगमें सुख और त्यागमें दु:ख होता है, तबतक तुम असली सुखसे वन्चित ही रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें विषयोंमें प्रीति और भगवान्‌में अप्रीति है, तबतक तुम सच्ची शान्तिसे शून्य ही रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें शास्त्रोंमें अश्रद्धा और मनमानें अचारणोंमें रति है, तबतक तुम्हारा कल्याण नहीं होगा।

– – –

जबतक तुम्हें तुम्हें साधुओंसे द्वेष और असाधुओंसे प्रेम है, तबतक तुम्हें सच्चा सुपथ नहीं मिलेगा।

– – –

जबतक तुम्हें सत्सङ्गसे अरुचिऔर कुसङ्गमें प्रीति है, तबतक तुम्हारे अचारण अशुद्ध ही रहेंगे।

– – –

जबतक तुम्हें जगत्‌में ममता और भगवान्‌से लापरवाही है, तबतक तुम्हारे बन्धन नहीं कटेंगे।

– – –

जबतक तुम्हें तुम्हें अभिमानसे मित्रता और विनयसे शत्रुता है, तबतक तुम्हें सच्चा आदर नहीं मिलेगा।

– – –

जबतक तुम्हें तुम्हें स्वार्थकी परवा है और परमार्थकी नहीं, तबतक तुम्हारा स्वार्थ सिद्ध नहीं होगा।

– – –

जबतक तुम्हें बाहरी रोगोंसे डर है और काम–क्रोधादि भीतरी रोगोंसे प्रीति है, तब तक तुम नीरोग नहीं हो सकोगे।

– – –

जबतक तुम्हें धर्मसे उदासीनता और अधर्मसे प्रीति है, तबतक तुम सदा असहाय ही रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें मृत्युका डर है और मुक्तिकी चाह नहीं है, तबतक तुम बार–बार मरते ही रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें घर–परिवारकी चिन्ता है और भगवान्‌की कृपापर भरोसा नहीं है, तबतक तुम्हें चिन्तायुक्त ही रहना पड़ेगा।

– – –

जबतक तुम्हें तुम्हें प्रतिशोधसे प्रेम है और क्षमासे अरुचि है, तबतक तुम शत्रुओंसे घिरे ही रहोगे।

– – –

जबतक तुम्हें विपत्ति से भय है और प्रभुमें अविश्वास है, तबतक तुमपर विपत्ति बनी ही रहेगी।

प्रभुकी वस्तु प्रभुके अर्पण

दूसरोंको सुख पहुँचाना, उनके दु:खको अपना दु:ख बनाकर अपना सुख उन्हें दे देना—इस प्रकारका क्षणभरका मनोरथ भी महान् पुण्यरूप है! दूसरेके दु:खको सर्वथा अपना बल लेना तो अत्यन्त ही महत्त्वकी बात है, उसके दु:खका जरा-सा हिस्सा बँटाना भी बहुत बड़ा सौभाग्य है। इसीमें मानवताका विकास है।

सत्पुरुषोंको दु:ख होता है, पर अपने दु:खसे नहीं। अपने दु:खकी उन्हें परवा ही नहीं होती। वे तो दूसरोंके दु:खसे ही दु:खी होते हैं। इसी प्रकार निर्विकार संतोकी सहज नित्य सुखरूपता भी दूसरेके सुखमें सुखका अनुभव किया करती है।

गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं—

संत हृदय नवनीत समाना। कहा कबिन्ह परि कहै न जाना॥

निज परिताप द्रवइ नवनीता। पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता॥

'कवियोंने संत-हृदयकी तुलना नवनीतसे की, पर वही ठीक-बैठी नहीं; क्योंकि मक्खन तो स्वयं ताप (गरमी) पाकर पिघलता है, लेकिन पवित्र-हृदय संत दूसरेंके दु:खसे द्रवित हो जाते हैं।'

इसलिये संत पुरुष स्वयं विपत्तिका वरण करके दूसरेको सुख पहुँचाया करते हैं। उनका जीवन होता है इसीलिये, नहीं तो उन आप्तकाम महात्माओंका जगत्के कर्मप्रपन्जसे क्या सम्बन्ध!

संसारमें उनका जीवन सर्वथा घृणित, पापमय और निकृष्ट है, जो दूसरोंको दु:ख देने के लिए ही जीवन धारण करते हैं, और उसीमें सुख तथा सफलताकी अनुभूति करते हैं।

– – –

भूखे गरीबको अन्न, नंगेको कपड़ा, रोगीको दवा तथा पथ्यऔर निराश्रको आश्रय जरूर दो, परंतु मनमें ऐसा अभिमान कभी मत करो कि वह आश्रयहीन दरिद्र है और मैं उसपर उपकार करनेवाला समर्थ कृपालु हूँ। असलमें सबको भगवान् ही देते हैं। तुम तो उसमें निमित्तमात्र हो। शुभ कर्ममें भगवान्ने तुमको निमित्त बनाया है, यह तुमपर उनकी विशेष कृपा है।

सभी रूपोंमें भगवान् हैं, यह समझकर भगवत्पूजाकी भावनासे गरीब, अपाहिज और रोगी की खूब सेवा करो; और भगवान्ने इस रूपोंमें आकर तुम्हारी सेवाको स्वीकार किया, इसे अपना परम सौभाग्य समझो।

असलमें तुम्हारे पास तुम्हारा अपना ही है क्या? सभी वस्तुएँ भगवान्की हैं। तुम उन्हें अपनी मानकर और अपनेको उनका दाता समझकर अभिमान करने लगो तो यह तुम्हारी बेईमानी होगी। प्रभुकी वस्तु प्रभुके अर्पण हो और यह कार्य सुचारुरूपसे—सुव्यवस्थित रीतिसे, यह तुम्हारा कर्तव्य है। कर्तव्यसे चूकते हो तो तुम मालिकके अपराधी बनते हो।

भगवान्की वस्तुओंको अपनी मानना बेईमानी, उन्हें अपनी बताकर किसीपर अहसान करना बेईमानी, अपनेको उनका दानी घोषित कर रोब गाँठना बेईमानी और न देकर स्वयं मालिक बन बैठना तो सबसे बड़ी बेईमानी है।

– – –

यह सदा स्मरण रखो कि सब कुछ भगवान्का है और सब भगवान्के रूप हैं। भगवान्की वस्तु, भगवान्को जिस रूपमें जैसे जरूरत हो, उस रूपमें वैसे ही देनेके लिये ही वह वस्तु तुम्हें सौंपी गयी है और इस सेवा का तुम्हें सदा बदला मिलता रहता है—यहाँ 'योग-क्षेम' का निवाह होता है और मति-गति शुभ होती है। आगे इससे भी बहुत बड़ा पुरस्कार

मिलनेवाला है। इस सेवाके बदलमें मालिक स्वयं तुम्हें अपना आत्मदान करनेवाले हैं। इसलिये ईमानदारीसे सेवा करनेमें कभी मत चूको।

क्षणभङ्गुर जीवन

देखो—जीवन क्षणभंगुर है। अभी है, क्षणीार बाद रहेगा या नहीं, पता नहीं। यहाँकी सभी चीजें ऐसी ही हैं; फिर किसी मोहमें पकड़कर इस छोटे-से जीवनके लिये इतनी गहरी नींव खोद रहे हो?

सोचो—कितने बड़े-बड़े धनी-मानी ऐश्वर्यवान् और कीर्तिमान पुरुष चले गये। क्या उनके साथ यहाँकी एक भी चीज गयी? फिर क्यों इन नश्वर चीजोंके संग्रहकी चिन्तामें अपना जीवन खो रहे हो?

विचार करो—रावण-से प्रतापी, हिरण्यशिपु-से विश्वविजयी और सहस्त्रार्जुन-सरीखे हाथोंपर धरतीको तौलतनेवाले वीर मौतके शिकार हो गये। फिर तुम किस बलपर, किस सिद्धिके लिये जगत्‌के प्रलोभनमें पड़े इधर-उधर भटक रहे हो।

याद करो— तुम्हारे पिता-पितामहका घरमें कितना रोब-दाब था। घरके सब लोग उनसे संकोच करते थे, डरते थे, उनकी आज्ञाके विरुद्ध कोई चूँतक नहीं करता था। आज कहाँ है उनका वह प्रभुत्व? उनकी कोई याद भी नहीं करता। यही दशा तुम्हारी होगी। फिर क्यों इस घरके पीछे पागल हो रहे हो?

देखो—तुम्हारा यह यौवन, यह रूप, यह सम्मान और यह धन सदा नहीं रहेगा। ये सभी वस्तुएँ नष्ट होनेवाली हैं और तुमसे निश्चय ही इनका वियोग होगा। फिर क्यों इनके लिये चक्करमें पड़े पिस रहे हो?

सोचो—यहाँकी दो दिनकी जिंदगीमें तुम्हारा बड़ा नाम हो गया या तुम्हें लोग बहुत मानने लगे तो क्या हुआ? तुम्हारा यह शरीर और यह नाम—जिसको लोग पूजते हैं और मानते हैं, कै दिनका है? फिर क्यों, इन नाम-रूपकी प्रतिष्ठामें अपनेको बर्बाद कर रहे हो?

– – –

विचार करो—तुम्हारा जीवन तभी सफल होगा जब तुम इस जन्म मृत्युके भयानक चक्रसे छूटकर अक्षय परम शान्तिको प्राप्त कर लोगे। असलमें उसी सनातनी शान्तिको पानेके लिये ही तुमने मानव-शरीर धारण किया है। यदि तुम उस ओर नहीं चले तो तुम्हारा जीवन व्यर्थ ही चला जायगा! समय जा रहा है, फिर तुम क्यों नहीं चेत करते?

– – –

याद करो—तुतमने गर्भवासमें प्रतिज्ञा की थी और रो-रोकर प्रभुसे कहा था कि 'इस जीवनको मैं तुम्हारे ही भजनमें लगाऊँगा। दूसरा कोई काम करूँगा ही नहीं।' अब उस प्रतिज्ञाको भूलकर मिथ्या माया-ममतामें फँसकर फिर उसी भीषण गर्भवासकी यन्त्रणा भोगनेकी तैयारी क्यों कर रहे हो?

– – –

चेतो-शीघ्र चेता। कहीं जीवनके दिन यों कही असावधानीमें बीत गये तो फिर पछतानेसे कुछ भी काम नहीं निकलेगा। अरे, क्यों हाथ लगे स्वर्ण सुयोग को खो रहे हो?

देखो—अबतक जो भूल हो गयी, सो हो गयी, उसके लिये रोनेसे कोई लाभ नहीं है। जीवनके जितने दिन बाकी हैं, उन्हींको दृढ़ संकल्प करके भगवान्के भजनमें लगाकर जीवनको सफल कर लो। ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलनेका। इस परम लाभ को प्राप्त करनें में क्यों इतना आलस्य कर रहे हो।

– – –

सोचो—जबतक शरीर स्वस्थ है, इन्द्रियाँ सशक्त हैं, मन प्रबुद्ध है तथा बुद्धि काम देती है, तभीतक तुम इन्हें अपने लक्ष्यकी ओर लगाकर जीवनको सफल करनेका प्रयत्न कर सकते हो। इन सबके असमर्थ होनेपर कुछ भी नहीं कर सकोगे। फिर क्यों देर कर रहे हो ?

सदा सुखी कौन है?

याद रखो—जो पुरुष भगवान्का होकर कामना और अपेक्षाकें फंदेसे निकल गया है, वही सदा सुखी है! उसकी शान्तिको भंग करे, ऐसा जगत्में कोई कारण नहीं है।

याद रखो—जिसको भगवान्की कृपापर भरोसा है और उनके न्याय-पर विश्वास है, उसको संसारकी कोई भी स्थिति विचलित नहीं कर सकती!

याद रखो—जो सांसारिक पदार्थोंकी कोई परवा न करके केलव भगवान्से ही प्रेम करता है, जगत्की सारी वस्तुएँ और सारी परिस्थितियाँ स्वाभाविक ही उसके कल्याणमें लग जाती है।

– – –

याद रखो—जो भगवान्का अनन्य आश्रय लेकर निश्चिन्त हो गया है, उसको अपने योगक्षेमकी चिन्ता कभी नहीं सताती है। उसके लिये जो कुछ उचित, हितकर और आवश्यक होता है,भगवान् स्वयं ही उसकी रक्षा और पूर्तिकी व्यवस्था कर देते हैं।

– – –

याद रखो—जिसकी आवश्यकताका पता भी सर्वज्ञ भगवान् लगाते हैं और उसकी ठीक समय पर उचित मात्रामें पूर्तिकी व्यवस्था भी सर्वशक्तिमान् और परम सुहृद् भगवान् ही करते हैं, उसकी यथार्थ आवश्यकता की पूर्ति हुए बिना कभी रहती नहीं, और अनावश्यक आवश्यकताको बोध उसको कभी सताता नहीं।

याद रखो—जिसके योगक्षेमका भार भगवान्ने उठा लिया है, उसको कभी किसी प्रकार से हानि होगी-यह तो मानना ही मूर्खता है। उसकी कभी कोई हानि होती दिखायी देगी तो वह किसीकी उस गंदी और तुच्छ-सी झोंपड़ीको ढहाने-जैसी ही होगी, जो विशाल सुन्दर महल बनानेके लिये ढहायी जाती है।

– – –

याद रखो— जिसकी दृष्टि बहुत ही छोटी-सी सीमामें बँधी रहती है, उसीको प्रत्यक्षवादी कहते हैं और वही भविष्यके सुन्दर परिणामको न जाननेके कारण वर्तमानमें दीखनेवाली कल्पित हानिसे भयभीत होकर शोकमें डूब जाता है। दूरदर्शी पुरुष भविष्यको देखते हैं और भविष्यके सुन्दर परिणामके लिये वर्तमानके कष्टोंको सहर्ष स्वीकार करते हैं एवं उन्हें तपस्या समझकर सुखका अनुभव करते हैं।

– – –

याद रखो—जो भगवान्‌की कृपामें विश्वास करते हैं और भगवान्‌के ऊपर अपनेको छोड़ देते हैं, वे इस बातकी ओर ताकते ही नहीं कि हमारी बड़ी हानि हो रही है। वे जानते हैं कि किसी परम लाभके लिये ही यह हानि हो रही है; क्योंकि मङ्गलमय भगवान्‌के विधानमें अमङ्गलमके लिये गुंजाइश ही नहीं है।

– – –

याद रखो—जो भगवान्‌में यथार्थ विश्वास रखते हैं, उनकी बीमा भगवान्‌के यहाँ बिक जाती है। यहाँकी बीमा-कम्पनियाँ तो फेल भी हो सकती हैं, पर वह बीमा लेनेवाला ऐसा पूर्ण है कि सब कुछ देनेपर भी उसका फंड उतना-का-उतना अपार ही रहता है। वह जिसकी बीमा ले लेताहै, उसको सर्वत्र, सर्वथा और सर्वदाके लिये अभय कर देता है और यह बीमा हर साल बार-बार नहीं बेचनी पड़ती। जो एक बार सच्चे हृदयसे अपनेको श्रीभगवान्‌के चरणों पर डालकर उनकी शरण ले लेता है, उसकी उसी क्षण सदाके लिये कभी Lapse(नष्ट) न होनेवाली अखण्ड बीमा बिक जाती है।

– – –

याद रखो—जो भगवत्चरणोंके शरणागत हो गया है, उसीका मानव जन्म और मानव-जीवन सफल हुआ है। भोगोंके आश्रयमें पड़ा हुआ मनुष्य तो-जीवनकी सफलता तो दूर-उलटे नरकोंमें तथा आसुरी योनियोंमें जानेकी तैयारी कर रहा है। उसका जीवन व्यर्थ ही नहीं, बल्कि आनेवाले भयानक दु:खोंका महान् कारण है।

याद रखो—जिसने भगवत्चरणोंका आश्रय ग्रहण कर लिया है, वह स्वयं ही अपार दु:खसागरसे नहीं तरता—उसके साथ बातचीत करनेवाले, मिलनेवाले, उससे प्रेम करनेवाले, उसके सहवासमें रहनेवाले, उसके मित्र-बान्धव-कुटुम्बी और सेवकतक के तरनेका साधन बन जाता है। बस, ऐसा ही पुरुष जगत्‌में धन्य है। उसीके माता-पिता धन्य हैं और वह भूमि भी धन्य है, जिसमें ऐसा भगवत्चरणारविन्द-चन्चरीक प्रेमी भक्त पुरुष प्रकट होता है।

भगवान् परम सुहृद् हैं

विश्ववास करो—भगवान् सत्य हैं, नित्य है और सर्वत्र हैं। ऐसा कोई क्षण और स्थल नहीं जब जहाँ वे तुम्हारे साथ न हों।

विश्वास करो—भगवान् तुम्हारे परम सुहृद् हैं, और वे सर्वशक्तिमान् हैं एवं तुम्हारे चाहते ही वे अपनी सारी शक्ति लगाकर तुम्हारा कल्याण करनेको प्रस्तुत हैं।

– – –

विश्वास करो—भगवान्‌की प्रतिज्ञा है, 'जो मुझे जैसे भजता है, मैं भी उसे वैसे ही भजता हूँ।' तुम भगवान्‌से मिलनेको अधीर होओगे तो वे भी तुमसे मिलनेको अधीर हो उठेंगे, तुम उनको जैसे चाहोगे तो वे भी तुमको वैसे ही चाहेंगे और तुम उन्हें अपनी कोई प्रिय वस्तु दोगे तो वे भी तुम्हें अपनी प्रिय वस्तु देंगे।

– – –

विश्वास करो—भगवान् सत्यसंकल्प हैं। वे जब तुमसे मिलनेका संकल्प करेंगे तब उसी क्षण तुमसे निर्बाध मिलकर

तुम्हें कृतार्थ कर देंगे। तुम उन्हें चाहोगे अपने क्षुद्र, संकुचित और पाप-ताप-कलुषित जड मनसे, क्योंकि तुम्हारा मन ऐसा ही है और वे तुम्हें चाहेंगे अपने महान् विशाल और परम पवित्र दिव्य चिन्मय मनसे; क्योंकि उनका मन वैसा ही है। अत: उनके चाहते ही तुम कृतकृत्य और महान् बन जाओगे। तुम उन्हें दोगे अपनी कोई अनित्य, अपूर्ण और मायाजनिक प्रिय वस्तु या अधिक-से-अधिक अर्पण कर दोगे अपना कर्मजन्य पाञ्चभौतिक रक्तमांसमय घृणित शरीर, क्योंकि तुम्हारे पास वही है और वे तुम्हें देंगे अपनी नित्य पूर्ण शाश्वत दिव्य वस्तु या अर्पण कर देंगे अपना नित्यपूर्ण सर्वधर्ममय सच्चिदानन्द-स्वरूप क्योंकि उनके पास वही है। सोचो कितना लाभ है, उनसे मिलनेकी चाहमें, उन्हें चाहने में और उन्हीं कोई वस्तु समर्पण करनेंमें।

– – –

विश्वास करो—भगवान् तुम्हारे लिये कृपामूर्ति ही हैं—**'प्रभु मूरति कृपामयी हैं।'** उनके पास इस कृपाके विपरीत या इनके अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं, तब फिर तुम क्यों डरते हो कि कभी भगवान्की अकृपा हो गयी या कृपा न हुई तो जाने क्या होगा? जब तुम्हें देनेके लिये उनके पास कृपासके अतिरिक्त दूसरी वस्तु हैं ही नहीं, तब वे देंगे कहाँसे और तुमको वह मिलेगी भी कैसे?

– – –

विश्वास करो—जहाँ कहीं दु:ख-संकट या पीड़ा-यातनाकी प्रतीति होती है, वहाँ वस्तुत: उनकी कृपा ही उस रूपमें प्रकट होकर तुम्हारा कोई महान् हित-साधन कर रही है, जिसको तुम जानते नहीं और इसीलिये उससे बचना चाहते हो, परंतु वे दयालु प्रभु तुम्हें उससे वञ्चित नहीं करना चाहते।

विश्वास करो—उनकी कृपाका कठोर रूप वैसा ही है जैसा निकम्मे खेलमें रमे हुए मैले-कुचैले और भूखे-नंगे पुत्रके प्रति स्नेहमयी जननीके द्वारा उसे नहलाने-धुलाने, खिलाने-पिलाने और सच्चा आराम पहुँचाकर सुखी करनेके उद्देश्य से की हुई डाँट-डपट।

विश्वास करो—भगवान् नित्य-निरन्तर तुम्हारे ऊपर अपनी कृपासुधा-धाराकी अनवरत-अजस्त्र वर्षा कर रहे हैं। तुम्हारे आगे-पीछे, दायें-बायें और ऊपर-नीचे केवल कृपाकी ही सुधाधारा ब रही है। तुम आपाद-मस्तक उसीमें सरोबार हो। तुम्हारी शक्ति ही नहीं जो उसकी किसी ओर से भी हटा सको।

सुख चाहते हो तो सुख दो

प्रतिध्वनि ध्वनिका ही अनुसरण करती है और ठीक उसीके अनुरूप होती है, इसी प्रकार दूसरोंसे हमें वही मिलता है और वैसा ही मिलता है, जो और जेसा हम उनको देते हैं। अवश्य ही वह मिलता है बीज-फल-न्यायके अनुसार कई गुना बढ़कर।

सुख चाहते हो, दूसरों को सुख दो; मान चाहते हो, मान प्रदान करो; हित चाहते हो, हित करो और बुराई चाहते तो बुराई करो! याद रखो, जैसा बीच बाओगे वैसा ही फल मिलेगा। फल की न्यूनाधिकता जमीनके अनुसार होगी।

– – –

हिंसापरायण लोग अपनी हिंसाके फलसे स्वयं नष्ट हो जाते हैं। और जो साधु-स्वभावके लोग हैं, वे अपनी साध ुताके परिणामस्वरूप समस्त पापोंसे छूट जाते हैं। हिंसा हिंसकको खा जाती है और साधुता पापकी प्रचण्ड अग्निसे

साधुको बचा लेती है।

– – –

हिंसासे साधुकी तुलना वैसे ही ही नहीं हो सकती, जैसे जहरसे अमृतकी। साधु पुरुष जैसे अपने स्वाभाविक आचरणोंसे जगत्‌में प्रेम, करुणा, क्षमा और एकात्मताका विस्तार किया करते हैं, वैसे ही हिंसक मनुष्य वैर, निर्दयता, क्रोध और अनात्मीयता का प्रसार करते हैं।

– – –

हिसंकोसे इस जगत्‌में दु:ख बढ़ता है और परलोक बिगड़ता है; दूसरी ओर साधुओंसे जगत्‌में सुख–शान्ति फैलती है और परलोक तो बनता ही है। साधुताका फल देरसे भले ही हो, पर होता है अमृतमय।

– – –

मनुष्यको पापसे से सदा सावधान रहना चाहिये। जरासे पापको भी सहन करना पापके विशाल वृक्षकी जड़ जमाना है। मनुष्य जब एक बार पापको स्वीकार करके उसमें फँस जाता है, तब फिर वह दिनोंदिन उसीमें लिपटता ही चला जाता है और आगे चलकर उसीके सङ्गमें सुखका—यहाँतक कि कर्तव्यका अनुभव करने लगता है। उसके पापोंकी ऐसी एक दृढ़ और मोहक शृंखला बन जाती है जिसके बन्धनसे वह सहज ही कभी छूट नहीं सकता और उसके नये–नये रूपों पर मोहित होता रहता है।

पाप करते समय अज्ञानवश सुखका बोध होता है। उस समय परिणाम सामने नहीं होता; परन्तु परम्परासे चली आयी हुई परिणामकी एक कल्पना मनमें होती है जो पापकर्मका सम्पादन करनेके बाद उसे धिक्कारती और डराती है; परंतु पाप करते–करते वह कल्पना भी मिट जाती है। और पापमें ही गौरव–बुद्धि हो जाती है। फिर उसकी बुद्धि सहज ही पुण्यको पाप और पापको पुण्य देखती है। मनुष्यकी यह स्थिति बहुत ही निराशजनक होती है।

इसलिये निरन्तर पापियोंके सङ्गसे बचना और साधकोंके सङ्गमें रचना–पचना चाहिये। बुद्धिके विपरीत निर्णयसे सम्भव है एक बार इसमें प्रत्यक्ष हानि दिखलायी दें; परन्तु यह निश्चय है कि पापात्माओं के सङ्गका परिणाम दु:ख और साधुओंके सङ्गका परिणाम सुख अनिवार्य है। साधु–सङ्गका महत्त्व समझनेके बाद बननेवाला साधु–सङ्ग तो इतना विलक्षण होता है कि उससे दु:ख–बीजका सर्वथा नाश और सातत्य–आत्यन्तिक सुखकी सहज प्राप्ति हो जाती है।

धर्माचरणका फल कभी बुरा नहीं होता

ईश्वरकी सेवा के लिये धर्मके अनुकूल कार्य करते रहो। यह मत देखो कि उसका अभ–ओाी दिखायी देनेवाला फल अनुकूल है या प्रतिकूल। यह सदा निश्चय रखो कि ईश्वरप्रीत्यर्थ किये जानेवाले धर्माचरणका आखिरी फल कभी बुरा नहीं हो सकता।

सम्भव है, किसीको परोपकार करनेके बाद ही किसीके द्वारा आघ्यात लगे, दूसरोंकी सेवा करनेमें अपमान मिले या किसीको बचानेमें प्राणोंपर आ बने, पर यह निश्चय रखो कि ये परिणाम तुम्हारे वर्तमान सत्सकर्मके नहीं हैं। किसी प्रारब्धका फल मिला है और संयोगसे मिला उसी समय है, जिस समय तुम सत्कर्म कर रहे हो। इसीसे तुम्हारी यह ध्‍ ाारणा हो सकती है कि यह फल मेरे वर्तमान सत्कर्मका है, पर यह तुम्हारी भ्रान्त धारण है।

– – –

यह भी निश्चय करो कि ईश्वर सदा ही सत्कर्ममें सहायक होता है, सम्भव है कि कभी–कभी तुम्हें सत्कर्मके पथपर

दृढ़ करनेके लिये तुम्हारे सामने ईश्वर विघ्नोंको भेजें, पर तुम्हें चाहिये कि विघ्नोंको तुम्हारे उत्साह-वर्धनके लिये भेजा हुआ समझकर उनसे डरो मत। यदि कभी वे ऐसे प्रबल हों कि तुम्हें स्थूल शरीरसे उनके सामने झुकना पड़े तो झुक जाओ; परंतु मनसे कभी मत झुको। सत्कर्ममें मनका प्रवाह अबाध बहने दो और यह निश्चय रखो कि ईश्वर तुम्हारी सेवा स्वीकार कर रहा है।

– – –

ईश्वरसे बढ़कर न तो तुम्हारा कोई अत्यन्त निकट आत्मीय है और न कोई सहायक ही है। जिस समय सारी सहायताओंका मार्ग सर्वथा बंद हो जाता है, किसी आत्मीय का मनसे भी दर्शन नहीं होता, उस समय विश्वासी भक्तको यह प्रत्यक्ष अनुभव होता है कि ईश्वर मेरा परम आत्मीय है और एकमात्र सहायका है। जहाँ कोई नहीं पहुंच सकता, किसीकी शक्ति सहायक नहीं होती, वहाँ ईश्वरकी कृपा अनाया पहुँचती है और सहायता करती है।

– – –

विपत्तिमें घबराकर ईश्वरकी महती कृपाका अपमान र करो। निश्चय रखो, विपत्तिहारी भगवान् ही विपत्तिके रूपमें तुम्हारी असली विपत्तिका हरण करने और तुम्हें इस विपत्तिसे यथार्थत: बचनेका साधन बताने आये हैं। यदि तुम्हारा विश्वास होगा तो तुम्हें यह बात प्रत्यक्ष दिखलायी देगी।

बहुत-सी विपत्तियाँ तो ऐसी होती हैं, जो अत्यन्त कड़वी दवा या लम्बे आपरेशनकी भाँति देखनेमें बड़ी भयावनी प्रतीत होती हैं, पर उनको परिणाम दवा या आपरेशनसे रोगनाशकी भाँति कल्याणमयी ही होता है; मनुष्य इन औषधारूप साधनोंको ही विपत्ति मानकर कभी-कभी भगवान्के प्रति नाराज-सा होने लगता है। यह उसकी भूल है। उसे समझना चाहिये कि माकी मारमें भी प्यार भरा रहता है।

मा चाहे कभी भूल भी कर जाय, या क्रोध-विषाद आदिके आवेशमें असलमें बुरा करके पछताये भी, परंतु ज्ञानस्वरूप परम प्रेमी ईश्वरसे न तो भूल ही हो सकती है और न किसी आवेशमें किसीका अकल्याण ही सम्भव है।

– – –

निश्चय करो—ईश्वर जो कुछ करते हैं, सब कल्याणकर ही है। कल्याणमय ईश्वरमें अकल्याण असम्भव है।

भगवान् सदा तुम्हारे साथ हैं

विश्वास करो—भगवान् सदा तुम्हारे साथ हैं। कहीं भी किसी भी समय वे तुम्हें अकेला नहीं छोड़ते। घरमें, वनमें, दिनमें, रातमें, जाग्रत्-स्वप्नमें—सदा ही वे तुम्हारे साथ रहते हैं। तुम विश्वास करके स्वयं इस बातका अनुभव कर सकते हो और ऐसा अनुभव होते ही तुम निश्चिन्त और निर्भय हो जाओगे।

विश्वास करो—भगवान् सदा ही अपना अभयकारी और वरद हस्त तुम्हारे सिरपर रखे हुए हैं। तुम विश्वास नहीं करते, इसीसे तुम्हें उसका अनुभव नहीं होता।

– – –

विश्वास करो—जिसको तुम अमङ्गल या अशुभ समझते हो, जिसको तुम अप्रिय या अनिष्ट समझते हो, जिसको तुम अवाञ्छनीय या अनादरणीय समझते हो और जिसको तुम अत्यन्त दु:खदायी या यन्त्रणामय समझते हो, उसमें भी

भगवान्‌का स्वाभाविक सहज सौहार्द ही काम करता है। भगवान्‌के सहज सौहार्दपर विश्वास न होनेके कारण ही तुम हर समय और हर जगह उनकी कृपाका तथा प्रेमका और उनके सुहृद्-स्वरूप का दर्शन नहीं कर पाते और इसीलिये तुम घबराकर अपने-आपको और भी दु:ख-सागरमें ढकेल देते हो।

– – –

विश्वास करो—भगवान् कृपामय हैं, प्रेममय हैं। मूर्तिमान् कृपा और मूर्तिमान् प्रेम ही हैं। उनसे जो कुछ तुम्हें मिलता है वह सचमुच कृपा और प्रेम ही मिलता है। अमृतके सरोवर में अमृतके अतिरिक्त और क्या मिलेगा ?

– – –

विश्वास करो—जैसे चीनके बने हुए सिंह, सर्प, भालू आदि क्रूर जानवर भी असलमें केवल चीनी-ही-चीनी हैं, भले ही उनकी आकृति क्रर जानवरोंकी-सी हो, वैसे ही भगवान्‌के विधानसे जो कुछ भी तुम्हारे लिये बनता है, वह केवल भगवान्‌की कृपा और प्रेम ही है, चाहे उसका आकार-प्रकार भयानक ही हो।

– – –

विश्वास करो— वे लोग परम धन्य हैं, जो सदा-सर्वदा-सर्वत्र समस्त कार्योंमें और समस्त फलोंमें भगवान्‌की परम अहैतुकी कृपा और प्रेमको देख-देखकर नित्य निर्भय और निश्चिन्त तो रहते ही हैं, भगवान्‌की अहैतुकी कृपा और प्रीतिके दर्शन करके पद-पदपर परम आनन्द और विलक्षण शान्तिका अनुभव करते हैं। किसी भी स्थितिमें न तो उन्हें किसी प्रकारका मानसिक क्लेश होता है और न वे अपनी आनन्दकी स्थितिसे विचलित ही होते हैं। इसीलिये न उन्हें कोई भी अन्य सुा अपनी ओर खींच सकता है और न कोई भी भारी-से-भारी दु:ख ही उन्हें उद्विग्न कर सकता है।

– – –

विश्वास करो—जो शास्त्र और संतोंकी वाणीपर श्रद्धा-विश्वास करके भगवान्‌की अहैतुकी कृपा तथा प्रीतिके अनुभव करने का सतत प्रयत्न करके हैं, वे कभी-न-कभी भगवान्‌की सहज कृपा तथा प्रीति के दर्शन करके कृतार्थ ही हो जायँगे।

– – –

विश्वास करो—जो सच्चे हृदयसे भगवान्‌की ओर चलता है और सतत आगे बढ़ना चाहता है, शक्तिभर जी नहीं चुराता बल्कि पद-पदपर उल्लास तथा उत्साहके साथ भगवान्‌की कृपाशक्तिपर विश्वास करके अपने सामर्थ्यके अनुसार चलनेवाला प्रयत्न करता है, भगवान् उसे शक्ति देते हैं, बुद्धि देते हैं, प्रकाश देते हैं और अपने वरद हस्तका सहारा देकर अपने नित्य चिन्मय परमधाममें ले जाते हैं। उसका जीव-जीवन सदाके लिये सफल हो जाता है।

कल्याणमय निश्चय

निश्चय करो—मैं सदा-सर्वदा सुखी, सफल, शान्त और स्वस्थ हूँ; क्योंकि मेरा नित्य निवास भगवान्‌में हैं। मैं उन्हींमें रहता हूँ और जो कुछ करता हूँ, उन्हींकी प्रेरणासे करता हूँ।

– – –

निश्चय करो—मैं नित्य निर्भय और निश्चिन्त हूँ, क्योंकि मैं भगवान्‌को सदा अपने साथ देखता हूँ और वे ही मेरे पथ-प्रदर्शक हैं।

– – –

निश्चय करो—मैं जो कुछ भी करूँगा और जो कुछ भी उसका फल होगा, सब भगवान्‌के संकल्पसे और भगवान्‌के विधानसे होगा। भगवान् मङ्गलमय हैं अतएव वह सब भी मङ्गलमय ही होगा।

– – –

निश्चय करो—मैं भगवान् को ही सबसे बढ़कर परम महत्त्वकी वस्तु मानता-जानता हूँ। संसारकी अन्य कोई भी वस्तु मेरे मनको अपनी ओर नहीं खींच सकती। कोई भी महत्त्वपूर्ण स्थिति मेरे चित्तको नहीं लुभा सकती और कोई भी भयानक और बीभत्स स्थिति मुझे डरा नहीं सकती तथा अपने निश्चयसे डिगा नहीं सकती।

– – –

निश्चय करो—मैं जब सबमें एक भगवान्‌को ही देख रहा हूँ, तब मेरे लिये सभी कुछ परम सुन्दर हैं और सभी मेरे परम आत्मीय हैं। मैं किसीको कभी पराया नहीं समझता और इसलिये मनमें कभी किसीसे भी डरता नहीं।

– – –

निश्चय करो—मैं सबको सुखी देखना चाहता हूँ, क्योंकि सभी मेरे प्रियतम प्रभुके स्वरूप हैं।

– – –

निश्चय करो—मैं कभी किसीको बुरी जबान नहीं कह सकता, कभी किसीका अमङ्गल नहीं चाह सकता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह तो अपने प्रभुको ही बुरा कहना और उन्हींका अमङ्गल चाहना होगा।

– – –

निश्चय करो—मैं तन-मन-वचनसे सदा सबको सुखी बनानेका प्रयत्न करूँगा। इसीके बीज जहाँ-तहाँ बोऊँगा और अपने भगवान्‌से प्रार्थना करूँगा कि ये बीज शीघ्र अंकुरित हों, फूलें और फलें जिससे सारा जगत्—मेरे प्रभुके सभी स्वरूप सदा-सर्वदा सुखका ही अनुभव करें।

– – –

निश्चय करो—मैं सदा सत्यपर अटल रहूँगा। किसी कालमें भी किसी भी हेतु से सत्यसे नहीं डिगूँगा, क्योंकि सत्यके परम आश्रय और सदा सत्यस्वरूप प्रभु सत्यसे ही प्रसन्न रहते हैं। असत्यसे प्रभुकी अप्रसन्नता होती है और इसीलिये भ्रमसे कभी-कभी असत्य देखनेमें विपद्‌विदारी या सुखकारी प्रतीत होनेपर भी वस्तुतः महान् विपत्तिका पूर्वरूप और सुखका संहारक ही होता है।

– – –

निश्चय करो—मैं सदा-सर्वदा अपने प्रभुका स्मरण करता रहूँगा। जो मेरा आश्रय है, जो मेरा आधार है, जो मेरा आत्मा है, जो मेरा जीवन है, जो मेरा प्राण है और जो मेरा सर्वस्व है, जिसके बिना मेरे 'मैं' का ही कोई अस्तित्व नहीं, उसे मैं कभी कैसे भूलूँगा? उसे बिसारकर कैसे रहूँगा।

– – –

निश्चय करो—मैं सदा अपने प्रभुका हूँ और प्रभु सदा मेरे हैं। हमारा यह सम्बन्ध कभी टूट ही नहीं सकता। मैं प्रभुसे विलग हो जाऊँ तो मैं न रहूँ और प्रभु मुझको छोड़ दें तो प्रभु न रहें।

भगवान् ज्ञानमय, प्रेममय और आनन्दमय हैं।

भगवान् ज्ञानमय, प्रेममय और आनन्दमय हैं। तुम उनके शरण होकर उनकी ओर चलने लगोगे तो तुम्हारे अंदर भी भगवान्‌के ये दिव्य गुण प्रकट होने लगेंगे। तुम भी ज्ञान, प्रेम और आनन्द को पाकर कृतार्थ हो जाओगे।

– – –

निश्चय करो—तुम जितना-जितना ही भगवान्‌की ओर आगे बढ़ोगे, उतना-उतना ही तुम्हें ज्ञान का प्रकाश, प्रेमका अमृत और आनन्द का प्रवाह अधिक-से-अधिक मिलने लगेगा।

– – –

निश्चय करो—जगत्‌में लोगों को दिन-रात भटकते, वैर-विरोध करते हैं रोते-कलपते देखते हो, इसका यही कारण है कि वे ज्ञानसे रहित आज्ञानके अन्धकारमें, प्रेमसे शून्य द्वेष-द्रोहके विषकूपमें और आनन्दसे विरहित विषाद-शोकके प्रवाहमें पड़े हैं।

– – –

जीवमात्र सच्चिदानन्दमय भगवान्‌के सतनान अंश हैं। उनमें भी भगवान्‌का ज्ञान, प्रेम और आनन्द है; पर वह छिपा है और उसके स्थानपर विरोधी भावोंका प्रकाश हो रहा है। इसीसे जीव दु:खी है। यद्यपि इन विरोधी भावोंकी आड़में भी ज्ञान, प्रेम और आनन्द ही भरे हैं।

– – –

मनुष्य तो भगवान्‌की परम प्रिय सृष्टि हे। अनुकूल सङ्ग मिल जाय और सच्चे हृदयसे कुछ साधनका प्रयत्न हो तो थोड़े ही आयास से उसके अंदर छिपे हुए ज्ञान, प्रेम और आनन्दका उदय हो सकता है; क्योंकि वे उसमें सदा ही रहते हैं।

– – –

मनुष्यको चाहिये कि वह प्रतिक्षण इस बातका निश्चय करता रहे कि मैं भगवान्‌का सनातन अंश हूँ। उनसे अभिन्न हूँ। उनके दिव्य गुणोंका भण्डार मुझमें भरा है, बस, वह भण्डार अब खुल गया है। मैं ज्ञान, प्रेम और आनन्दको पा गया हूँ। उनसे ओत-प्रोत हूँ, उन्हींमें डूब रहा हूँ। अब मुझपर कभी अन्धकारका अधिकार नहीं हो सकेगा। अब मेरे मनमें कभी द्वेष-द्रोह, ईर्ष्या-वैर, हिंसा-प्रतिहिंसाके भाव उत्पन्न नहीं होंगे। अब मैं कभी शोक-विषाद और दु:ख-दैन्यके दावानलसे नहीं जलूँगा।

उसे निश्चयकरना चाहिये, मैं सच्चिदानन्दघन भगवान्‌का हूँ। किसी पाप-ताप या दु:ख-दैन्य की शक्ति नहीं, जो मेरे समीप फटक सके। मैं शुद्ध हूँ, चेतन हूँ, ज्ञान, प्रेम और आनन्दरूप हूँ। सदा सुखी, अपार सुखी और नित्य सुखी हूँ—सुखस्वरूप ही हूँ।

जगत्‌की कोई भी घटना मुझे अपनी स्थितिसे हिला नहीं सकती। जैसे अनन्त सागरके वक्ष:स्थलपर अनन्द लहरें उठती हैं और पुन: उसीमें समा जाती हैं, उसी प्रकार जगत्‌के उत्थान-पतनकी तरङ्गें सब मेरे परम आश्रम-मेरे अंशी भगवान् में ही उठती-समाती हैं। उन सभमें मेरे भगवान् भरे हैं। वे सभी उनकी दिव्य लीलाकी तरङ्गे हैं। उन्हें देख-देखकर मुझे बड़ा ही उल्लास होता है। लीलामयकी लीला-लहरियाँ सभी आनन्दमयी हैं।

मेरे प्रभु ज्ञानमय हैं, प्रेममय है, और आनन्दमय हैं—अतएव उनकी लीला भी ज्ञान, प्रेम और आनन्दसे परिपूर्ण हैं, चाहे उनका बाहरी रूप कैसा ही हो।

– – –

यह निश्चय करना चाहिये कि मैं भगवान्‌को जान गया—पहचान गया हूँ। वे चाहे कैसे भी भयानक बीभत्स और रुद्ररूपमें प्रकट हों, कैसा ही विकट वेष धारण करके आवें, मैं उनसे कभी डरूँगा नहीं, पर उनके चरणोंमें गिर पहूँगा और उनकी लीलाको देख-देखकर प्रफुल्लित होऊँगा, हँसूँगा!

भगवान्‌की सन्निधि

विश्वास करो—भगवान् सदा तुम्हारे साथ हैं—सर्वथा सन्निकट हैं। कभी किसी भी स्थितिमें वे तुम्हें अकेला नहीं छोड़ सकते। तुम इस बात पर विश्वास न करते, इसीसे डरते और अपनेको असहाय मानते हो। भगवान्‌को साथ मान लो। वे सर्वा है, सर्वशक्तिमान् हैं और तुम्हारे सुहृद् हैं। उनको साथ मानते ही तुम सर्वथा निर्भय और सुरक्षित हो जाओगे।

विश्वास करो—भगवान्‌की सन्निधिमें अपनेको निर्भय और सुरक्षित जान लेनेपर कोई भी—कितनी भी बड़ी बाहरी विपत्ति—जो भगवान्‌की किसी गूढ़ अभिसन्धिसे तुम्हारे मङ्गलके लिये ही आती है—तुम्हारे मनमें तनिक भी भय और असहायताकी भावना उत्पन्न न कर सकेगी।

विश्वास करो—भगवान्‌की सन्निधि तुम्हारे मनकी सारी दुर्बलताओं—दुर्भावनाओं को नष्ट कर देगी। फिर तुमसे ऐसा कोई अनुचित कार्य—पाप होगा ही नहीं, जिसका फल दु:ख, संताप हो। फिर भी यदि कभी किसी रूपमें दु:ख या विपत्तिके दर्शन होंगे तो तुम्हें उसमें भगवान्‌के मङ्गलमय संकेतका ही साक्षात्मकार होगा।

– – –

विश्वास करो—जो मनुष्य अपनेको भगवान्‌की सन्निधिमें जानकर जीवन-यापन करता है, वह न तो कभी कोई बुरा कर्म ही कर सकता है और न (बुरा कर्म न करनेपर भी) आयी हुई किसी विपत्ति, हानि, अकीर्ति या तिरस्कृतिसे ही उद्विग्न या विषादग्रस्त होता है। वह प्रत्येक स्थितिमें मङ्गलमय भगवान्‌की मङ्गल मूर्तिका स्पर्श पाकर अपनेको सदा भगवत्कृपाके सुधासिन्धुमें गोते लगाते पाता है।

– – –

विश्वास करो—तुम्हें जो कुछ प्राप्त है, प्राप्त हो रहा है और होगा, सब तुम्हारे परम सुहृद, नित्यसङ्गी भगवान्‌की दृष्टिमें है और वस्तुत: उन्हींका मङ्गल-विधान है। यदि तुम उसमें घबराते या शोक-विषाद करते हो तो मानना पड़ेगा कि परम मङ्गलमय भगवान्‌के मङ्गल-विधानमें तुम्हारी श्रद्धा नहीं है।

– – –

विश्वास करो—भगवान् जिसमें तुम्हारा कल्याण समझते हैं और उनके विधानसे जो कुछ (जीवन-मृत्यु, मान-अपमान, लाभ-हानि, सुख-दु:ख, सम्पत्ति-विपत्ति) तुम्हें मिलता है, उसीमें तुम्हारा यथार्थ कल्याण है। तुम जो चाहते हो और जिसमें अपना कल्याण समझते हो, सम्भव है वह तुम्हारे लिये अकल्याणकारी हो। अतएव अपनेको तथा अपने भविष्यको सर्वथा मङ्गलमय भगवान्‌पर छोड़कर निश्चिन्त हो जाओ। जहाँतक सात्त्विक बुद्धि काम दें, भगवान्‌की पूजाके भावसे सामने आये हुए कर्तव्यका पालन करते रहो। उसमें प्रमाद मत करो। परंतु यह कभी मत सोचो कि 'यों होता तो लाभ था और यों नहीं हुआ तो बड़ी हानि हो गयी।' याद रखो—अन्तमें जो कुछ होता है, वही यथार्थ होता है और उसीमें तुम्हारा लाभ है।

– – –

विश्वास करो—भगवान् सदा मङ्गल ही करते हैं, यह दूसरीबात है कि उनके करनेका तरीका तुम्हें रुचिकर न हो। परंतु यदि तुम विश्वास कर लो तो फिर उनका तरीका भी रुचिकर हो जायगा और पहले जो अत्यन्त प्रतिकूल तथा भयानक दीखता था, वही अनुकूल तथा रमणीय दीखने लगेगा। फिर मृत्युमें भी तुम उनका मङ्गल दर्शन पाकर मुग्ध हो जाओगे।

कल्याणकारी विश्वास

विश्वास करो कि मैं भगवान्‌की कृपाशक्तिपर विश्वास करके जिस साधन-मार्ग पर चल रहा हूँ, मेरे लिये वही प्रशस्त है और मैं उसमें निश्चय ही सफलता प्राप्त करूँगा। ऐसा कभी मत सोचो कि साधन ठीक है या नहीं, अथवा सफलता मिलेगी या नहीं। संदेह मार्गमें रोक देता है और विश्वास लक्ष्यपर पहुँचा देता है।

– – –

विश्वास करो और निश्चय करो कि मैं इस बार मानव-शरीर धारण करके जगत्‌में आया ही इसलिये हूँकि अबकी बार मैं शरीरके बन्धनमेंसे जो अज्ञानजनित है, छूटकर ही रहूँगा! अज्ञानके कारण ही मैं अनादिकालसे अबतक भटकता रहा। अब नहीं भटकूँगा, नहीं भटकूँगा।

– – –

विश्वास करो कि अज्ञानका सर्वथा समूल नाश होना और भगवत्तत्त्वका साक्षात्कार होना एक ही बात है। यह भगवत्तत्त्व-साक्षात्कार ही मानव-जीवनका चरम एवं परम लक्ष्य है और यह निश्चय करो कि मैं उस भगवत्तत्त्व-साक्षात्कारका सर्वथा अधिकारी होकर ही आया हूँ तथा उसे प्राप्त करके ही रहूँगा।

विश्वास करो कि मेरे इस अधिकारका एकमात्र बल है भगवान्‌की कृपा और वह भगवान्‌की कृपा मुझे अनन्त और असीमरूपमें प्राप्त है। मैं उस कृपा समुद्रमें निमग्न हूँ, इसलिये अब मुझे यह भी सोचना नहीं है कि भगवतत्वका साक्षात्कार भी मुझे करना है; क्योंकि भगवत्कृपाके अथाह समुद्रमें निमग्न हो जानेके बाद न तो कोई सोच-विचार होता है और न उसकी आवश्यकता ही रहती है।

विश्वास करो कि भगवान्‌की कृपाशक्ति समस्त भागवती शक्तियोंकी स्वामिनी है। सारी शक्तियाँ इन्हींकी अनुगता होकर कार्य करती हैं। यह महती कृपाशक्ति जिसको अपना लेती है, वह भगवत्तत्त्व-साक्षात्कार ही क्या भगवान्‌को-समग्ररूपसे-सब प्रकारसे पाकर निहाल हो जाता है।

– – –

विश्वास करो—जहाँतक अपने पुरुषार्थ तथा अपनी पृथक् क्षुद्र शक्तिपर आस्था है, तबतक एक तुच्छ अहंकारका तुमपर आधिपत्य है।

ऐसे अहंकारके रहते तुम्हारे लिये वस्तुत: भगवान्‌की कृपाशक्तिका कार्य रुका रहता है। कृपाशक्ति चाहती है—पूर्ण निर्भरता, पूर्ण प्रपत्ति और पूर्ण आत्मनिवेदन। अपनेको अपनी सारी शक्तियोंसहित सारी शक्तियोंके उद्‌गम और आकर-स्वरूप भगवान्‌के समर्पण कर दो। अपने समस्त अहंकारको जला दो, गलाकर बहा दो और सर्वतोभावसे कृपामाताका आश्रय ग्रहण करो। फिर देखोगे, कितनी जल्दी और कितनी सुकरता एवं सुन्दरतासे तुम्हारी यह आखिरी जीवनयात्रा सफल होती है।

– – –

विश्वास करो—भगवत्कृपा तुम्हें अपनाने, तुमपर बरसने, तुम्हें अपनी महान् मधुर और शीतल छायाका आश्रय देनेके लिये सदा-सर्वदा तैयार है तथा वह यह भी नहीं देखती कि तुम्हारा पूर्व इतिहास, अबतकका आचरण कैसा है। तुम पुण्यात्मा हो या पापी, तुम सात्त्विक हो या तामस, तुम ब्राह्मण हो या चाण्डाल, तुम देवता हो या दानव, तुम हिंदू हो या केवल देखती है तुम्हारे अंदरका भाव। यदि तुम सचमुच अन्य सारे साधनोंसे हताश-निराश होकरऔर एक विश्वास-भरोसेके साथ उसकी ओर निहार रहे होंगे तो वह उसी क्षण तुम्हें अपना लेगी, तुमपर चारों ओरसे बरस पड़ेगी और तुम्हें अपनी सुखद छायाका आश्रय देकर निश्चिन्त, निर्भय और निष्काम बना देगी। तुम्हारी कोई भी कामना अपूर्ण नहीं रहेगी उस समय, परंतु तुम्हें कामना और उसकी पूर्तिका भी पता नहीं रहेगा। तुम उस समय उस कृपाशक्तिकी पवित्र लहरोंके साथ घुल-मिलकर स्वयं पवित्र-कृतार्थरूप हो जाओगे।

– – –

विश्वास करो—भगवान्‌की कृपा तुमपर है ही। वह सदा सभीपर है सभीको प्राप्त है। तुम विश्वास नहीं करते—मानते नहीं, इसीसे अन्य साधनोंको सहारा खोजते हो और इसीसे उस नित्यप्राप्त जन्मसिद्ध अपने परम धनसे वंचित हो रहे हो!

दूसरोंके हितमें ही अपना हित है

विश्वास करो—जो मनुष्य दूसरेका बुरा करके अपना भला करना चाहता है, वह बहुत बड़ी भूलमें है। अपनी सच्ची भलाई—अपना यथार्थ हित उसीमें है, जिसमें दूसरोंकी भलाई-दूसरोंका हित भरा है। इसलिये प्रत्येक कर्म करनेसे पहले यह देख लो कि इस कर्मके परिणाममें किसीकी बुराई तो नहीं होगी—साथ ही यह भी देख लो, इस कर्मसे दूसरोंकी भलाई होगी या नहीं। यदि भलाई नहीं होती तो यह समझकर कि इसमें मेरी भी भलाई नहीं होगी, उस कर्मसे हाथ हटा लो।

– – –

विश्वास करो—सारा चराचर जगत् भगवान्‌का ही स्वरूप है अथवा उसमें एकमात्र भगवान् ही व्याप्त है। और यह समझकर सदा सबकी अपनी शक्तिभर यथायोग्य सेवा करो। सेवा वही है, जो सेव्यके लिये सुखदायक और हितकर हो।

– – –

विश्वास करो—जब सब कुछ भगवान् हैं या सबमें भगवान् हैं तब पराया कौन है? सभी तो आत्माके भी आत्मा अपने प्रभुके स्वरूप हैं—सभी तो अपने सेव्य हैं, फिर किससे और कैसे वैर-विरोध, हिंसा-द्वेष या छल-कपट करें। किसीका भी अनिष्ट करनेकी कल्पना ही कैसे हो?

— — —

विश्वास करो—सबमें भगवान्‌को देखनेवाले पुरुषके हृदयमें रहनेवाले काम-क्रोध, लोभ-मोह, मद-मत्सर, वैर-हिंसा, अहंकार-अभिमान आदि शत्रु अपने-आप ही मर जाते हैं। उसका हृदय स्वयमेव ही सच्चे सुहृद्‌का काम करनेवाले पवित्र त्याग-क्षमा, संतोष, विवेक, मैत्री-मुदिता, प्रेम-क्षमा और विनम्रता-दीनता आदि विशुद्ध दैवी भावोंसे भर जाता है।

— — —

विश्वास करो—दैवी भावोंसे भरे हुए हृदयमें ही भगवान् प्रकट होते हैं, वही उनकी मधुर-मनोहर देवदुर्लभ झाँकी होती है। जबतक हृदयमें दुर्गुण और दुर्विचार भरे हैं, तबतक वहाँ भगवान्‌का प्रकट होना सम्भव नहीं।

— — —

विश्वास करो—तुम मानव-योनिमें आये हो मायाके बन्धनसे छूटकर भगवान्‌को प्राप्त करनेके लिये, देवत्वमें ओत-प्रोत होकर परम देव पुरुषोत्तमका पावन प्रेम और नित्य अपरोक्ष सान्निध्य प्राप्त करनेके लिये। इसके बदले यदि तुम काम-क्रोधादि शत्रुओंके-लुटेरोंके वशमें होकर मानव-जीवनके महान् उद्देश्यको भूल गये-विषय-सेवनमें लग गये और आसक्तिवश नये-नये पाप कमाने लगे तो देवत्व तो दूर रहा, मिला हुआ मानवत्व भी छिन जायगा और फिर तुम्हें बार-बार आसुरी योनियोंमें ही नहीं, उससे भी अधम गतियोंमें जाना पड़ेगा। क्या मानव-जीवनका यह जघन्य फल तुम्हें स्वीकार है? यदि नहीं तो चेता, सावधान हो जाओ और अपने उद्देश्यकी पूर्तिमें प्राणपणसे लग जाओ। याद रखो—समय बहुत थोड़ा है, प्रलोभन बहुत हैं और संसारमें फँसाये रखनेवाले तथा जीवनके उद्देश्यको भुलाये रखनेवाली प्रतिकूल परिस्थितियोंका पार नहीं है। जगत्‌की सारी परिस्थितियोंकी समाप्तिके बाद उद्देश्य-साधनमें लगोगे—इस दुशराशाको छोड़ दो। जहाँ हो, जिन परिस्थितिमें हो, वहाँसे उसीमें कुछ भी किसीकी परवा न करके अपने उद्देश्यकी पूर्तिमें लग जाओ। परिस्थिति अपने-आप बदल जायगी। तुम यह निश्चय कर लो कि तुम्हारा सबसे पहला और प्रधान कर्तव्य एकमात्र यही है।

— — —

विश्वास करो—तुम्हारा निश्चय यदि एक और दृढ़ होगा, तुम्हारी लालसा यदि अनन्य होगी और तुम्हारा विश्वास यदि पूर्ण होगा तो जीवनके बचे हुए अल्प-से-अल्प समयमें ही तुम सफल हो जाओगे। वर्षोंसे बंद अँधेरे घरमें सूर्यका प्रकाश आते ही अन्धकार भाग जाता है। वह यह नहीं कहता कि मुझे इतना समय रहते हो गया है तो कुछ समय और रहूँगा। बस, प्रकाश आया कि अन्धकार मरा, इतना ही समय चाहिये। इसी प्रकार निश्चय, लालसा और विश्वासकी अनन्यता तथा दृढ़ता होनेपर तत्काल भगवान्‌का प्रकाश प्रकट हो जाता है और अनादिकालका अज्ञानन्धकार उसी क्षण नष्ट हो जाता हे। लग जावओ पूरे भरोसेके साथ।

सच्चा आनन्द

याद रखो—आनन्द, सच्चा आनन्द तुम्हारे अंदर है और वह नित्य है। तुम बाहरी वस्तुओंमें–धनमें, जनमें, मानमें, प्रतिष्ठामें, भोगोंमें, आराममें, निलासितामें और परिवारमें आनन्द खोजते हो–यही तुम्हारा भ्रम है।

– – –

याद रखो—आनन्द किसी भी सांसारिक स्थिति–विशेषमें नहीं है। तुम जो समझते हो कि 'मेरी अमुक परिस्थिति हो जायगी, इतना धन हो जायका, अमुक अधिकार मिल जायगा, पुत्र हो जायगा, जगत्‌में यश फैल जायगा और लोग मेरा सम्मान करने लगेंगे तब मैं सुखी हो जाऊँगा, यह तुम्हारा भ्रम हैं।

– – –

याद रखो—तुम्हारा वर्तमान दु:खका या आनन्दके अभावका कारण कोई परिस्थिति नहीं है, इसका प्रधान कारण है, नित्य सत्य आन्तरिक आनन्दको न जानना। आनन्दमय भगवान्‌के नित्य सान्निध्यका अनुभव न करना।

– – –

याद रखो—जब तुम्हारी वृत्ति अन्तर्मुखी हो जायगी, जब तुम नित्य–निरन्तर सच्चिदानन्दमय के सान्निध्यका सर्वदा अनुभव करने लगोगे, जब उन्हीं आनन्दमयके साथ नित्य संयुक्त हो जाओगे, तब बाहरी कोई भी परिस्थिति तुम्हारे आनन्दको नहीं छीन सकेगी। अपमान, अकीर्ति, दरिद्रता, मित्रहीनता आदि किसी भी स्थितिमें तुम्हारे आनन्दका अभाव नहीं होगा।

– – –

याद रखो—तुम जो अपनेको दु:खी मान रहे हो इसीसे दु:खी हो। दु:खी माननेका कारण है अभावका बोध; अभावमें प्रतिकूलताकी अनुभूति होती है और प्रतिकूलता ही दु:खी है। संसारकी परिस्थिति तो कभी ऐसी होती ही नहीं कि जो सदा और सर्वदा सके अनुकूल हो। प्रत्येक परिस्थितिमें मङ्गलमय श्रीभगवान् स्वयं विद्यमान हैं, प्रत्येक परिस्थिति मङ्गलमय भगवान्‌का मङ्गल–विधान है और प्रत्येक परिस्थिति वस्तुत: लीलामय भगवान्‌की लीलाका ही एक अङ्ग है। यह विश्वास करके यदि तुम परिस्थितिके बाहरी रूपको न देखकर परिस्थितिके परदेमें छिपे हुए श्रीभगवान्‌के बाहरी रूपको न देखकर परिस्थितिके परदेमें छिपे हुए श्रीभगवान्‌को, श्रीभगवान्‌के मङ्गल–विधानको या श्रीभगवान्‌की लीलाको देखने लगो, उनका मधुर स्पर्श पा सको तो सभी परिस्थितियाँ तुम्हारे लिये अनुकूल हो जायँगी; क्योंकि सभीमें भगवान्‌की अनुभूति होगी—अभाव कहीं रहेगा ही नहीं; और जब अभाव नहीं होगा, तब दु:ख भी नहीं होगा। वस्तुत: दु:ख नहीं होगा, इतना ही नहीं–भगवान्‌की सान्निधिका अनुभव परम अनुकूल होनेसे तथा स्वयं परमानन्दमय होनेसे वह तुम्हारे लिये परमानन्दका कारण होगा। तुम उस समय ऐसे विलक्षण आनन्दका अनुभव करोगे कि फिर जागतिक किसी भी अभावकी स्मृति ही तुमको नहीं होगी!

– – –

याद रखो—भाव–अभाव, अनुकूला–प्रतिकूलता जो कुछ भी है, सभी लीलामय श्रीभगवान्‌के स्वाँग हैं, जिनको तुम्हारे मङ्गलके लिये ही भगवान्‌ने धारण किया है। उन भगवान्‌को जब पहचान लोगे, तब फिर चाहे वे किसी भी सुन्दर या भयानक स्वाँगमें रहें तुमको न भय होगा, न दु:ख। स्वाँग तुम्हारे लिये मनोरंजनकी सामग्री होगी और तुम उसे देख–देखकर पल–पलमें और पद–पदपर मुग्ध होते रहोगे। तुम्हारा दु:ख–स्त्रोत सदाके लिये सूख जायगा। तुम फिर स्वयं आनन्दके भण्डार बन जाओगे।

– – –

याद रखो—जो लोग आनन्दके लियें परिस्थितिकी अनुकूला खोज रहे हैं या अभावकी पूर्ति करके आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं, उनको कभी स्थिर नित्य आनन्दके दर्शन होंगे ही नहीं; क्योंकि उनका अभाव कभी मिटनेका ही नहीं है। संसारमें कहीं भी–किसीमें भी पूर्णता नहीं है। वे जो कुछ भी पायेंगे, उसीमें उन्हें अपूर्णता–अभावकी अनुभूति होगी और अभावकी अनुभूति ही प्रतिकूलता है। अतएव वे कभी सुखी हो ही नहीं सकेंगे।

– – –

याद रखो—सच्चा सुख या परम आनन्द चाहते हो सांसारिक अभाव या प्रतिकूलताका ही अभाव कर दो। भगवान् नित्य हैं, सत्य हैं, सर्वत्र, सर्वदा और सर्वथा हैं; उन्हींको देखो। उनका कहीं भी, कभी भी अभाव नहीं है। उनको सर्वत्र देखने लगोगे तब सांसारिक अभाव या प्रतिकूलता अभाव अपने–आप ही हो जायगा, क्योंकि भगवान्‌के भावमें ही–इनके होनेका भ्रम हो रहा है। ये जहाँ दीख रहे हैं; वहाँ वस्तुत: ये नहीं हैं, वहाँ भगवान् ही हैं। यदि तुम सर्वत्र व्याप्त सर्वरूपमें स्थित उन भगवान्‌को देख सकोगे तो तुम्हें उस नित्य सत्य आनन्दकी प्राप्ति सहज ही हो जायगी, जिसकी खोजमें तुम सदा–सर्वदा लगे रहते आये हो!

प्रेम

याद रखो — प्रेम सारी दैवी सम्पत्तियोंका मूल स्त्रोत है। जहाँप्रेम हैं, वहाँ त्याग, सद्‌भावना, सहिष्णुता, क्षमा, उदारता, वदान्यता, मैत्री, अहिंसा, सेवा, सरलता, उन्मुक्त हृदयता, निष्कामता, प्रसन्नता, सत्य, विश्वास, साहस और सौजन्य आदि सद्‌गुण अपने–आप आ जाते हैं। इसके विपरीत जहाँ स्वार्थ है, वहीं भय है और जहाँ भय है, वहाँ परिग्रह, दुर्भाव, असहिष्णुता, कामना, क्रोध, कृपणता, अनुदारता, द्वेष, वैर, कपट, दम्भ, विषाद, अविश्वास, घृणा, लोभ, प्रतारणा, कायरता और कुटिलता आदि नीच वृत्तियाँ अपने–आप उत्पन्न हो जाती है।

– – –

याद रखो—जहाँ दैवी सम्पत्ति है, वहाँ सहज सुख, उल्लास, आनन्द, आत्मीयता रहते हैं; और जहाँ आसुरी सम्पत्ति है वहाँ शोक, विषाद, दु:ख, परायापन रहते हैं।

– – –

याद रखो—प्रेम जितना शुद्ध होगा, उतना ही भगवदभिमुखी होगा और जहाँ भगवत्प्रेम होगा, वहाँ मनुष्यमें निर्भयता और निश्चिन्तता इतनी अधिक बढ़ जायगी कि वह कर्तव्यपालनमें, सत्यभाषणमें, दूसरोंका उपकार करनेमें, अपना सर्वस्व देकर भी सेवा करनेमें और जीवनकी महान् कठिनाइयों में जरा भी नहीं डरेगा। वह दृढ़प्रतिज्ञ, मनस्वी, तेजस्वी, साहसी और वीर होनेके साथ ही अत्यन्त विनम्र, आदर्श विनयी, मधुरभाषी समझकर करनेवाला और शान्तिप्रिय होगा। उससे किसीका अपकार तो होगा ही नहीं। वह सर्वथा नि:स्वार्थ, भगवद्विश्वासी, भगवत्कृपापर निर्भर करनेवाला और सदा आनन्दमें निमग्न रहनेवाला होगा।

याद रखो—भगवत्प्रेमी या तो सारे संसारमें भगवान्‌को देखता है या सारे संसारको भगवान्‌में देखता है इसलिये वह स्वाभाविक ही निर्भय, नमनशील, विश्वप्रेमी, विश्वसेवक और विशालहृदय होगा। उसका न तो कोई वैरी रहेगा और न उसकी किसी वस्तुविशेषमें आसक्ति होगी। वह नित्य भगवत्–कर्म–रत भक्तिरसाप्लुतहृय और भगवत्परायण होगा।

– – –

विश्वास करो—किसी भी भयमें इतनी शक्ति नहीं है जो भगवत्कृपाकी अपार शक्तिके सामने ठहर सके।

विश्वास करो—किसी भी पापमें इतनी शक्ति नहीं है, जो भगवद्‌-भक्तिके सामने टिक सके।

विश्वास करो—किसी भी तापमें इतनी शक्ति नहीं है, जो भगवत्‌-प्रेमकी शीतलाके सामने रह सके।

विश्वास करो—तुमपर भगवान्‌की अनन्त कृपा है, इसलिये भगवान्‌की भक्ति तुम्हारे हृदयमें लहरा रही है और भगवत्प्रेममें तुम डूबना ही चाहते हो। फिर भय, पाप-ताप कहाँ रहेंगे। उनको तो नष्ट हुए ही समझो। जबतक तुम्हें ताप-पाप तथा भय सताते हैं, तबतक तुमने सचमुच भगवत्कृपापर विश्वास ही नहीं किया। भगवान्‌ने स्वयं घोषणा की है—जो मुझमें विश्वास करता है, वह मेरी कृपासे सारी कठिनाइयोंसे तर जाता है।

विश्वास करो—तुम भगवान्‌के हो, भगवान्‌ तुम्हारे हैं। उनसे अधिक निकटस्थ आत्मीय तुम्हारा और कोई नहीं है। वे तुम्हारी जितनी और जहाँतक सँभाल करते हैं, उतनी और वहाँतक की तुम कल्पना भी नहीं कर सकते।

विश्वास करो—भगवान्‌ तुम्हारे दोषोंको तुरंत क्षमा कर देंगे और तुम्हें सदाके लिये अपना लेंगे। तुम एक बार उनकी सुहृदता और आत्मीयतापर पूर्ण विश्वास करके उन्हें मुक्तहृदयसे पुकार तो लो।

योगक्षेमा का भार भगवान्‌पर

विश्वास करो—भगवान्‌ शक्ति और ज्ञानके भण्डार हैं। वे तुम्हारे परम सुहृद्‌ हैं, परम प्रेमी है। वे सदा-सर्वदा तुम्हारा कल्याण करनेको प्रस्तुत है। जिस क्षण तुम्हारा भगवान्‌में सच्चा विश्वास हो जायगा, उसी क्षण तुम्हारी दुर्बलता दूर हो जायगी, तुम्हारा भय भाग जायगा और सारी प्रतिकूलताएँ तुम्हारे मनके अनुकूल हो जायँगी।

– – –

विश्वास करो—भगवान्‌के न्याय और सत्यमें विश्वास होते ही हृदयमें कोई डर नहीं रह जायगा। यह अनुभव होगा कि मैं सदा-सर्वदा उस अचिन्त्य महाशक्तिकी छत्रछायामें हूँ। भगवान्‌की कल्याणमीय, मङ्गलमयी ज्ञानपीयूष-धारासे हृदय सिक्त हो जायगा। इतना सात्त्विक उत्साह उमड़ेगा कि फिर भगवान्‌की सेवाके बिना एक क्षण भी रहा नहीं जायगा।

– – –

विश्वास करो—भगवान्‌की सुहृदयतामें विश्वास होते ही जीवन पलट जायगा। अशान्ति सदाके लिये शान्त हो जायगी। स्वार्थपरता निष्काम-सेवामें बदल जायगी। असहिष्णुता सहिष्णुता, धीरता, उदारता और वदान्यता बन जायगी। गर्व-अभिमान, विनय-विनम्रताके रूपमें, असद्‌भावना सद्‌भावनाके रूपमें, दोषदर्शन और तीव्र निन्दा गुणदर्शन और प्रशंसाके रूपमें तथा द्वेष प्रेमके रूपमें परिणत हो जायगा। जगत्‌में सर्वत्र निजजन, आत्मीय और अपने बन्ध ु-ही-बन्धु दिखायी देंगे।

– – –

विश्वास करो—भगवान्‌की सुहृयता और अहैतुकी प्रीतिमें विश्वास होते ही उनसे माँगना-जाँचना बंद हो जायगा। फिर यह नहीं कहा जायगा कि भगवान्‌! हमारा अमुक अभीष्ट पूर्ण कर दो और हमें अमुक समय अमुक साधनमें सफलता प्रदान कर दो। फिर तो भगवान्‌के प्रत्येक विधानमें कल्याणके दर्शन होंगे।'

– – –

विश्वास करो—जो लोग भगवान्‌से कोई निर्दिष्ट कार्य करवाना चाहते हैं और उन्हें उसका साधन बतलाते हैं, उनका वस्तुत: भगवान्‌में सच्चा विश्वास ही नहीं है। वह तो विश्वासभास है। सच्चा विश्वास होनेपर तो भगवान् उनसे जो कराते हैं, जैसे कराते हैं और जो कुद फल प्रदान करते हैं, वे उसीमें संतुष्ट रहते हैं। विश्वासी पुरुष भगवान्‌के स्वयं निर्दिष्ट पथमें कामना, स्वार्थ या अहकांरवश अपना मत बताकर बाधा डालनेकी मूर्खता नहीं करते। बल्कि प्रतिकूल दीखनेपर भी वे भगवान्‌के निर्दिष्ट पथपर ही प्रसन्नतासे चलते हैं और भगवान्‌के दिये हुए प्रत्येक दानको परम मङ्गलमय जानकर सिर चढ़ाते हैं।

– – –

विश्वास करो—तुम्हारा यर्थाथ मङ्गल किस बातमें और क्या है; कब, किस प्रकारसे और किस सूत्रसे तुम्हें उस मङ्गलकी शीघ्र प्राप्ति हो सकती है एवं शीघ्र प्राप्त होनेमें तुम्हारा कल्याण है या देर से प्राप्त होनेमें–इन सब बातोंको पूर्णरूपसे तथा सत्यरूपसे भगवान् ही जानते हैं। तुम तो बहुत बार अमङ्गलको मङ्गल मान बैठते हो और ऐसे समय, ऐसे प्रकारसे और ऐसे सूत्रसे उस मङ्गलको प्राप्त करना चाहते हो कि जिसमें मङ्गल हो ही नहीं सकता। तुम्हारी मोहाच्छन्न दृष्टि यथार्थको देख ही नहीं पाती। छोटा शिशु जैसे अज्ञानवश सुन्दर समझकर अग्नि और सर्पको पकड़नेके लिये लपकता है, वैसे ही मोहाच्छन्न मनुष्य अनर्थकारी विषयोंकी ओर दौड़ता है। पर जो पुरुष विश्वासपूर्वक, छोटे शिशुके मातृपरायण होनेकी भाँति भगवान्‌के चरणोंमें आत्मसमर्पण कर चुकते हैं—अपने योगक्षेम का सारा भार भगवान्‌को सौंप चुकते हैं, उनके लिये क्या मङ्गलमय है और वह कब कैसे चाहिये, इस बातको निर्णय भी गवान् ही करते हैं और भगवान् स्वयं ही ठीक समयपर उन्हें वह मङ्गलमयी वस्तु प्रदान करते हैं।

भगवान् सदा सर्वत्र विराजमान हैं

याद रखो—भगवान् सदा सर्वत्र विराजमान हैं। तुम्हारे हृदयके गम्भीर अन्तस्तलमें भी वे सदा–सर्वदा रहते हैं। अकेली कोठरीमें तुम जो कुछ करते हो, उसको वे जानते–देखते हैं, इसमें तो कहना ही क्या है, तुम अपने हृदयके अत्यन्त गोपनीय स्थलमें विचाररूपसे भी जो कुछ सोचते–विचारते हो, जिसका कभी–कभी तुम्हें भी स्पष्ट ज्ञान नहीं होता, उसे भी वे प्रत्यक्ष करते हैं। ऐसा कभी, कहीं, कुछ होता ही नहीं, जिसे भगवान् न जान पाते हों, न देख पाते हों।

– – –

याद रखो—यदि भगवान्‌की इस सव्रज्ञता और सर्वसाक्षितापर तुम्हारा विश्वास हो जाय तो फिर तुम छिपकर भी कभी कोई निषिद्ध कर्म नहीं कर सकते। मनकी गहरी गुफामें भी कोई पापकी बात नहीं सोच सकते। यह सभी जानते हैं कि जब मनुष्य कोई बुरा कर्म करना चाहता है, उस समय यदि उसे यह सन्देह भी हो जाता है कि मेरे इस कर्मको कोई सम्भ्रान्त पुरुष, कोई पुलिसका मामूली सिपाही अथवा कोई साधारण मनुष्य भी देखता है तो वह उस बुरे कर्मसे हट जाता है। उसे संकोच, लज्जा और भय मालूम होता है उस कर्मका आचरण करते। फिर यहां तो स्वयं सर्वलोकमहेश्वर, सर्वज्ञ–शिरोमणि, सर्वसमर्थ भगवान् तुम्हारे प्रत्येक कर्मको देख रहे हैं। ऐसी अवस्थामें तुमसे पाप क्योंकर कन सकते हैं। पर जब बनते हैं–पापके विचार मनमें आते हैं और पाप की क्रिया भी तन–वचनसे होती है, तब यही कहना पड़ता है कि भगवान्‌की सर्वत्र व्याप्त सत्तापर तुम्हारा विश्वास नहीं है। भगवान्‌की सत्तापर विश्वास आते ही मनुष्य पापकर्मसे छूट जाता है।

– – –

याद रखो—भगवान् बड़े ही दयालु हैं। तुम उनकी सत्तापर विश्वास नहीं करते, तो भी वे तुमपर नाराज नहीं होते। वैसे ही जैसे बच्चेके अपराधपर माँ नाराज नहीं होगी। उनकी इस दयालुतापूर विश्वास करो और उन्हींसे यह वर माँग लो, जिसमें उनकी सर्वगत सत्ता तथा सदा-सर्वत्र स्थितिपर तुम्हारा अटल विश्वास हो जाय।

याद रखो—भगवान् सदा-सर्वत्र विराजमान हैं, इस सत्यपर विश्वास होते ही तुम पापरहित तो हो ही जाओगे, निर्भय भी हो जाओगे। पुलिसका सिपाही साथ रहता है तो मनुष्य चोर-डाकुओंसे निर्भय हो जाता है, फिर जब साक्षात् अखिल-लोक-सम्राट् सर्व-शक्तिमान् भगवान् तुम्हारे साथ होंगे तब तुम्हें किससे कैसा भय रहेगा? फिर तो प्रत्येक स्थितिमें भगवान्‌को अपने साथ जानकर तुम निर्भय रहोगे।

– – –

याद रखो—भगवान्‌की सत्तापर विश्वास होते ही तुम निश्चिन्त भी हो जाओगे; क्योंकि भगवान्सर्वलोकमहेश्वर और सर्वशक्तिमान् होनेके साथ ही तुम्हारे सहज सुहृद् भी हैं और उनको तुम नित्य अपने साथ अपने अत्यन्त समीप देखते हो। भगवान्-सा परम सुहृद् जिसके साथ हो, उसको किस बातकी चिन्ता रहेगी। वह परम सुहृद् अपने-आप ही किस बातमें, कब, कैसे तुम्हारा कल्याण होगा, उस बातको सोचेगा और पूरी करेगा। उसके सोचनेमें भूल भी नहीं होगी, क्योंकि वह सर्वज्ञ-शिरोमणि है; उसके द्वारा तुम्हारा काम हो ही जायगा, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है औ वह तुम्हारा काम निश्चय ही उल्लासपूर्वक करेगा, क्योंकि सुहृद्‌का यही स्वभाव होता है।

– – –

याद रखो—तुमसे जो प्रकाश-अप्रकाशमें पाप बनते हैं, तुम्हें जो एकान्तमें भूतकी कल्पनासे भय लगता है, तुम जो पद-पदपर विभिन्न कारणोंसे डरते हो और तुम जो दिन-रात योगक्षेमके चिन्तानलसे जलते ही, केवल भगवान्‌के लिये ही होंगे, तब अशास्त्रीय क्यों होंगे? वरं वस्तुतः उसीके कर्म शास्त्रीय होंगे।

– – –

याद रखो—जो पुरुष भगवत्प्रीतयर्थ कर्म करता है, वही जगत्‌की यथार्थ सेवा करता है; क्योंकि उसका मन कर्मोंमें कोई व्यक्तिगत स्वार्थ रहता ही नहीं। कर्ममें विष भरनेववाला तो स्वार्थ ही है। जहाँ स्वार्थ है, वहाँ चाहे कितनी ही त्यागकी बातें की जायँ, यथार्थ त्याग नहीं आता। अतएव उसका विष भी नहीं निकल पाता। निर्दोश विषरहित कर्मसे ही जगत्‌का कल्याण होता है।

भगवान्‌का द्वार सबके लिये खुला है

विश्वास करो—भगवान् अकारण सुहृद् हैं और परम करुणामय हैं। वे यह नहीं सोचते कि जीवन सब दोषोंसे रहित होकर, परम विशुद्ध होकर मेरी शरणमें आयेगा, तभी उसे आश्रय मिलेगा। वे देखते हैं केवल एक बात, जीव मुझको ही अनन्य-गति समझकर मेरी शरणमें आना चाहता है या नहीं। यदि सचमुच चाहता है तो वह फिर चाहे जैसा भी पापी-तापी, दुराचारी-दुःखधारी, पतित-पीड़ित हो, भगवान् उसे अपना अभय आश्रम देते ही हैं।

– – –

विश्वास करो—भगवान्‌का दरबार सके लिये सदा खुला रहता है, जो भी वहाँ जाना चाहता है, सचमुच जाना चाहता है-उसीको जाने दिया जाता है और एक बार वहाँ पहुँच गया कि फिर उसके पाप-ताप, दुराचारा-दुःख, पतन-पीड़ा सदाके लिये समूल नष्ट हो जाते हैं।

– – –

विश्वास करो—भगवान्‌के समान तुम्हारा अपना, सदा साथ देनेवाला आत्मीय, कभी किसी भी स्थितिमें घृणा न करनेवाला स्वामी और मित्र दूसरा कोई न है, न कभी हुआ है और न होगा। जिसको जगत्‌में कहीं भी स्थान नहीं मिलता, जो जगत्‌की दृष्टिमें सर्वथा नगण्य, तुच्छ, उपेक्षित और घृणित है, जिसको कहीं कोई भी अपना कहनेवाला तो है ही नहीं, दयाकी प्रेरणासे भी जिसकी ओर सुदृष्टिसे ताकनेवाला कोई नहीं है उसको भी भगवान् उतना ही प्यार करते हैं, जितना किसी भी दूसरेको।

– – –

विश्वास करो—तुम कितना ही अपराध करो, कितना ही धोखा दो, कितना ही उसका तिरस्कार और अपमान करो; भगवान्‌के सहज प्यारमें कभी कोई अन्तर नहीं पड़ता। तुम्हें जबतक मुख मोड़े रहोगे, तबतक उनके मधुर मुस्कानभरे स्नेहपूर्ण वदनारविन्दकी झाँकीसे वंचित रहोगे, उनके स्नेह-सुधा-सागरमें अवगाहनका सौभाग्य नहीं पा सकोगे। इसमें चाहे कितना ही समय बीते, पर याद रखो—जिस क्षण तुमने उनकी ओर मुख मोड़ा, तुम देखोगे कि तुम्हारे किसी अपराधका, किसी धोखेका और तुम्हारे द्वारा किये हुए किसी तिरस्कार या अपमानका उन्हें मानो स्मरण ही नहीं है। जैसे स्नेहमयी जननीका वक्षः स्थल शिशुके लिये सदा ही खुला रहता है, वैसे ही वे तुम्हें बड़े प्यारसे अपने हृदयसे चिपटानेको तैयार मिलेंगे।

– – –

विश्वास करो—इतनेपर भी जो जीव उनकी ओरसे मुख मोड़े रहनेमें ही अपना गौरव मानना है; उसके समान अभागा और कोई नहीं है। सारे पाप-ताप सदा उसके लिये मुँह बाये खड़े रहते हैं और अपने जीवनमें किसी भी स्थितिमें कभी भी सच्ची सुख-शान्तिका साक्षात्कार नहीं कर सकता।

– – –

विश्वास करो—मनुष्य जगत्‌में विषयोंकी दृष्टिसे चाहे जितना सौभाग्यवान् समझा जाय और जगत्‌में उसकी मान-प्रतिष्ठा तथा प्रशंसा-कीर्तिके चाहे जितने पुल बाँधे जायँ, असलमें वह बड़ा ही भाग्यहीन और निष्फल जीवन है। मानव-जीवनकी सफलता भोगोंकी अधिकतामें नहीं है; वह तो प्रभुकी शरणागतिमें ही है।

सुनहु उमा ते लोग अभागी। हरि तजि होहिं बिषय अनुरागी॥

भक्त प्रहलादकी पवित्र उक्ति

श्रीभगवान्‌के चरणोंकी शरण लेना ही जीवनकी एकमात्र सफलता है; क्योंकि भगवान् ही समस्त प्राणियोंके स्वामी, सुहृद्, प्रियतम और आत्मा हैं। जो लोग इन्द्रिय-भोगोंमें फँस जाते हैं, उन्हें भगवान्‌के परम कल्याणस्वरूप चरणाकमलोंकी प्राप्ति नहीं होती।

इसलिये यह मानव-शरीर, जो भगवत्प्राप्तिके लिये पर्याप्त है—जबतक रोग-शोकादिसे ग्रस्त होकर मृत्युके मुखमें नहीं चलता जाता, तभीतक बुद्धिमान् पुरुषको अपने कल्याणके लिये प्रयत्न कर लेना चाहिये।

– – –

प्रभुका पथ बतलानेवाले और उसपर ले चलनेवाले गुरुकी भक्तिपूर्वक सेवा, अपनेको जो कुछ मिले-सब भगवान्‌के समर्पण कर देना, प्रेमी भक्त साधुओंका सत्सङ्ग, भगवान्‌की आराधना, भगवत्कथामें श्रद्धा, भगवान्‌के गुण और लीलाओंका कीर्तन, भगवान्‌के चरणकमलोंका ध्यान, भगवान्‌के श्रीविग्रहादिका दर्शन-पूजा आदि साधनोंसे भगवान्‌में सहज प्रेम हो जाता है।

भगवान् परमेश्वर श्रीहरि समस्त प्राणियोंमें विराजमान हैं, यह समझकर यथाशक्ति सभी प्राणियोंकी इच्छा पूरी करो और हृदयसे उन सबका सम्मान करो।

जो लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर-इन छः भीतरी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके उपर्युक्त प्रकारसे भगवान्‌की भक्ति करते हैं, उन्हीं भगवान् वासुदेव श्रीचरणोंमें अनन्य प्रेमकी प्राप्ति हो जाती है।

– – –

प्रेम-भक्तिकी प्राप्ति होनेपर जब भगवान्‌के लीलाशरीरोंमें किये हुए अद्‌भुत पराक्रम, उनके अनुपम गुण और चरित्रोंको सुनकर अत्यन्त हर्षसे मनुष्यका रोम-रोम खिल उठता है, प्रेमाश्रुओंके कारण कण्ठ गद्‌गद हो जाता है और वह संकोच छोड़कर उच्च स्वरमें गाने और नाचने लगता है, जब वह ग्रहाविष्ट उन्मत्तकी भाँति कभी हँसता है, कभी करुण-क्रन्दन करता है, कभी भगवान्‌के दिव्य गुणोंका स्मरण करके उनका ध्यान करता है तो कभी भगवद्‌भावसे सबकी वन्दना करने लगता है, जब वह भगवान्‌में तन्मय होकर निःसंकोच श्वास-श्वासमें 'हरे, हे जगत्पते, हे नारायण' इस प्रकार पुकारने लगता है, तब इस प्रेमभक्तिके प्रभावसे उसके सारे बन्धन कट जाते हैं और भगवद्‌भावकी भावना करते-करते उसका हृदय भगवन्मय हो जाता है। उस समय उसके जन्म-मरणके बीजोंका भण्डार बिलकुल जल जाता है और वह पुरुष श्रीभगवान्‌को प्राप्त कर लेता है।

– – –

धन, स्त्री, पशु, पुत्र, पुत्री, महल, जमीन, हाथी, खजाना और भाँति-भाँतिके ऐश्वर्य और तो क्या, संसारका समस्त धन तथा भोगपदार्थ-सभी क्षणभंगुर हैं। वे इस मरणशील मनुष्यको क्या सुख दे सकते हैं।

भगवान् मुकुन्दको प्रसन्न करनेके लिये ब्राह्मण, देवता या ऋषि होना, सदाचार और बहुत-सा ज्ञान होना तथा दान, तप, यज्ञ, शौच और बड़े-बड़े व्रतोंका अनुष्ठान पर्याप्त नहीं है। भगवान् श्रीहरि तो केवल निष्काम प्रेम-भक्तिसे ही प्रसन्न होते हैं, और सब तो विडम्बनामात्र है।

इसलिये सब प्राणियोंको अपने ही समान समझकर सर्वत्र विराजगान सबके आत्मा सर्वशक्तिमान् परमेश्वर श्रीहरिकी भक्ति करो।

यह भक्ति ऐसी है कि इसके प्रभावसे दैत्य, यक्ष, राक्षस, स्त्री, शूद्र, गोपालक, पशु, पक्षी और बहुत-से पापी जीव भी भगवद्‌भावको प्राप्त हो गये हैं।

इस जगत्‌में जीवनका सबसे बड़ा स्वार्थ-परम स्वार्थ एकमात्र यह है कि वह सदा-सर्वदा सर्वत्र सबमें भगवान्‌का दर्शन करता हुआ भगवान् गोविन्द्रकी अनन्य भक्ति करे!

भगवान्‌के आश्रय बिना सत्यादि गुण नहीं रह सकते

याद रखो—श्रीभगवान्‌के आश्रय बिना सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्यादि सद्‌गुण वैसे ही नहीं ठहर सकते, जैसे बिना प्राणोंके शरीरकी इन्द्रियाँ। भगवान्‌का आश्रय न होनेपर सद्‌गुणोंका नाशक और दुर्गुणोंका जनक है और तुरंत ही अपे परिवारको फैलाकर सद्‌गुणोंको हृदयसे निकाल देता है।

– – –

याद रखो—अभिमान मनुष्यको अपने दोष देखनेका अवसर ही नहीं आने देता, वह निरन्तर उसे अन्ध बनाये रखता है; जिससे मनुष्य अपनी तनिक-सी भी सच्ची समालोचना जो उसके लिये परम हितकर होती है, नहीं सह सकता; एवं इसलिये सहज ही दोषोंका घर बन जाता है।

– – –

याद रखो—जो मनुष्य अभिमानके वशमें होकर केवल जगत्-सम्मानके निये लालायित हो उठता है, उसके एक ऐसी दुर्बलता आ जाती है, जो उसके हृदयमें एक विषाक्त क्षत कर देती है। फिर वह सम्मानके लोभसे अपने अपराध, पाप, दोष, स्वार्थपरता, कृतघ्नता, नीचाशयता, परस्वापहरणता, परसुखकातरता आदि जघन्य वृत्तियोंको छिपाकर अपनेको सत्पुरुश प्रसिद्ध करनेके लिये न मालूम कितनी नयी-नयी झूठ बोलता है, कितने सुन्दर स्वाँग बनाता है और कितने उपदेश करता है, इससे उसको परिणाममें सम्मान तो मिलता ही नहीं; प्रत्युत उसके भीतर घाव बढ़ता ही जाता है एवं अन्तमें ऐसी स्थिति हो जाती है कि एक दिन उसकी भीषण यन्त्रणासे छटपटाकर उसे आर्त पुकार करनी पड़ती है, परंतु फिर उसकी रक्षाका कोई सहज साधन नहीं रह जाता।

– – –

याद रखो—जो अपने अपराधोंको छिपाता है और दूसरोंपर सहस्त्रों नये-नये दोष मढ़नेका प्रयत्न करता है, वह बड़ा ही अभागा है। उसमें सहज ही सद्‌गुण आ ही नहीं सकते। सद्‌गुणोंको लाना और उन्हें स्थायीरूपसे अपने अंदर बसाना हो तो समस्त सद्‌गुणोंके समुद्र भगवान्‌को हृदयमें बसा लो।

– – –

याद रखो—भगवान्‌के हृदयमें आते ही समस्त दुर्गुण वैसे ही नष्ट हो जायँगे, जैसे सूर्यका उदय होते ही अन्धकार मर जाता है। जगत्‌का यह सूर्य तो फिर छिपता भी है, परंतु भगवान् एक बार जिसके हृदयमें उदय हो जाते हैं—फिर वे कभी छिपते ही नहीं; एक बार जिसके हृदयमें आ बसते हैं, फिर वहाँसे निकालनेपर भी नहीं निकलते।

– – –

याद रखो—दुर्गुणोंका ही परिणाम दु:ख है, जब दुर्गुण नहीं रहेंगे, तब दु:ख भी नहीं रहेंगे और सद्‌गुण आ जायँगे तो सद्‌गुणोंका स्वाभाविक परिणाम सुख भी अनायास ही आयेगा। साथ ही भगवान्‌की निवासभूमिमें सद्‌गुण उनके स्वभागवत होनेसे सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि ये सद्‌गुण फिर कभी नष्ट नहीं होंगे, इसलिये सुख भी स्थायी ओर आत्यन्तिक होगा।

– – –

याद रखो— वस्तुत: सुख किसी सद्‌गुणमें नहीं है या सद्‌गुणका परिणाम भी नहीं है। यह तो भगवान्‌में स्वभावगत

वैसे ही है, जैसे सूर्यमें स्वभावत: ही प्रकाश और उष्णता होती है और उनसे अन्धकार एवं सर्दीका स्वाभाविक नाश होकर विलक्षण दृष्टिशक्ति और स्फूर्ति प्राप्त होती है। भगवान्‌से रहित जो सद्‌गुण हैं, वे वस्तुत: सद्‌गुण ही नहीं हैं। वे तो वैसे ही नकली गुण हैं, जैसे मिट्‌टीपर रंग चढ़ाये हुए नकली आम, अमरूद, संतरे, सेव आदि खिलौने होते हैं, जो ऊपरसे फल-से दीखते हैं परंतु वे हैं केवल मिट्‌टी-ही-मिट्‌टी। इसी प्रकार भगवान्‌से रहित सद्‌गुण केवल कल्पनामात्र होते हैं। इस बातको समझो और समझकर निरन्तर अपने हृदयमें भगवान्‌को बसानेका प्रयत्न करो।

– – –

याद रखो—भगवान् तो सभीके हृदयमें हैं, परंतु तुम पर बातपर विश्वास नहीं करते, इसीसे नित्य निवास करनेवाले भगवान् भी वहाँ प्रकट नहीं हो पाते। और इसीसे सद्‌गुण टिक नहीं पाते तथा दुर्गुणोंका परिवार बढ़ता रहता है। भजनके द्वारा विश्वास प्राप्त करो और फिर विश्वास की आँखोंसे देखो, भगवान् तुम्हारे अंदर प्रकट हो जायँगे। उनके प्रकट होते ही तुम सब प्रकारसे निहाल हो जाओगे।

दोष-दर्शन

याद रखो—जो सद्‌गुण भगवान्‌में प्रीति बढ़ानेवाले नहीं हैं उनमें कहीं-न-कहीं कोई दोष है। उसको खोजो और दूर करो! सद्‌गुणकी यही पहचान है कि वह भगवान्‌की ओर ले जाता है।

– – –

याद रखो—जिसको अपने सद्‌गुणों का अभिमान है और जो अपनेको उनका निर्माण करनेवाला मानता है, उसके सद्‌गुणोंकी संख्यावृद्धि तथा विशुद्धि रुक जाती है। सद्‌गुणोंका अभिमान दूसरों में दोषों का दर्शन करता है एवं उनके प्रति हेयदृष्टि, घृणा उत्पन्न करता है, जिसका परिणाम व्यवहारमें क्रमश: प्रेमशून्यता, कटुता, द्वेष, द्रोह और अन्तमें हिंसा-प्रतिहिंसातक हो सकता है।

– – –

याद रखो—जहाँ दोष-दर्शनकी बान पड़ी कि फिर किसी के छोटे दोष भी बहुत बड़े दीखते हैं, बिना हुए ही दोष दीखने लग जाते हैं और अन्तमें कोई भी पुरुष ऐसा नहीं बच जाता कि जिसमें दोष-दर्शन करनेवाले की दोषपूर्ण बुद्धि किसी दोषको न देखे। यहाँतक कि फिर उसकी दृष्टिमें मङ्गलमय भगवान्‌में भी दोष दीखने लगते हैं।

– – –

याद रखो—जितना ही दोष-दर्शन बढ़ता है उतना ही दोषोंका चिन्तन, मनन भी बढ़ता है। फलत: दोषोंमें यह घृणा निकल जाती है और उनमें प्रीति उत्पन्न होने लगती है।

– – –

याद रखो—अच्छे उद्‌देश्यसे भी बुरी वस्तुका बार-बारका चिन्तन-मनन उस वस्तुके विविध चित्र हृदयपर अङ्कित कर देता है और फिर बार-बार उसीकी स्फुरणा और स्मृति होती है तथा सद्‌गुण क्षीण होने लगते हैं।

याद रखो—जब इस प्रकार बाहर-भीतर दोष-ही-दोष आकर बस जाते हैं और उन्हींमें मन घुल-मिल जाता है, तब सारे सद्‌गुण क्षीण होते-होते लुप्त हो जाते हैं। परिणाम यह होता है कि दोषोंमें ही गुणबुद्धि होने लगती है, पापमें ही

पुण्यबुद्धि होने लगती है।

याद रखो—जहाँ बुद्धिने गुणको दोष और दोषको गुण मान लिया कि फिर चित्तका भण्डार दोषों से भर जाता है, उनमें आसक्ति हो जाती है और बार-बार प्रयत्न होता है नये-नये दोषोंका संग्रह करनेके लिये।

– – –

याद रखो—सद्‌गुण वे ही टिकते हैं, जो प्रभुको समर्पित होते रहते हैं और जिनकी प्राप्ति में प्रभुको ही कारण माना जाता है। इस स्थितिमें प्रभुकृपा अभिमान नहीं उत्पन्न होने देती और सद्‌गुणोंकी बड़ी सावधानीसे रक्षा करती है। फिर ये सद्‌गुण भगवान्‌की पूजाके पुष्प बन जाते हैं और इनकी सुगन्ध तथा प्रसादसे आस-पासका सारा वातावरण सुख-शान्तिकी मधुर मनोहर सुगन्धसे भर जाता है।

– – –

याद रखो—सद्‌गुण वे ही हैं, जो किसी भी लौकिक कामना-वासनासे या अहंता-ममतासे कलंकित न होकर प्रभुके चरणोंमें समर्पित होने योग्य होते हैं। जिन सद्‌गुणों पर अभिमानकी, ममताकी, मोहकी, कामना-वासनाकी कालिमा लग जाती है, वे भगवत्चरणोंपर चढ़नेयोग्य नहीं रहते। उनसे तो कलंक ही बढ़ता है।

– – –

याद रखो—वे ही सद्‌गुण हैं, वे ही सद्‌भाग्य हैं, जो मानव-जीवनको भगवच्चिन्तनमें लगा दें। सद्‌गुणोंके अभिमानसे भरी लम्बी आयुकी अपेक्षा घड़ी-दो-घड़ी वह समय महान् श्रेष्ठ है, जिसमें मनुष्य अपनेको तृणादपि सुनीच और सर्वथा पुरुषार्थहीन एवं गुणहीन मानकर भगवान्‌के पावन चरणोंका आश्रय ले पाता है।

भीतरी दोषोंको दूर करो

याद रखो—जो लोग भीतरसे गंदे रहकर बाहरी सजावटके द्वारा उस गंदगीको ढकना चाहते हैं, उनकी गंदगी घटत नहीं अपितु बढ़ती है और वे भीतरकी गंदगीके बुरे फलसे भी नहीं बच सकते। सच्चा लाभ तो भीतरकी गंदगीको मिटानेपर ही मिलता है।

– – –

याद रखो—तुम्हारे मनमें यदि काम, क्रोध, लोभ, असूया, द्वेष, हिंसा आदि दोष भरे हैं, तुम उनके दूर करनेका कोई प्रयत्न नहीं करते वरं उनका रहना तुम्हें बुरा भी नहीं मालूम होता और तुम ऊपरसे निष्कामता, क्षमा, त्याग, गुण-दर्शन, प्रेम और सेवाका उपदेश करनेमें बड़ी ऊँची उड़ान भरते हो तो इससे तुम्हें क्या लाभ है। इससे तो दम्भ ही बढ़ता है।

– – –

याद रखो—ऊपरसे यदि लोग तुममें कोई अच्छाई न भी देखें और तुम्हारा हृदय दोषरहित और पवित्र है तो तुम वस्तुतः अच्छे हो। अच्छा असलमें वही है, जो अपने अन्तर्यामी भगवान्‌के सामने अच्छा है; उनकी दृष्टिमें निर्दोष है।

– – –

याद रखो—तुम जो भक्ति, प्रेम और ज्ञानकी बातें करते हो, इनका भी कोई मूल्य नहीं है, यदि तुम्हारे हृदयमें भक्तिकी पवित्र प्रभुपरायणता, प्रेमकी मधुर और निष्काम सरसता एवं ज्ञानकी दिव्य ज्योति नहीं है। मनसे भक्त बनो,

प्रेमका मनमें ही अनुभव करो और ज्ञानके प्रकाशको अंदर ही प्रदीप्त करो, तभी उनका असली लाभ मिलेगा।

– – –

याद रखो—बाहरके बहुत बड़े आडम्बरकी सच्चे क्षुद्रतम भावके साथ भी तुलना नहीं हो सकती। सचाई पैदा करो–सचाई थोड़ी है; तब भी वह महान् उपकार करनेवाली है; क्योंकि सचाई है।

– – –

याद रखो—उपदेशका उपदेश पहले उसके अपने लिये ही होना चाहिये। जो कुछ अच्छी बात तुम करना चाहते हो, कहते हो; उसे पहले अपने प्रति कहो और वस्तुतः तुम उसे अच्छी मानते हो तो उसे अपने जीवनमें धारण कर लो। दूसरोंके हितके लिये अपने हितका परित्याग करना तो पुण्य है, परंतु जो हितको अपने लिये हित ही नहीं समझता, केवल दूसरोंके लिये ही उसे हित बतलानेका नाटक करता है, वह अपने हितका त्याग क्या करेगा ? उसके पास तो अपना हित है ही नहीं; वह तो केवल लोगोंको ठगनेके लिये, उनके सामने अपनेको सदाचारी महात्मा सिद्ध करनेके लिये कपट करता है। उसे इतना भी विश्वास नहीं है कि अन्तर्यामी भगवान् मेरे कपटको जानते हैं और वे इससे रुष्ट होंगे। ऐसा पुरुष न तो अपना हित करता और न दूसरोंका ही।

– – –

याद रखो—मनुष्य-जीवन समचुच बड़ा दुर्लभ है, यह व्यर्थ खोने या पाप कमाने के लिये नहीं मिला है। इसका यथार्थ सदुपयोग करो। इसके एक-एक क्षणको भगवान्के चिन्तनमें लगा दो। मत भूलो यहाँके धन-जन, विद्या-बुद्धि, सम्मान-सत्कार, प्रभुत्व-अधिकार और मेरे-तेरेके मोहमें ? जीवन बीता जा रहा है। जबतक मृत्यु नहीं घेरती, इन्द्रिय और मन काम देते हैं, तभीतक कुछ नहीं कर सकते हो। बड़ी लगनसे लगा दो मनकी प्रत्येक वृत्तिको, शरीरकी प्रत्येक क्रियाको, इन्द्रियकी प्रत्येक चेष्टाको श्रीभगवान्के भजनमें।

– – –

याद रखो—यहाँकी मान-बड़ाई, धन-वैभव, यश-कीर्ति और प्रभुत्व-अधिकारको तुमने प्रचुर रूपमें प्राप्त भी कर लिया तो क्या होगा उससे। तुम्हारे साथ जायगा केवल तुम्हारा कर्म-संस्कार। इनमेंसे कोई भी न तो तुम्हारा साथ देगा, न तो तुम्हारा सहायक होगा। तुम्हारा जीवन व्यर्थ चला जायगा। व्यर्थ ही नहीं, जागतिक लाभकी कामनासे जो पाप-कर्म तुमसे बन रहे हैं, इनका बोझ तुम्हारे साथ जायगा, जो असंख्य जन्मोंतक तुम्हें कष्ट देता रहेगा। अतएव जल्दी सावधान हो जाओ। मानव-जीवनके वास्तविक लक्ष्यको समझो और जीवनके प्रत्येक क्षण्को उसीकी सिद्धिमें लगा दो।

भगवान्की इच्छामें अपनी इच्छा मिला दो

याद रखो—तभीतक तुम्हारा निर्णय भ्रमपूर्ण, संदिग्ध और परिणाममें हानिकारक होता है, जबतक कि तुम्हारे मनमें काम, क्रोध, लोभ, स्वार्थ, घृणा, द्वेष, अभिमान, भय, प्रतिशोधकी भावना, वैर और हिंसादि दोष वर्तमान हैं और भगवान्की दिव्य वाणीकी स्फुरणाके लिये खेला मार्ग नहीं है।

– – –

याद रखो—जब तुम मनको दोषोंसे मुक्तकर भगवान्‌की कृपाके प्रकाशसे भर लोगे और शुद्ध भगवदीय विचार जिनमें आगे-पीछे सर्वत्र पर-हितकी भावना भरी होगी, तुम्हारे मनको छा लेंगे, तब तुम्हारा जो कुछ भी निर्णय होगा, वह निर्भान्त, सत्य और परिणाममें हितकारक होगा।

– – –

याद रखो—व्यक्तिगत स्वार्थ मनुष्यके ज्ञानको हरकर उसे अंध बना देता है, फिर उसकी बुद्धिपर पर्दा पड़ जानेके कारण वह यथार्थ निर्णय नहीं सकती। जो बुद्धि स्वार्थसे ढकी नहीं होती, उसीके द्वारा भगवान्‌के ज्ञानका प्रकाश होता है।

– – –

याद रखो—जिस हृदयमें नित्य-निरन्तर भगवान् विराजित रहते हैं, उस हृदयमें दैवी सम्पत्तिके गुण-त्याग, क्षमा, वैराग्य, निःस्वार्थ भाव, प्रेम, सुहृदयता, विनय, निर्भयता, सहिष्णुता, स्नेह और अहिंसा आदि-स्वाभाविक ही रहते हैं और वहींसे भगवान्‌की दिव्य वाणी स्फुरित हुआ करती है।

– – –

याद रखो—जब तुम्हारा मन भगवदीय सत्यको प्राप्त करने के लिये उत्सक तथा उन्मत होगा, उसमें स्वयं ही उस सत्यका प्रकाश होगा और तब जो कुछ निर्णय होगा, वह सत्य ही होगा।

– – –

याद रखो—जब तुम्हारे हृदयमें दूसरोंका हित ही अपने हितके रूपमें प्रकट होगा, तब उससें स्वाभाविक वही विचार आयेंगे, जो पर-हितकारक होंगे और तदनुसार ही निर्णय होगा और जिस निर्णयमें पर-हित भरा है, उस निर्णयसे परिणाममें अपना अहित कभी हो ही नहीं सकता।

– – –

याद रखो—जब मनुष्यके हृदयमें भगवत्प्रेमका प्रादुर्भाव होता है, तब उसको जगत्‌में कोई पराया दीखता ही नहीं। ऐसी अवस्थामें उसका स्वार्थ भी विस्तृत हो जाता है, फिर वह जगत्‌के भलेमें ही अपना भला देखता है, किसी एक क्षुद्र प्राणीका अहित भी उसे सहन नहीं होता; इस प्रकारके प्रेमका प्रकाश स्वार्थके अन्धकारको सर्वथा नष्ट कर देता है। फिर उस प्रकाशमें जो कुछ निर्णय होता है वह सर्वथा मङ्गलमय होता है।

– – –

याद रखो—जब तुम भगवान्‌की इच्छामें अपनी इच्छा मिला दोगे, तभी तुम्हारा निर्णय निष्पक्ष निर्भ्रान्त होगा।

– – –

याद रखो—भगवान्‌की इच्छासे विरुद्ध इच्छा रखनेवालेकी इच्छा कभी सफल तो होती ही नहीं; पद-पदपर उसे असफलता, निराशा और वेदनाका सामना करना पड़ता है। उसका प्रत्येक निश्चय, प्रत्येक विचार भ्रान्त और परिणाममें पीड़ादायक होता है—तथा उसका जीवन नित्य अशान्ति में ही बीतता है।

– – –

याद रखो—तुम यदि अपनेको भगवान्‌के प्रति सौंप देते हो, अपनी इच्छाओंको भगावान्‌की इच्छामें मिला देते हो एवं अपने ज्ञान और बलको भगवान्‌के ज्ञान और बलका अंश मान लेते हो तो निश्चय समझो-फिर तुम भगवान्‌की मङ्गलमयी इच्छासे मङ्गलमय बनकर भगवान्‌के नित्य सत्य और अचिन्तय अपरिमित बलसे सुरक्षित होकर केवल अपना ही कल्याण नहीं करोगे; तुम्हारा प्रत्येक विचार, तुम्हारा प्रत्येक निश्चय और तुम्हारी प्रत्येक क्रिया अखिल जगत्‌का मङ्ग्ल करनेवाली होगी।

आत्म-समर्पण

याद रखो—सच्ची शरणागति भगवान्‌के प्रति पूर्ण आत्म-समर्पण हो जानेपर ही सिद्ध होती है और सच्चा आत्म-समर्पण वह है, जिसमें अपने पास अपना कुछ रहे ही नहीं-शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार, चेतना-सभी कुछ श्रीभगवान्‌के हो जायँ।

– – –

याद रखो—जिसने भगवान्‌के प्रति आत्म-समर्पण कर दिया है, वह भगवान्‌के कार्यका आधार बन जाता है। उसके द्वारा फिर जो कुछ भी क्रिया होती है, सब भगवान्‌की ही होती है, उसका अपना अपने लिये पृथक कुछ कार्य रहता ही नहीं।

– – –

याद रखो—जिसने भगवान्‌के प्रति आत्म-समर्पण कर दिया है, वह सदा-सर्वदा प्रसन्नतापूर्वक यन्त्रकी भाँति भगवान्‌का कार्य करता रहता है। वह किसी भी स्थितिमें प्रतिकूलताका अनुभव नहीं करता। उसकी प्रतिकूलता-अनुकूलता भगवान्‌की मङ्गलमयी इच्छामें मिलकर नित्य सम उल्लासमयी स्थितिके रूपमें परिणत हो जाती है।

– – –

याद रखो—जिसने भगवान्‌के प्रति आत्म-सपर्मण कर दिया है, वह इस जगत्‌को दूसरे लोगोंकी भाँति जड़, अनित्य और दु:खपूर्ण नहीं देखता, उसकी आँखें बदल जाती हैं और वह इस चरा-चरात्मक समस्त जगत्‌को प्रतिक्षण शाश्वत चिदानन्दमय श्रीभगवान्‌के रूपमें देखता है एवं इसके प्रत्येक परिवर्तन और सृजन-संहारमें वह भगवान्‌की दिव्यलीलाका अनुभव करके आनन्दमग्न रहता है।

– – –

याद रखो—जिसने भगवान्‌के प्रति आत्म-समर्पण कर दिया है, वह नित्य परम शान्तिको प्राप्त करता है। अशान्ति या चित्तकी चंचलता तभीतक रहती है, जबतक चित्तमें जन्म-मृत्युमय जगत्‌के अनन्त अनित्य दृश्य भरे रहते हैं और जब चित्त भगवान्‌के चित्तमें मिलकर घुल-मिल जाता है, तब वह नित्य शान्तिमय भगवान् निवास्थल बन जाता हे। सागरके ऊपर-ऊपर ही तरंगे उछलती हैं, उसका गम्भीर अन्तस्तल अत्यन्त शान्त होता है, इसी प्रकार चित्त जबतक बाहरी जगत्‌में रमता है, तबतक उसकी चंचलता नहीं मिटती, पर वही जब अननत अथाह गहराईमें जाकर भगवान्‌को पा जाता है, तब सर्वथा शान्त स्थितिमें पहुँच जाता है।

– – –

याद रखो—जिसने भगवान्‌के प्रति आत्म-समर्पण कर दिया है- वह आनन्दका दिव्य और अटूट भण्डार बन जाता है। उसके द्वारा नित्य आनन्दका स्त्रोत बहता रहता है और वह जगत्‌के अनेकानेक त्रितापतप्त प्राणियोंको दिव्य शान्तिमयी आनन्दसुधा धारामें बहाकर उनके तापको सदाके लिये मिटा देता है।

– – –

याद रखो—जिसने भगवान्‌के प्रति आत्म-समर्पण कर दिया है-वह यदि कुद भी नहीं करता तो भी उनका जगत्‌में अस्तित्व-मात्र ही जगत्‌के कल्याणमें बहुत बड़ा सहायता बनता है और जो महापातकी लोग भी उसके सम्पर्कमें आ सकते हैं, उनका भी जीवन पलट जाता है। वे घोर नरकसे निकलकर दिव्य भगवद्भावमें पहुँच जाते हैं और वे भी तर-तारण बन जाते हैं।

– – –

याद रखो—जिसने भगवान्‌के प्रति आत्म-समर्पण कर दिया है- उसके लिये भगवान्‌का दिव्य धाम उतर आता है, वह नित्य भगवद्धाममें ही सोता-जागता, चलता-फिरता, खाता-पीता और सारी क्रियाएँ करता है। वह कभी भगवान्‌से अलग नहीं होता और भगवान् कभी उसके अलग नहीं होते। उसके भीतर-बाहर सर्वत्र सदा भगवान् ही भरे रहते हैं।

सांसारिक पदार्थ अनित्य हैं

याद रखो—सांसारिक पदार्थ अनित्य हैं और सुखसे रहित हैं, इनपर जो आस्था करता है, इनसे जो सुख-शान्तिकी आशा रखता है, उसे निराश और दु:खी ही होना पड़ता है। सम्भव है, मोहवश कुछ समयके लिये सांसारिक पदार्थ सुख-शान्तिके लिये पर्याप्त जान पड़ें, पर एक दिन अवश्य ऐसा आता है, जब ये मझधारमें छोड़कर जवाब दे बैठते हैं।

– – –

याद रखो—एक भगवान् ही ऐसे हैं, जो नित्य अपरिवर्तनशील, सत्, सनातन, सर्वैश्वर्यपूर्ण, सर्वशक्तिमान् और स्वभाव-सुहृद् हैं, मनुष्यका यह भगवद्विश्वास उसे भगवान्‌के अनन्त स्नेह, ज्ञान, शक्ति और प्रेमके उस परम उच्च स्तरपर पहुँचा देता है, जहाँ निराशा, दु:ख और अशान्तिकी कल्पनाका भी लेश नहीं हैं।

– – –

याद रखो—भगवान्‌में विश्वास रखनेवाले पुरुषपर किसी भी सांसारिक परिस्थितिका कोई प्रभाव नहीं पड़ता; न वह प्रिय कहानेवाले पदार्थोंकी और परिस्थितियोंकी प्राप्तिसे हर्षित होता है और न अप्रिय कहानेवाले पदार्थों और परिस्थितियोंकी प्राप्ति से दु:खी ही। बड़े-से-बड़ा धक्का भी उसे हिला नहीं सकता।

– – –

याद रखो—भगवान्‌में विश्वास करनेपर भी यदि तुममें कहीं अशान्ति या दु:ख दिखायी देता है तो निश्चय है कि कहीं-न-कहीं तुम्हारे विश्वास करनेमें ही त्रुटि है; उस त्रुटिको दूर करनेके लिये विश्वासपूर्वक प्रभुसे प्रार्थना करो। तुम्हारी त्रुटि दूर हो जायगी और तुम दु:ख एवं अशान्तिका समूल नाश करनेमें समर्थ होओगे।

– – –

याद रखो—कहीं भूल हो जानेपर जो मनुष्य उसे तुरंत सुधारनेमें नहीं लग जाता, उसकी भूल स्थायी बनकर स्वभावके रूपमें परिणत हो जाती है और फिर नाना प्रकारके नये-नये विघ्न उत्पन्न करके उसकी निराशाको- फलत:

दु:ख एवं अशान्तिको और भी बढ़ा देती है। जहाँ-कहं निराशाका अन्धकार दिखायी दे, वहीं भगवान्‌के मङ्गलमय प्रकाशसे उसे तुरंत हटा दो!

– – –

याद रखो—भगवान्‌के मङ्गलमय राज्यमें निराशा और असफलताको स्थान नहीं है। ये तो तभी आते हैं, जब हम भगवान्‌की जगह भोगोंपर विश्वास करने लगते हैं। इस अवस्थामें हमारे दु:ख और अशान्ति की श्रृंखला टूटती नहीं, वरं और भी सुदृढ़ हो जाती है। इसलिये निराशा और असफलताका दूरसे भी दर्शन होते ही समझ लो कि तुम्हारा विश्वास भोगोंकी ओर हो गया है और तुंरत उस विश्वासको वहाँसे हटाकर भगवान्‌में जोड़ दो। फिर देखो, उसी क्षण बल और उत्साहसे हृदय भर जायगा और सफलता सामने दिखायी देगी।

– – –

याद रखो—संशय, भय, क्रोध, ईर्ष्या, शोक, विषाद, चिन्ता, उद्वेग आदि दोष भगवान्‌में विश्वासकी कमीसे आते हैं। भगवान्‌की महत्ता, सर्वशक्तिमत्ता और सौहार्द-प्रेममें विश्वास होते ही हृदयसे ये सारे दोष उसी क्षण वैसे ही लुप्त हो जाते हैं, जैसे सूर्यके उदय होते ही अन्धकार।

– – –

याद रखो—भगवान्‌के समान सदा सब बातोंको जाननेवाला, तुम्हारे दु:ख-दर्दके मूल तत्त्वको समझने और उसे मिटानेकी शक्ति रखनेवाला, तुम्हारे सारे अभावोंको जानने और उनकी सर्वाङ्गपूर्ण पूर्ति करनेकी शक्ति रखनेवाला, पुकारते ही उत्तर देनेवाला तुम्हारा परम सुहृद्-सदा हित करनेमें तत्पर अन्य कोई भी नहीं है। तुम भगवान्‌को छोड़कर अन्य किसीमें जो तनिक भी विश्वास-भरोसा रखते हो, यही तुम्हारा मोह है-अज्ञान है एवं सारी विपत्तियोंका मूल है। इसे छोड़कर अपने भगवान्‌को पहचानते ही तुम्हारे सारे दु:ख-दर्द सदाके लिये नष्ट हो जायँगे और तुम नित्य अनन्त सुख-शान्तिको पाकर कृतार्थ हो जाओगे।

भगवत्प्राप्तिमें जीवनकी सफलता

याद रखो—मानव-जीवकी सफलता भगवत्-प्राप्तिमें है, विषय-भोगोंकी प्राप्तिमें नहीं। जो मनुष्य जीवनके असली लक्ष्य भगवान्‌को भूलकर विषयभोगोंकी प्राप्ति और उनके भोगमें ही रचा-पचा रहता है, वह अपने दुर्लभ अमूल्य जीवनको केवल व्यर्थ ही नहीं खो रहा है वरं अमृत देकर बदलेमें भयानक विष ले रहा है।

– – –

याद रखो—बहुत जन्मोंके बाद बड़े पुण्यबल तथा भगवत्कृपासे जीवको मानव-शरीर प्राप्त होता है, इन्द्रियोंके भोग तो अन्यान्य योनियोंमें भी मिलते हैं; पर भगवत्प्राप्तिका साधन तो केवल इसी शरीरमें हैं, इसको पाकर भी जो मनुष्य विषयभोगोंमें ही फँसा रहता है—वह तो पशुसे भी अधिक मूढ़ है।

– – –

याद रखो—यदि तुमने इस जीवनमें भगवान्‌को नहीं प्राप्त किया—कर्म-से-कम भगवत्प्राप्तिके पथपर नहीं आ गये तो तुम्हें पीछे इतना पछताना पड़ेगा कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। अत: हाथमें आये हुए इस महान्

सुअवसरके एक-एक क्षणको बड़ी ही सावधानीके साथ जीवनके असली लक्ष्य भगवत्प्राप्तिके साधनमें ही लगाना चाहिये।

– – –

याद रखो—यहाँके जिन धन-ऐश्वर्य, पद-अधिकार, यश-कीर्ति और मान-मर्यादाके लिये तुम पागल हो रहे हो, उनमेंसे कोई भी कभी भी, तुमको तृप्ति नहीं दे सकेंगे। उनके अधूरेपनमें कभी पूर्णता आयेगी ही नहीं और इस कारण तुम्हारी कमी कभी पूरी होगी ही नहीं।

– – –

याद रखो—इन विषयोंकी प्राप्तिके लिये जो तुम दिन-रात भाँति-भाँतिके नये-नये पाप कर रहे हो, इसीमें अपना कल्याण समझ रहे हो और गौरवका अनुभव कर रहे हो, यह तुम्हारे लिये बहुत ही घातक होगा। इससे तुम्हें जीवनमें कभी शान्ति और सुख तो मिलेगा ही नहीं; वरं वह सदा निराशा, दु:ख, चिन्ता, शोक और विषादसे भरा रहेगा। मरनेके बाद भी तुम्हें इस पापके भारी बोझको ढोकर अपने साथ ले जाना पड़ेगा और विविध योनियोंमें अनेकों प्रकारके भीषण दु:ख-भोगके लिये बाध्य होना पड़ेगा।

– – –

याद रखो—बुद्धिमान् मनुष्य वही है जो इन दु:ख उत्पन्न करनेवाले विषय-भोगोंमें मनको नहीं फँसाता और भगवान्का स्मरण करता हुआ जगत्के सारे काम उसी प्रकार करता है, जिस प्रकार नाटयमंचपर अभिनेता अपने स्वाँगके अनुसार खेल करता है केवल प्रभुको रिझानेके लिये। असलमें वही सच्चा मनुष्य है।

– – –

याद रखो—तुम मनुष्य हो; अपने मनुष्यत्वको सदा जगाये रखो—एक क्षणके लिये भी भगवान्को मत भूलो। सदा स्मरण रखो कि यहाँ इस शरीरमें भगवान्ने तुमको पशुकी भाँति केवल इन्द्रियभोगोंके भोगके लिये ही नहीं भेजा है। तुम्हें उस बहुत बड़ी सफलताको प्राप्त करना है, जिससे अबतक तुम वंचित रहते आये हो। वह सफलता है—भगवत्प्राप्ति।

– – –

याद रखो—इसी सफलताको लक्ष्य बनाकर जो मनुष्य निरन्तर भगवान्में मन रखकर ही जगत्के कार्य करता है, उनमें कभी मनको फँसाता नहीं है—वही चतुर है। जीवननिर्वाहके लिये जो काम आवश्यक हो, उसे करो, पर करो भगवान्को याद रखते हुए ही, लक्ष्यपर दृष्टि रखकर ही।

याद रखो—भगवान्से विरोधी विषयको भूलकर भी ग्रहण करना बहुत बड़ी हानि है। अतएव वही बात सोचो, वही काम करो; जो शुभ है। शुभ वही है जो भगवान्के अनुकूल है। आँखोंसे कभी बुरी चीजें, गंदे दृश्य, स्त्रियोंके हाव-भाव मत देखो; कानोंसे कभी गंदी बात मत सुनो; जीभसे कभी गंदे—अशुभ शब्द मत उच्चारण करो। आँखोंसे भगवत्-सम्बन्धी वस्तुओं और संतोको देखो, कानोंसे भगवद्गुण-गान श्रवण करो और जीभसे भगवान्के नाम-गुण-लीला, धाम, तत्त्व और महत्त्वका वर्णन करो। ऐसा करनेपर ही तुम जीवनकी सफलताको प्राप्त कर सकोगे।

सच्ची समता

याद रखो—जगत्में छोटे-बड़े, नीचे-ऊँचे, अधम-उत्तम जितने भी जड़-चेतन प्राणी हैं सबमें भगवान् भरे हैं, सभी भगवान्से ओत-प्रोत है। उनकी आकृति-प्रकृतिमें, खान-पानमें, व्यवहार-बर्तावमें चाहे जितना भेद हो, पर उन सबके अंदर नित्य समभावसे विराजगान भगवान्में तनिक भी भेद नहीं है।

– – –

याद रखो—जो मनुष्य इन सर्वस्वरूप, सर्वव्यापी, सर्वात्मा भगवान्की ओर देखता हुआ जगत्में व्यवहार करता है, उसके व्यवहारमें यथायोग्य व्यावहारिक विषमता रहनेपर भी मनमें कोई विषमता नहीं रहती। वह समतामें स्थित होकर वैसे ही विषम व्यवहार करता है, जैसे मनुष्य आत्मरूपमें सर्वत्र समान देखता हुआ भी अपने ही हाथसे दूरे प्रकारका व्यवहार काता है और पैरसे दूसरे प्रकारका। पर उसके मनमें या पैर किसीके प्रति राग-द्वेष नहीं है। दोनोंमें ही समान आत्मबुद्धि है। इसलिये व्यवहार कैसा भी हो, उससे जान-बूझकर न हाथका अपमान—अहित होता है और न पैरका ही। इसी प्रकार उस मनुष्यके द्वारा किसीका अपमान या अहित नहीं होता।

– – –

याद रखो—जो मनुष्य मनमें विषमता रखता है, अनेक प्रकार से भेद-बुद्धि रखता है, पर बाहर सबको समान बताकर सबके साथ सम्मान बर्ताव करना चाहता है, उसका यह साम्यभाव कभी सफल नहीं होता; क्योंकि भिन्न-भिन्न स्वभावोंके विभिन्न प्रकारके प्राणियोंसे सभी प्रसंगोंमें समताका व्यवहार सम्भव ही नहीं है। बुद्धिमान् तथा श्रेष्ठ विचारवाले पुरुषोंके प्रति जितने आदरका व्यवहार होगा, उतना मूर्ख और नीच विचारवाले पुरुषोंके साथ नहीं होगा। कुत्ते, गाय और हाथीके साथ किसी भी क्षेत्रमें एक-सा व्यवहार सम्भव नहीं। साँप-बिच्छूके साथ वैसा व्यवहार तुम नहीं कर सकते, जैसा गाय-बकरीके साथ करते हो; परंतु व्यवहारमें विषमता रखते हुए भीतुम आत्मरूपसे सबमें समान भाव रख सकते हो। भगवत्-रूपसे मन-ही-मन सबको पूजनयी मानते हुए उनका सत्सकार कर सकते हो।

– – –

याद रखो—भीतरकी समता ही सच्ची समता है; क्योंकि उसके प्राप्त होनेपर राग-द्वेषका, अपने-परायेका सर्वथा अभाव हो जाता है; फिर सभीमें समभावसे भगवद्बुद्धि रहती है, सभीके प्रति समान भावसे श्रद्धापूर्वक सेवाका आचरण होता है। किसीका बुरा करनेकी बात मनमें कभी आ ही नहीं सकती। कहीं किसीसे कोई हानि हो भी जाती है तो भी मनमें वैसे ही उसपर क्रोध नहीं होता, जैसे दाँतोंसे जीभ कट जानेपर दाँतोंपर क्रोध नहीं होता।

– – –

याद रखो—भगवान्में स्थित रहकर अथवा सर्वात्मारूपसे विराजमान भगवान्की ओर देखता हुआ जो जगत्में व्यवहार करता है उसका प्रत्येक कर्म भगवान्की पूजा होता है। वही यथार्थमें सर्वरूपोंमें विराजमान भगवान्का सर्वत्र पूजन कर सकता है। किसी भी देश, किसी भी काल और किसी भी पात्रमें उसके भगवान् उसकी आँखोंसे कभी ओझल नहीं होते, वह सर्वत्र उनको देख-देखकर श्रद्धावनत मस्तकसे प्रणाम करता है और उनकी विचित्र स्वरूपाकृतियों और भावभङ्गिमाओंको देख-देखकर मुग्ध होता रहता है। यदि तुम इस प्रकार सर्वत्र भगवान्को देख सको तो तुम्हारा भी विषय व्यवहार समरूप भगवान्की समरूप पूजामें परिणत हो जायगा।

– – –

याद रखो—जगत्‌में विषमता कभी मिट नहीं सकती। जगत् भगवान्‌का लीलाक्षेत्र है। लीलामें समता हो जाय तो लीला ही न रहे। जगत्‌में यदि प्रकृति सम्यभावको प्राप्त हो जाय तो जगत् ही न रहे। अतएव भगवान्‌की लीला के लिये चित्र-विचित्र विभिन्न भावों, गुणों, आकृतियों और क्रियाओंकी आवश्यकता है। पर इन सारे भावों, गुणों, आकृतियों और क्रियाओंमें सर्वत्र समभावसे भगवान् भरपूर हैं। जो इन भरपूर भगवान्‌को देखकर, पहचाकर जगत्‌में व्यवहार करता है, उसमें जगत्‌की दृष्टिसे व्यावहारिक यथायोग्य विषमता रहते हुए ही जिसका व्यवहार वस्तुतः समत्वपूर्ण होता है वहीं सच्चा साम्यवादी है; जिसका बाह्य विषम व्यवहार आभ्यान्तरिक समतासे उत्पन्न और समतासे युक्त है। पर जो केवल बाहरसे समव्यवहारका प्रयत्न करता है, अंदर विषमता रखता है, वह तो समताका रहस्य ही नहीं समझता। ऐसे विषमतासे उत्पन्न और विषमतासे युक्त साम्यवादसे सदा दूर रहो।

प्रशंसामें भूलो मत

याद रखो—ऐसा कोई मनुष्य नहीं है, जिससे कोई सद्‌गुण न हो तथा ऐसा भी कोई नहीं, जो दोषोंसे सर्वथा रहित हो। सभी गुण-दोषमय है। किसीमें दोष अधिक प्रकट हैं तो किसीके गुण। ये दोष-गुण प्रकट होते हैं अनेक बाहर कारणोंसे। हम किसीके सामने शुभ तथा सत-विषयोंको रखकर उनके सजातीय गुणोंको—जो छिपे हुए हैं, प्रकट कर सकते हैं और अशुभ तथा असत् विषयोंको रखकर उनके सजातीय दोषोंको प्रकट कर सकते हैं। गुण प्रकट होनेपर उन्हींके अनुसार क्रिया होती है, जिससे उसका तथा उसके सम्पर्कमें आनेवाले सभीका न्यूनाधिक हित होता है और सुख मिलता है। दोष प्रकट होनेपर भी उन्हीं के अनुसार क्रिया होकर उसका तथा जगत्‌के लोगोंका अहित होता है और उन्हें दुःख मिलता है। अतएव ऐसी कोई चेष्टा मत करो, जिससे किसीके अंदर छिपी हुई बुराई प्रकट हो और वह बुरा बन जाय। अपने सदाचरणोंके द्वारा मनुष्यके अंदर सोये हुए सद्‌गुणोंको जगाओ, बुरा अचारण करके दोषों-दुर्गुणोंको मत जगाओ।

– – –

याद रखो—निन्दा-चुगली करके, गाली देकर या चुभनेवाली बात सुनकर अहित और अप्रिय आचरण करके एवं क्रोध, मान या लोभवश अन्यान्य आचरण करके किसी के अंदर सोयी हुई बुराईको जगाओगे और बढ़ा दोगे तो तुम जगत्‌का बड़ा अमंगल करोगे। फलतः तुम्हारा भी अमंगल निश्चिय होगा। इसी प्रकार यदि तुम सच्ची प्रशंसा करके मधुर-प्रिय बात सुनाकर हितपूर्ण प्रिय आचरण करके प्रेम, सौहार्द और हितबुद्धिसे न्यायपूर्ण और प्रेमपूर्ण आचरण करके किसीके अंदर सोयी हुई भलाईको जगा दोगे तो तुम जगत्‌का मंगल करोगे और फलतः तुम्हारा भी मंगल अवश्य होगा।

– – –

याद रखो—जैसा बीज होता है, वैसा ही फल होता है। भलाईके बीज बोओगे तो भलाई पैदा होगी और वह अनन्तगुनी होकर दूर-दूरतक फैल जायगी। इसलिये यदि किसी में बुराई प्रकट है और वह तुम्हारे साथ भी बुरा बर्ताव कर रहा है, तब भी उसके साथ भलाईका भला बर्ताव करो। भलाईकी इतनी प्रबल धार हो कि उसमें उसके बुराईके सब पौधे समूल बह जायँ। फिर उनके स्थानमें तुम अपनी भलाईके बीज बिखेर दो-प्रचुर मात्रामें, जो निश्चितरूपसे

भलाई-ही-भलाई उत्पन्न कर दे।

– – –

याद रखो—यदि लोग बुराईके बदले बुराई करना छोड़ दें तो बुराई की परम्परा कुछ ही समयमें नष्ट हो जायगी और फिर सभीमें सब ओर भलाई-ही-भलाई भर जायगी, क्योंकि बुराई-से-बुराई और भलाई-से-भलाई उत्पन्न होती है। इसलिये बुराई करनेवाले के साथ जी भरकर भलाई करो, निन्दा करनेवालेमें भी गुणोंको खोजकर उनकी तारीफ करो, गाली देनेवालोंको आशीर्वाद दो, मारनेवालोके लिये भगवान्से प्रार्थना करो और अपने मनको सदा ही सद्भावनासे भरा रखो—जिसमें वह किसीकी बुराईके बदलेमें बुराई करनेकी कल्पना भी न कर सके।

– – –

याद रखो—जो लोग तुम्हारी निन्दा करते हैं, वे चाहे किसी कारणसे करते हों, तुम्हारा भला ही करते हैं, और उनकी की हुई निन्दामेंसे अधिकांश सत्य होती है तथा प्रशंसा करनेवालोंकी प्रशंसामें अधिकांश झूठी होती है। गहराईसे देखोगे तो इसका स्पष्ट पता चल जायगा। अतएव प्रशंसामें भूलकर भी भूलो मत, भूलो मत और निन्दामें दु:खी मत होओ। वरं निन्दापर विचार करो और उसमें जितनी सत्यता हो उसका तुरंत संशोधन करके निन्दकका उपकार मानो और बदलेमें उसकी नि:स्वार्थ सेवा करनेका शुद्ध प्रयत्न करो।

सच्चे संत

याद रखो—सच्चे संत भगवत्स्वरूप ही होते हैं। भगवान्की भाँति संत भी स्वभावसे सब हैं, सब उन्हींमें हैं, वे सबमें हैं, सबके हैं और सबसे पृथक् भी हैं। यह सब इसीलिये कि वे भगवान्को प्राप्त हैं।

– – –

याद रखो—सच्चे संत विश्वके आधार हैं, विश्वके आराध्य हैं, विश्वरूप हैं, विश्वकी रक्षा हैं और विश्वकी शोभा हैं। वे धर्मके आधार हैं, धर्मस्वरूप हैं, धर्ममय हैं और धर्मकी रक्षा हैं। उनके द्वारा स्वभावसे ही ऐसी क्रियाएँ होती हैं, जिनसे विश्व तथा धर्मकी रक्षा होती रहती है। इतनेपर भी वे विश्वसे सदा परे होते हैं।

– – –

याद रखो—संतमें अहंकारका लेश भी नहीं होता। इसीसे वे अपने पुरुषार्थसे भगवत्प्राप्तिका दावा नहीं करते। वे भगवत्प्राप्तिमें भगवत्कृपाको ही मुख्य मानते हैं। उनका पुरुषार्थ वस्तुत: भगवत्कृपासे ही संचालित और उससे अभिन्न होता है।

– – –

याद रखो—संत भगवान्की ही भाँति दयाके समुद्र होते हैं, वे स्वभावसे ही सबके सुहृद् होते हैं। उनकी दयामें न कायरता होती है न ममता, न स्वार्थ होता है न भय, न कामना होती है न अभिमान। जैसे सूर्य स्वभावसे ही विश्वको प्रकाश देता है, वैसे ही संत विश्वके प्राणियोंपर दया करते हैं। पर संत बड़े दूरदर्शी या सर्वदर्शी होते हैं। अत: उनकी दया भी परिणामके यथार्थ हितको ही देखती है। इसलिये संत अत्यन्त मृदुस्वभाव तथा नित्य दयासे द्रवित रहनेपर भी कहीं-कहीं वज्रसे भी कठोर प्रतीत होते हैं।

— — —

याद रखो—संत सर्वथा समभावापन्न, समतामय, मूर्तिमान समत्व ही होते हैं। वे किसीमें कुछ भी आसक्ति न रखते हुए भी सबके प्रति निश्छल प्रेम करते हैं। साधारण मनुष्यको शरीरसे चाहे किसी भी अंगमें कोई सुख-दु:ख हो, जैसे उसकी समान रूपसे अनुभूति होती है; क्योंकि उसकी समस्त शरीरमें अहंकार और ममतायुक्त समता होती है। वैसे ही संतकी समस्त जीव-समूहोंमें अहंकार और ममता से रहित स्वभाविक समता होती है। वे दूसरे समस्त जीवोंके सुख-दु:खमें सुखी-दु:खी-से होकर प्राणोंकी बलि देकर भी उनके दु:खोंको दूर करते और सुखों को बढ़ाते है। विषयी लोग जहाँ अपने भ्रमात्मक स्वार्थके लिये दूसरेका चाहे जैसा अहित करनेमें भी नहीं सकुचाते, ठीक इसके विपरीत वे संतजन दूसरोंके यथार्थ हितके लिये हँसते-हँसते अपने शरी तथा जगत्‌के माने हुए सर्वस्वको न्योछावर कर देते हैं। पर अपने ऊपर आये हुए सुख-दु:खकी ओर वे दृष्टिपात ही नहीं करते। उनके ऐसे व्यवहारमें विषमता दीखनेपर भी उनके अंदर नित्य निर्दोष समता रहती है। न तो उन्हें कोई बड़े-से-बड़ा सुख ही विचलित कर सकता है और न भयानक-से-भयानक दारुण दु:ख ही।

— — —

याद रखो—मान-अपमान, स्तुति-निन्दा और लाभ-हानि सभी द्वन्द्वोंमें संत सम रहते हैं। वे मान, स्तुति तथा लाभमें हर्षसे फूलते नहीं और अपमान, निन्दा तथा हानिमें विषादसे अपने स्वरूपको भूलते नहीं; पर यथायोग्य व्यवहार करनेमें सकुचाते भी नहीं। न तो वे मान, स्तुति ओर लाभको स्वीकार करनेमें डरते हैं और न अपमान, निन्दा और हानिका प्रतीकार करनेमें ही स्वरूपकी हानि समझते हैं। ऐसा करते हुए भी वे इनसे सदा परे, निर्लिप्त तथा नित्य निर्विकार रहते हैं।

— — —

याद रखो—संत स्वभावसे ही क्षमा, प्रेम, संतोष, कल्याण, करुणा और सदाचार की मूर्ति होते हैं। वे सर्वदा संतापहीन, आनन्दमय तथा शान्तिके भण्डार हाते हैं और अपने स्वाभाविक आचरणोंके द्वारा जगत्‌के प्राणियोंका संताप हरते हुए उनमें क्षमा, प्रेम, संतोष, कल्याण, करुणा, सदाचार, आनन्द और शान्तिका प्रचार-प्रसार और विस्तार करते रहते हैं।

— — —

याद रखो—संतोंके लिये कुछ भी कर्तव्य या विधि-निषेद न होनेपर भी वे बड़े कर्तव्यपरायण और विधिका अनुसरण करनेवाले होते हैं। उनमें बसी हुई लोककल्याणकारिणी वृत्ति उनके द्वारा निरन्तर ऐसे कार्य करवाती है, जिससे जगत्‌का कल्याण हो। वे वृत्तियोंसे परे नित्य स्वरूपस्थित रहते हुए ही सावधान साधककी भाँति सदा शुभ आचरण करते हैं तथा ग्रहण-त्यागकी परिधिसे परे होते हुए ही शुभका ग्रहण और अशुभ का त्याग करते हैं। इसलिये उनका जीवन अन्य लोगोंके लिये आदर्श होता है।

— — —

याद रखो—सभी सच्चे संत अंदरसे वस्तुत: ऐसे होनेपर भी सबके बाहरी आचरण ऐसे ही हों—एक-से ही हों, यह आवश्यक नहीं है।

भगवान् मङ्गलमय

निश्चय करो— मेरे मनें सदा-सर्वदा मंगलमय भगवान् निवास करते हैं। उसके समस्त दिव्य गुण और भाव मेरे मनमें सदा तरङ्गित हो रहे हैं। अब मैं उनके सिवा मनमें किसी भी अन्य वस्तुको और किसी भी बुरे विचार और भावको नहीं आने दूँगा।

– – –

निश्चय करो—मैं सर्वत्र भगवान् और उनके मंगलमय भावोंको देखूँगा। सदा सद्विचार करूँगा, मेरे मुखसे सदा भगवान्की महिमाको बतानेवाले, सबका हित करनेवाले, सुख पहुँचानेवाले सत्य, मधुर और पवित्र वचन ही निकलेंगे।

– – –

निश्चय करो—मैं कभी कोई ऐसा काम नहीं करूँग, जो श्रीभगवान्की प्रसन्नताका कारण न हो। सदा उनकी सेवाके लिये ही उनकी प्रीतिकर कर्म करूँगा। मेरी इच्छा सदा उन्हीं कर्मोंके करनेवाली होगी, जिनसे भगवान् और उन्हींके अभिव्यक्त रूप जगत्के प्राणियोंको सुख होता हो।

– – –

निश्चय करो—मुझे कभी भी सद्विचार तथा सत्कर्मको छोड़कर अन्य किसी भी विचार तथा कर्मके लिये अवकाश ही नहीं मिलेगा। मन तथा शरीर नित्य भगवान्की सेवामें ही लगे रहेंगे। एक क्षणका भी सेवा-वियोग मुझको सहन नहीं होगा।

– – –

निश्चय करो—मेरा कभी कोई अमङ्गल नहीं हो सकता, मेरा कभी कोई बुरा नहीं कर सकता, क्योंकि सभीमें सभी समय मेरे भगवान् ही निवास करते हैं और मेरे लिये जो कुछ भी जिस-किसीके द्वारा भी होता है, सब भगवान्के मङ्गलमय विधानसे मेरे मङ्गलयके लिये ही होता है।

– – –

निश्चय करो—संसारमें मुझको कोई भी मनुष्य या घटना कभी भी निरश या उदास नहीं कर सकते; क्योंकि मेरे परम सुहृद् भगवान् नित्य स्वाभाविक ही मेरा मङ्गल करते रहते हैं और जब सर्वशक्तिमान्, सर्वत्र विराजमान मेरे प्रभु मेरे मङ्गल-विधानमें संलग्न हैं, तब सफलतामें संदेहको स्थान ही कहाँ है, जिससे निराशा और उदासीकी सम्भावना हो।

– – –

निश्चय करो—जब भगवान्के मङ्गलमय राज्यमें अमङ्गलको स्थान ही नहीं है, तब अमङ्गलकी कल्पना करके मैं क्या व्यर्थ ही अमङ्गलको बुलाऊँ?

– – –

निश्चय करो—जब सभीमें मेरे भगवान् भरे हैं, तब सभी मङ्गलसे ही ओत-प्रोत हैं। फिर मैं किसीमें अमङ्गलके दर्शन करके इस सत्यका हनन क्यों करूँ?

— — —

निश्चय करो—जब सर्वत्र और सदा मङ्गल-ही-मङ्गल और आनन्द ही-आनन्द है, तब मैं सदा आनन्दमें ही निमग्न रहूँगा। जीवन-मृत्यु, लाभ-हानि, सुख-दुःख, मान-अपमान, स्तुति-निन्दा-किसी भी बाहरी अवस्थाका मेरी इस नित्य आनन्दमयी स्थितिपर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकेगा।

— — —

निश्चय करो—यहाँ जो तुम्हें दोष, दुःख अमङ्गल तथा अशुभ दीखता है, वह इसलिये दीखता है कि तुम सदा-सर्वत्र नित्य मङ्गलमय और आनन्दमय भगवान्‌को नहीं देख पा रहे हो। यहाँ जो कुछ ऊपरसे दीखता है—वह उन मङ्गलमय भगवान्‌के ही विभिन्न छद्‌वेष हैं। उन्हींकी लीलाके विविध दृश्य हैं। इनकी आड़में नित्यानन्दघनस्वरूप भगवान् सदा विराजमान हैं।

— — —

निश्चय करो—तुम अशुभकी कल्पना करते हो। इसीसे तुम्हें दुःख होता है। किसी भी अशुभ-से-अशुभ कहे और माने जानेवाले पदार्थ और भावमें भी, गहराईसे देखोगे तो तुम्हें परम शुद्ध और परमसुखस्वरूप भगवान् छिपे दिखाई देंगे। जहाँ जाओ, जहाँ देखो, उन्हें ही देखनेका प्रयत्न करो। अपनी तीक्ष्ण दृष्टिसे उन्हीं का अनुसन्धान करो। उन्हें पहचान लो और निहाल हो जाओ।

निन्दासे उद्विग्न न होनेवाले भाग्यवान् हैं

याद रखो—तुम्हारी निन्दा करनेवालोंमें अधिकांश सच्चे हैं और अनजानमें ही तुम्हारा हित कर रहे हैं; पर जो तुम्हारी प्रशंसा करते हैं, उस प्रशंसामें अधिकतर अत्युक्ति होती है और उससे तुम्हारी हानि होती है। अतएव निन्दासे घबराओ मत, न निन्दा करनेवालोंसे द्वेष करो और न उनको अपना वैरी समझो। धीरतासे विचार करो कि वे तुम्हारे उन दोषोंको, जिनका तुम्हें पता नहीं है, खोज-खोजकर निकालते और तुम्हारे सामने रखते हैं। अपने उन दोषोंको देखो, उन्हें दूर करनेकी चेष्टा करो एवं निन्दा करनेवालोंका उपकार मानो। इसी प्रकार प्रशंसा सुनकर फूल न जाओ, संकोच करो। अपनी असली स्थितिपर-जिसको तुम अच्छी तरह जानते हो, विचार करो और उससे अधिक कही जानेवाली बातें तुम्हारे लिये अहितकर हैं—इस बातका निश्चय करके प्रशंसकोंसे दूर रहो। उन्हें अधिक मुँह मत लगाओ, पर तिरस्कार भी न करो और निन्दनीय काम न करके कौशलसे एक ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दो, जिसमें तुम्हारी प्रशंसा होनी बंद हो जाय।

याद रखो—आत्माका निन्दा तथा प्रशंसासे कोई सम्बन्ध ही नहीं है। निन्दा-प्रशंसा होती है नाम तथा रूपकी। नाम और रूप दोनों ही तुम नहीं हो। आत्मस्वरूप तुमपर इनका आरोप किया गया है। ये बदलनेवाले हैं और अनित्य हैं। इनकी निन्दा-स्तुतिसे तुम्हारा वास्तवमें कुछ भी बिगड़ता-बनता नहीं है। अतः इनके सम्बन्धमें लोग कुछ भी कहें-सुनें, तुम उसकी ओर ध्यान ही मत दो। निरन्तर ध्यान रखो अपने मूल परमात्मा-स्वरूपकी ओर—जो नित्य है, शाश्वत है, निन्दा-स्तुतिसे परे है और सदा तुमसे अभिन्न है।

याद रखो—जबतक मिथ्या अभिमानवश तुम शरीर और नामको अपना स्वरूप माने हुए हो, तभीतक तुम्हें इनकी स्तुति-निन्दा और मानापमानसे सुख-दुःख होते हैं। जिस दिन तुम अपनेको इनसे परे समझकर इनमें होनेवाली

चेष्टाओंके द्रष्टा बन जाओगे, उसी दिन तुम इस कल्पित सुख-दु:खसे भी परे हो जाओगे। तुम्हारे अखण्ड नित्य आनन्दमय स्वरूपमें ये विकारी सुख-दु:ख हैं ही नहीं।

याद रखो— तुम्हारे आत्मस्वरूपमें कोई भी विकार नहीं है; वह सर्वथा विशुद्ध है। व्यावहारिक जगत्में कर्म करते समय तुम्हारी यदि इस आत्मस्वरूपमें स्थिति रहेगी तो व्यवहारमें यथायोग्य आचरण करते हुए भी तुम उससे अलग ही रहोगे। तथापि व्यावहारिक जगत्में इतना ख्याल तो अवश्य होना चाहिये कि व्यवहार आदर्श हो; शास्त्रानुमोदित हो तथा आत्मस्वरूपकी स्थितिसे विचलित करनेवाला न हो।

याद रखो—व्यावहारिक जगत्में तुमको जैसे दूसरोंके द्वारा होनेवाली निन्दा-स्तुतिसे उद्विग्न नहीं होना चाहिये, वैसे ही तुम्हें यथासाध्य दूसरोंकी निन्दा-स्तुतिमें प्रवृत्त भी नहीं होना चाहिये। कहीं आवश्यकतावश किसीकी सच्ची स्तुति करनी पड़े तो इतनी आपत्तिकी बात नहीं; परंतु किसीकी निन्दा करके तो कभी जीभको गंदा करना ही नहीं चाहिये। निन्दामें पापकी-मलकी ही बाढ़ आयेगी और वह तुम्हारी जीभसे लगकर उसे तो गंदा करेगी ही, जीभके द्वारा अंदर मन:प्रदेशमें जाकर वहाँ भी गंदगी फैलायेगी।

याद रखो—वे लोग बड़े ही भाग्यवान् हैं और सच्चे परमार्थसाधक हैं, जो किसीके द्वारा निन्दा सुनकर उद्विग्न नहीं होते, प्रशंसा सुनकर हर्षित नहीं होते और स्वयं न तो जिन्हें किसीमें दोष दीखता है, न जिनकी जीभ क्षणभरके लिए भी किसीकी निन्दा करनेमें प्रवृत्त होती है और न जिनके कान ही किसीकी निन्दा सुनना पसंद करते हैं।

एकमात्र प्रभुके शरण हो जाओ

याद रखो—संसारमें तुम्हारे लिये जो कुछ हो रहा है, सब दयामय, प्रेममय और न्यायकारी भगवान्की सुनिश्चित व्यवस्थाके अंदर उन्हींके मङ्गल-विधानसे हो रहा है। वे मङ्गलमय हैं, इसलिये उनके मङ्गल-विधानके मूल निर्झरसे सदा आनन्दका स्त्रोत बहता रहता है। प्रत्येक विपत्तिमें प्रतिकूलतामें, पीड़ामें, पराभवमें यहाँतक कि मृत्युमें भी उनकी मङ्गलमयता भरी रहती है। इस बातपर विश्वास कर लोगे तो तुम्हें तुरंत शान्ति मिल जायगी।

याद रखो—भगवान् तुम्हारे परम सुहृद् हैं, सर्वज्ञ हैं और सर्वशक्तिमान् हैं। उनके समान या उनसे बढ़कर तुम्हारा कल्याण चाहनेवाला, किस बातमें तुम्हारा यथार्थ कल्याण है, इस रहस्यको जाननेवाला और कल्याण करनेवाला दूसरा कोई नहीं है, इस बातपर विश्वास कर लोगे तो तुम्हें तुंरत शान्ति मिल जायगी।

याद रखो—जो कुछ भी दु:ख, अशान्ति और पाप है, सारा कामनामें हैं। कामनाका मूल है आसक्ति। आसक्तिका मूल है इस जड़ शरीर तथा नाममें मेरेपन का भाव। तुम अपनेको भगवान्के हाथका यन्त्र समझकर यदि कामना, आसक्ति, ममत्व और अहंकारका त्याग कर दोगे तो तुम्हें तुरंत शान्ति मिल जायगी।

याद रखो—जबतक विषयोंमें, कर्मोंमें और कर्मफलमें तुम्हारी ममता और आसक्ति है, जबतक तुम्हारे मनमें कामनाका अभाव नहीं हो सकता, न तबतक तुम कर्मफलका त्याग ही कर सकते हो। अतएव तुम यदि भगवान्के स्वरूपका महत्त्व समझकर ममता, आसक्ति और कामनाका त्याग कर दोगे तो तुम्हें तुरंत शान्ति मिल जायगी।

याद रखो—जबतक तुम्हारा मन विषयोंमें भटकता रहेगा और भगवान्में नहीं लगेगा, तबतक तुम कभी शान्त और सुखी नहीं हो सकोगे; पर भजनका अभ्यास बढ़ाकर यदि तुम मनको अपने वशमें कर लोगे और उसे श्रीभगवान् के स्वरूपचिनतनमें लगा दोगे तो तुम्हें तुरंत शान्ति मिल जायगी।

याद रखो—पापका अभ्यास बहुत बुरा होता है, परंतु जबतक मनुष्यकी पापबुद्धि है; पाप बन जानेपर उसके मनमें पश्चाताप होता है, तबतक वह पापोंसे बचनेका प्रयत्न करता है और अन्तमें एकमात्र भगवान् ही पापोद्धार और परम शरण्य हैं, ऐसा निश्चय करके अशरणशरण पतितपावन भगवान्को पुकारता है। पश्चात्तापयुक्त पापीके लिये दयामय भगवान्का द्वार सदा खुला रहता है। वे उसे शरण देकर अपना लेते हैं और उनके अपनाते ही वह पापमुक्त होकर ध र्मात्मा बन जाता है तथा सनातन शान्तिको पा जाता है। अतएव तुम भी यदि इसी प्रकार भगवान्पर अनन्य विश्वास करके उनका भजन करोगे तो तुम्हें तुरंत शान्ति मिल जायगी।

याद रखो—भगवान्के स्वरूप-तत्त्वको जाने बिना मनुष्य दु:ख-सागरसे नहीं तर सकता; इस ज्ञानकी प्राप्तिमें सबसे पहली आवश्यकता वस्तु है श्रद्धा। श्रद्धासे तत्परता आती है और तत्परतासे इन्द्रियोंका संयम होता है। अत: यदि तुम 'भगवान्के स्वरूपमें', 'उनका स्वरूपज्ञान साधकके प्राप्त होता है' इस सिद्धान्तमें और 'तुमको अवश्य प्राप्त हो सकता है' इस अपनी योग्यतामें श्रद्धा प्राप्त कर लोगे तो तुम्हें वह ज्ञान प्राप्त हो जायगा और तुरंत शान्ति मिल जायगी।

याद रखो—भगवान्की अनन्य शरणागति ऐसा महान् साधन है जो मनुष्यको सारे पाप-तापोंसे मुक्त करके अनायास ही परम शान्तिका अधिकारी बना देता है, अतएव सारी आशाओं और सारे भरोसोंको छोड़कर एकमात्र प्रभुके शरण हो जाओ, फिर तुम्हें तुंरत ही आत्यान्तिक और शाश्वती शान्ति मिल जायगी।

विचारोंका नियन्त्रण

याद रखो—मनुष्यके जैसे विचार होते हैं, यथार्थमें वैसा ही उसका स्वरूप होता है। बाहरसे कोई मनुष्य कितनी ही ऊँची ज्ञानकी, भक्तिकी या वैराग्यकी बातें क्यों न करें, जबतक उसके भीतरी विचार वैसे नहीं हैं, तबतक उसमें न वस्तुत: ज्ञान है, न भक्ति है और न वैराग्य ही है।

याद रखो—विचारोंका परिवर्तन केवल कथनमात्रसे नहीं हो जाता। उसके लिए दीर्घकालतक निरन्तर श्रद्धापूर्वक अभ्यास कनेकी आवश्यकता होती है। तुम्हारे अन्दर जो-जो बुरे विचार हों, उन-उनके विरोधी अच्छे विचारोंका बार-बार मनन करो। विषयोंकी आसक्ति दूर करनेके लिये उनमें दु:ख-दोषादि देखकर वैराग्यका अभ्यास करो; स्त्री या पुरुषके रूप-सौन्दर्यके मोहका तथा कामनावासनाका नाश करनेके लिये शरीरके अंदर भरे हुए गंदे पदार्थ—रक्त, मांस, मेद, मज्जा, हड्डी, विष्ठा, मूत्र और कफ आदिका विचार करो, सड़े मुर्देका चित्र मनके सामने रखो; दूसरेके दोषोंका चिन्तन दूर करनेके लिये दूसरोंके गुणोंको खोज-खोजकर देखो और अपने दोषोंपर दृष्टिपात करो, क्रोधका नाश करनके लिये क्षमाका उपयोग करो, लोभको हटानेके लिये लोभी मनुष्योंको विपत्तिमें फँसकर परिणाममें जो भयानक दु:ख भोगने पड़ते हैं, उनपर विचार करो, शोक-विषादके नाशके लिये भगवान्के मङ्गलमय विधानपर विश्वास करो और पाप-वासनाओंके नाशके लिये नरकोंकी भीषण यन्त्रणाओंका स्मरण करो।

याद रखो—मनके प्रधान पाँच दोष हैं—विषाद, क्रूरता, व्यर्थ-चिन्तन, निरंकुशता और गंदे विचार। विरोध विशुद्ध विचारोंके द्वारा इनका नाश करो। प्रसन्नता, सौम्यत्व, मानसिक मौन, मनोनिग्रह और शुद्ध भावोंका परिशीलन इनके विरोधी विचार हैं। भगवान्के मङ्गलमय विधानसे जो कुछ फलरूपमें प्राप्त होता है, सब मङ्गलमय ही है, चाहे देखनेमें भयानक ही हो, ऐसा विश्वास हो जानेपर प्रत्येक स्थितिमें प्रसन्नता रहेगी। तुम्हारे साथ कोई क्रूरतासे बर्ताव करे, तो तुम्हें कितना बुरा लगता है और शान्त-सौम्य व्यवहारसे कितना सुख होता है, इसी प्रकार तुम्हारी क्रूरता लोगोंको बुरी

लगती है और तुम्हारी सौम्यतासे उनको सुख होता है। इस प्रकारके विचारसे सौम्यता आयेगी। दिन-रात संसारके अनुकूल-प्रतिकूल विषयोंका चिन्तन करते रहनेसे चित्तमें कभी शान्ति नहीं होती, अतएव इसके बदलेमें प्रभुके मङ्गलमय नाम, गुण, लीला, तत्त्व, रहस्य आदिका चिन्तन-मनन सदा-सर्वदा करते रहनेसे विषयोंके लिये मन मौन हो जायगा। जबतक मन वशमें नहीं है तबतक वह जहाँ-तहाँ भटकता और अशुद्ध संकल्प-विकल्पोंमें पड़कर नये-नये दु:खों की सृष्टि करता रहता है, मन वास्तवमें तुम्हारा (आत्माका) सेवक है, स्वामी नहीं, इस बातको अच्छी तरह समझकर मनको वशमें कर लोगे तो वह तुम्हारे नियन्त्रणमें आकर प्रत्येक शुभ प्रयत्नमें तुम्हारा सहायता बन जायगा। और मनमें जो काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, हिंसा, असत्य, स्तेय और मान आदिके अशुभ भाव भरे हैं, इनके कारण इनके अनुकूल ऐसी ही क्रिया बनती है और जीवन अशुभका मूर्तिमान् रूप बन जाता है, इन दुर्भावोंकी जगह ब्रह्मचर्य, क्षमा, संतोष, विवेक, विनय, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अमानिता आदिके स्वरूप, गुण और लाभोंका चिन्तन किया जाय तो चित्त शुद्ध भावोंसे भर जायगा। इस प्रकार जब चित्तमें ये पाँचों बातें भलीभाँति आ जायँगी, तब तुम्हारा मानसतप सिद्ध हो जायगा। फिर तुम्हारा बाहरी व्यवहार भी वैसा ही विशुद्ध होगा।

याद रखो—विचारोंके नियन्त्रणके लिये सबसे बढ़कर उपयोगी साधन है—आत्मशक्तिपर या सर्वशक्तिमान् परम सुहृद् भगवान्‌की कृपापर दृढ़ विश्वास। यह विश्वास जितना ही बढ़ेगा, उतना ही शीघ्र और सरलतासे मनुष्य अपने मनोगत अशुभ विचारोंके नाश और शुभ विचारोंके विस्तारमें समर्थ होगा। आत्मा और भगवान्‌पर विश्वास करनेवाले पुरुषके मनसे देहाभिमान, स्थूल अहंकार, भौतिक बलका आश्रय आदि दूषित और गिरानेवाले भाव नष्ट हो जाते हैं।

मनको भगवत्चिन्तनमें लगाइये

याद रखो—निकम्मा मन प्रमाद करता है। जबतक वह किसी दायित्वपूर्ण कार्यमें लगा रहेगा, तबतक उसे व्यर्थ, अनावश्यक तथा न करनेयोग्य बातोंके सोचनेका अवसर ही नहीं मिलेगा; पर जहाँ दायित्वके कामसे छुटकारा मिला—स्वच्छन्द हुआ कि मन उन विषयोंको सोचेगा, जिनका स्मरण भी उसे कार्यके समय नहीं होता था।

याद रखो—जब नया साधक ध्यानका अभ्यास करता है, तब उसके सामने सबसे बड़ी एक यही कठिनाई आती है कि अन्य समय जिन सड़ी-गली गंदी और भयावनी बातोंकी उसे कल्पना भी नहीं होती, वे ही उस समय याद आती हैं और वह घबरा-सा जाता है। इसका कारण यह है कि वह जिस वस्तुका ध्यान करना चाहता है, उसमें तो मन अभ्यस्त नहीं है और जिन विषयोंमें अभ्यस्त है, उनसे उसे हटा दिया गया है; ऐसी हालतमें वह निकम्मा हो जाता है; पर निकम्मा रहना उसे आता नहीं, इसलिये वह उन पुराने चित्रोंको उधेड़ने लगता है, जो उसपर संस्काररूपसे अंकित है और जिनके उधेड़नेका उसे अन्य दायित्वपूर्ण कार्योंमें संलग्न रहते समय अवसर नहीं मिलता है।

याद रखो—यदि साधक इस स्थितिमें घबराकर ध्यानके अभ्यासको नहीं छोड़ बैठेगा और लगनके साथ अभ्यास करता रहेगा तो कुछ ही समय के बाद अभ्यास दृढ़ हो जानेपर ध्येय वस्तुके स्वरूपमें रम जायगा और फिर तदाकार भी हो जायगा।

याद रखो—प्रमादी मनवाला मनुष्य ही ऐसे काम कर बैठता है, जो उसे नहीं करने चाहिये। प्रमादका अर्थ ही है—करनेयोग्य कर्मका न करना और न करनेयोग्यका करना। इसलिये मनको निरन्तर शुभ चिन्तनमें लगाये रखो और उसका उसपर इतना दायित्व थोप दो कि यह काम तुम्हें अवश्य करना है एवं सुन्दर सुव्यवस्थित रूपसे करना है।

कार्यमें इतना संलग्न रहना चाहिये कि उसीका चिन्तन करते-करते नींद आ जाय और उठते ही फिर उसीका चिन्तन हो। ऐसा होनेपर तदाकार-वृत्ति शीघ्र और सहज होती है।

याद रखो—नये विषयमें लगनेसे मन एक बार घबराता है, रुकता है, ऊबता है और कभी-कभी प्रबलरूपसे उसे अस्वकार भी कर देता है, परंतु इससे घबराओ मत। गाय पहले-पहले नयी जगह, नये खूँटेपर बँधनेसे इन्कार करती है, चाहे वह नयी जगह उसके लिये पहलीकी अपेक्षा कितनी ही अधिक सुखप्रद क्यों न हो, जरा-सी रस्सी ढीली होते ही या अवसर पाते ही भागकर पुरानी जगह पहुँच जाती है। इसी प्रकार मन भी नये विचारमें लगना नहीं चाहता और इसी कारण विषय-चिन्तनमें अभ्यस्त मन भगवत्चिन्तनमें लगनेसे घबराता है, रुकता, उकताता और इन्कार करता है। पर यदि निराश न होकर उसे निरन्तर लगाते जाओगे तो वह विषय-चिन्तनको छोड़कर भगवत्चिन्तनमें वैसे ही लग जायगा, जैसे गौ कुछ दिनों बाद पुरानी जगहको भूलकर नयी जगहमें ही रम जाती है।

याद रखो—जीवका विषय-चिन्तनका अभ्यास बहुत पुराना है। उसे छुड़ाकर भगवत्चिन्तनमें लगानेमें यदि एक मानव-जीवनका आधेसे अधिक काल भी लग जाय तो भी बहुत थोड़ा ही है। मन बड़ा दुर्निग्रह और चंचल है, पर अभ्यास (नूतन-वस्तु—भगवत्चिन्तनमें बराबर लगाने) और वैराग्य (पुराने विषय-चिन्तनके दुःख-दोष दिखा-दिखाकर उससे हटाने) का सावधानीके साथ सतत प्रयोग करनेपर वह भगवत्चिन्तनपरायण हो ही जायगा। फिर किसी भी प्रमादकी आशंका या सम्भावना नहीं रहेगी।

त्यागसे शान्ति

याद रखो—संसारके भोगोंमें सुख है ही नहीं, जो वस्तु जहाँ नहीं है, वह वहाँ कैसे मिलेगी। ढूँढ़ते रहो, दर-दर भटकते रहो, सिर पटकते रहो, सर्वत्र और सदा। अन्तमें निराशा, निर्वेद और व्यथाके ही थपेड़े लगेंगे। सुख, सच्चा और स्थायी सुख तो है—भगवान्‌में और उन भगवान्‌की प्राप्ति होती है त्यागसे।

याद रखो—जो पुरुष त्यागसे प्राप्त होनेवाली निर्मल सुखका अनुभव करता है, वह भोगोंकी ओर कभी आँख उठाकर देखता ही नहीं। हाँ, भोगोंके प्रचुर प्रलोभन भाँति-भाँतिसे सज-धजकर उसके सामने स्वयमेव आते हैं उसे अपनी ओर खींचनेके लिये, परंतु वह उन्हें उसी प्रकार ठुकरा देता है जैसे बहुमूल्य रत्नोंको पा जानेवाला मनुष्य रंग-बिरंगे काँच-पत्थरोंको।

याद रखो—त्यागीको अपनी संतोषमयी वृत्तिसे और त्यागभरी स्थितिसे जो सुख प्राप्त होता है, उसकी तुलनामें भोगोंके-धन, मान, यश, आराम, अधिकार आदिके सभी सुख सर्वथा तुच्छ और नगण्य है।

सच्ची बात तो यह है कि भोग-सुख वस्तुतः सुख ही नहीं है। बुद्धिहीन मनुष्योंको भ्रमके कारण ही उसमें सुखकी प्रतीति होती है। असलमें तो उनसे दुःख ही उत्पन्न होते हैं, इससे बुद्धिमान् लोग भोगोंमें अपने मनको नहीं फँसने देते—

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः॥

(गीता 5/22)

याद रखो— जो वस्तु अनित्य, परिवर्तनशील और अपूर्ण है, उससे कभी सच्चा और स्थायी सुख मिल नहीं

सकता। इसीलिये आज जो किसी भोग-सामग्रीसे, धनसे, मानसे, संतानसे, सत्तासे अपनेको सुखी मानता है, वही कल रोता-बिलपता देखा जाता है।

याद रखो—त्यागमें पहले-पहले कुछ कठिनाई-सी लगती है, कुछ कर्कशता-सी प्रतीत होती है, इसीसे मन उससे भागना चाहता है, परंतु गहराई से विचार कर देखनेपर यह स्पष्ट हो जाता है कि जितनी कठिनाइयाँ, जितने क्लेश, जितनी कर्कशता और जितनी पीड़ा भोग-पदार्थोंकी प्राप्तिके साधनमें और प्राप्त होनेपर उसके संरक्षणमें हैं, उतनी त्यागमें कदापि नहीं हैं। वंर त्यागकी कठिनाई और भोगकी कठिनाईमें जातिगत बड़ा भेद है। त्यागकी कठिनाई सात्त्विक है और भोग की कठिनाईमें राजसिकता तथा तामसिकता है। त्यागकी कठिनाईका परिणाम परम अमृतकी प्राप्ति है और भोगकी कठिनाईका परिणाम विषमयी ज्वाला है, जो लोक-परलोकके जीवनको जलाकर सर्वथा यातनापूर्ण और जर्जरित कर देती है।

याद रखो—भोग भ्रमाते हैं और त्याग स्वरूपमें स्थित कराता है। भोगोंसे कभी न पूरी होनेवाली भयानक इच्छा, कामना और वासनाएँ उत्पन्न होती हैं, जिनसे सदा दु:ख-ही-दु:ख मिलते हैं एवं त्यागसे वे सब-की-सब क्षीण होती हैं तथा खुराक न मिलनेसे-ईंधनके अभावमें आग बुझ जानेके समान—स्वयमेव बुझ जाती हैं, मर जाती हैं।

याद रखो—त्यागसे जीवनमें शान्ति मिलती है—'**त्यागाच्छान्ति-रनन्तरम्**' और शान्तिसे मनुष्य परमानन्दस्वरूप परमात्माका साक्षात्कार करता है। भोगसे अशान्ति प्राप्त होती है और वह जीवको जबर्दस्ती नरकानलमें दग्ध होनेके लिये ले जाती है।

याद रखो—यदि तुम 'भोगोंमें सुख है' इस भ्रान्तिको त्यागकर भोगोंका मोह छोड़ दोगे तो शीघ्र ही सुखी हो जाओगे और तुम्हारा यह त्याग का सुखी जीवन तुम्हें भगवान्‌की ओर ले जायगा। एवं ऐसा करनेपर तुम्हें निश्चय ही भगवान्‌की प्राप्ति हो जायगी।

सारा जगत् भगवान्‌से भरा है

याद रखो—जगत्‌में जितने भी प्राणी हैं, सब तुम्हारे अपने आत्मा ही हैं, उनमें कोई भी पराया नहीं है, कोई भी दूसरा नहीं है। जैसे तुम्हारे एक ही शरीरके भिन्न-भिन्न अंग तुम्हारे शरीरके ही अवयव हैं, सबको लेकर ही शरीर है, इसी प्रकार सबको लेकर ही तुम हो।

याद रखो—तुम उन्हें अपना आत्मा न समझकर दूसरा समझते हो, इसीसे उनके सुख-दु:खसे उदासीन रहते हो। अपना समझते तो कभी ऐसा नहीं करते। क्या शरीरके किसी भी अंगमें चोट लगनेपर तुम यह मानते हो कि चोट किसी दूसरेको लगी है? क्या तुम्हें उसके लिये वेदनाका अनुभव नहीं होता? होता है। क्यों? इसीलिये कि तुम्हारा उन सबमें आत्मभाव है।

याद रखो—तुम सबके हितकी परवा न करे उन्हें कष्ट पहुँचाकर यदि केवल अपना भला चाहते हो, अपने लिये सुख चाहते हो तो न तो तुम्हारा कदापि भला होगा, न तुम्हें सुख ही मिलेगा। भला, अपने ही हाथों अपने अंगोंको काटकर क्या कोई सुखी हो सकती है?

याद रखो—समाज, जाति, सम्प्रदाय आदि भेद केवल समाजकी व्यवस्थाका सुचारुरूपसे संचालन हो और प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने मार्गसे चलकर जीवनके परम लक्ष्य भगवान्‌को प्राप्तकर सके इसके लिये है। और यह आवश्यक

तथा उचित भी है; परंतु इसका यह अर्थ कभी नहीं कि इस भेदसे आत्मामें कोई भेद आ जाता है। और एक-दूसरेके हितका नाश करके कोई सुखी हो सकता है।

याद रखो— जो व्यक्ति विश्वात्माके साथ अपनेको मिलाकर सारे विश्वके समस्त जीवोंको अपनेही रूपमें देखता है और सबके दु:ख-सुखको अपना ही दु:ख-सुख मानकर, जैसे अपने दु:खको दूर करनेकी और सुख प्राप्त करनेकी स्वाभाविक चेष्टा करता है, वैसे ही सबके लिये करने लगता है, उसका जीवन ही यथार्थ मनुष्य-जीवन है और वही जीवन धन्य है।

याद रखो—स्वार्थ जितना संकुचित होता है, उतना ही गंदा और हानिकारक होता है। जैसे छोटे-से गढ़ेमें एकत्र हुआ जल सड़ जाता है और उसमें कीड़े पड़ जाते हैं। यदि तुम्हारा स्वार्थ अखिल जगत्‌के स्वार्थके साथ मिल जाय, विश्वके प्राणियोंका स्वार्थ ही तुम्हारा स्वार्थ हो तो फिर तुम्हार वह स्वार्थ पवित्र और लाभदायक होगा। उससे स्वाभाविक ही विश्वात्मा भगवान्‌की पूजा होती रहेगी।

याद रखो— जो पुरुष यह अनुभव करता है कि सारा जगत्—जगत्‌के समस्त प्राणी मेरे भगवान्‌से ही निकले हैं और भगवान् ही सदा सबमें व्याप्त हैं, वह अपने प्रत्येक कर्मके द्वारा भगवान्‌को पूजकर जीवनको अनायास ही सफल कर सकता है। उसके लिये प्रत्येक जीवन भगवचान्‌का स्वरूप और उसका अपना प्रत्येक कर्म उस भगवान्‌की पूजा बन जाता है। और जिसके द्वारा निरन्तर भगवान्‌की पूजा ही होती है, उसको जीवनमें परम सिद्धि—भगवत्प्राप्ति हो जाय, इसमें सन्देह ही क्या है?

याद रखो—यदि तुम क्षुद्र सीमाको छोड़कर जाति, वर्ण, अधिकार, धन, देश आदिके भेदोंको आत्माके भेद न मानकर विश्वरूप भगवान्‌की पूजामें अपना जीवन लगा दोगे तो तुम्हें पद-पदपर और पल-पलमें भगवान्‌के दर्शन होंगे और तुम्हारा जीवन परम पवित्र तथा सबके लिये आदर्श बन जायगा।

काम-क्रोधादि स्वभाव नहीं, विकार हैं

याद रखो—काम, क्रोध, लोभ आदि तुम्हारे स्वभाव नहीं हैं विकार हैं। स्वभाव या प्रकृतिका परिवर्तन बहुत कठिन है, असम्भव-सा हैं; पर विकारोंका नाश तो प्रयत्नसाध्य है। इसीलिये भगवान्‌ने गीतामें 'ज्ञानी भी अपनी प्रकृतिके अनुसार चेष्टा करता है, प्रकृतिका निग्रह कोई क्या करेगा'—कहा है; पर साथ ही काम-क्रोध, लोभको आत्माका पतन करनेवाले और नरकोंके त्रिविध द्वार बतलाकर उन्हें त्याग करनेके लिये कहा है। इससे सिद्ध है कि ब्राह्मण-क्षत्रियादि प्रकृतिका त्याग बहुत ही कठिन है, पर काम-क्रोधादि विकारोंका त्याग कठिन नहीं है।

याद रखो—काम-क्रोधादि विकार तभीतक तुमपर अधिकार जमाये हुए हैं, जबतक इन्हें बलवान् मानकर तुमने निर्बलतापूर्वक इनकी अधीनता स्वीकार कर रखी हैं। जिस घड़ी तुम अपने स्वरूपको सँभालोगे और अपने नित्य-संगी परम सुहृद् भगवान्‌के अमोघ बलपर इन्हें ललकारोगे, उसी घड़ी ये तुम्हारे गुलाम बन जायँगे और जी छुड़ाकर भागनेका अवसर ढूँढ़ने लगेंगे।

याद रखो—ये विकार तो दूर रहे; ये जिनमें अपना अड्डा जमाकर रहते हैं और जहाँ अपना साम्राज्य-विस्तार किया करते हैं, वे इन्द्रिय-मन भी तुम्हारे अनुचर हैं। तुम्हारी आज्ञाका अनुसरण करनेवाले हैं, पर तुमने उनको बड़ा प्रबल मानकर अपनेको उनका गुलाम बना रखा है, इसीसे वे तुम्हें इच्छानुसार नचाते हैं और दुर्गतिके गर्तमें गिराते हैं।

याद रखो—जितने भी बुरे कर्म होते हैं, उनमें ये काम-क्रोध आदि विकार ही प्रधान कारण हैं। ये ही तुम्हारे प्रबल शत्रु हैं, जिनको तुमने अपने अंदर बसा ही नहीं रखा है, बल्कि उनके पालन-पोषण और संरक्षणमें भ्रमवश तुम गौरव तथा सुखका अनुभव करते हो।

याद रखो—ये काम, क्रोध, लोभ और इनके साथी-संगी मान, अभिमान, दर्प, दम्भ, मोह, कपट, असत्य और हिंसा आदि दोष जबतक मानव-जीवनको कलुषित करते रहेंगे, तबतक उसका उद्धार होना अत्यन्त कठिन है; पर ये ऐसे प्रबल हैं कि प्रयत्न करनेपर भी सहजमें जाना नहीं चाहते।

याद रखो—ये कितने ही प्रबल क्यों न हो-आत्माके तथा भगवान्‌के बलके सामने इनका बल कोई भी स्थान नहीं रखता। जैसे सूर्याभाससे ही अन्धकारका नाश होने लगता है, वैसे ही भगवान्‌की शक्तिके प्रकाशका अरुणोदय इन्हें तत्काल नाश कर डालता है। उसके सामने ये खड़े भी नहीं रह सकते।

याद रखो— आत्मा तो तुम्हारा स्वरूप ही है और भगवान् उस आत्माके भी आत्मा हैं। आत्माके साथ उनकी सजातीयता तो है ही, एकात्मता भी है। अनुभूति होनेभरकी देर है, फिर तो इन विकारोंकी सत्ता वैसी ही रह जायगी, जैसी जागनेके बाद स्वप्नके पदार्थों की रह जाती है।

सांसारिक सुख-दुःख

याद रखो—सांसारिक सुख तुम्हारी उन्नतिका प्रतिबन्धक है, तुम्हारे विकासका वैरी है, तुम्हारे विवेकका नाशक है और तुम्हारे नये पापों और बन्धनोंका कारण है।

याद रखो— सांसारिक सुख तुम्हें सम्पत्तिपर गर्व कराना सिखाता है, तुम्हारी प्रवृत्तियोंको बहिर्मुखी करता है, तुम्हारी यथार्थ दृष्टिपर अज्ञानका पर्दा डाल देता है। और तुम्हारे सहज जीवन-प्रवाहका अवरोध करता है।

याद रखो— सांसारिक सुख तुम्हें ऐश्वर्यका गुलाम बनाता है, भविष्यकी सुखकल्पनाके भ्रमजालमें फँसाता है, तुम्हारे हृदयको कलुषित करता है और तुम्हें पतनकी ओर ले जाता है।

याद रखो— सांसारिक सुख तुम्हें ऐश्वर्यका गुलाम बनाता है, भविष्यकी सुखकल्पनाके भ्रमजालमें फँसाता है, तुम्हारे हृदयको कलुषित करता है और तुम्हें पतनकी ओर ले जाता है।

याद रखो— सांसारिक सुख विषयोंमें आसक्ति और कामनाको बढ़ाता है, बुद्धिको भ्रष्ट करता है, दीन और दु:खियोंके प्रति उपेक्षाके भाव जाग्रत् करता है और अधिकारी प्रबल लालसा उत्पन्न करता है।

याद रखो—सांसारिक सुख दूसरोंकी उन्नतिमें ईर्ष्या उत्पन्न करता है, मोहमुग्ध कर देता है, दूसरोंको मूर्ख और अपनेको बुद्धिमान् माननेके लिये आग्रह करता है और सहज ही श्रेष्ठ पुरुषोंका भी अपमान करवा देता है।

याद रखो—सांसारिक सुख मनुष्यकी दृष्टिको परम साध्यसे हटा देता है, विलास-भ्रमें जोड़ देता है, आत्मशक्तिको छिपा देता है और मानव-जीवनको विफल कर देता है।

याद रखो—सांसारिक सुख तुम्हें धर्मसे हटाता है, ईश्वरसे विमुख करता है; आत्माको अधोगति ले जाता है और नरकोंकी यन्त्रणा भोगनेको बाध्य करता है।

याद रखो—इसके विपरीत सांसारिक दु:ख उन्नतिमें सहायता है, विकासकी ओर ले जाता है, विवेकको जाग्रत्

करता है और पापोंका प्रायश्चित कराकर बन्धनोंको काटता है।

याद रखो— सांसारिक दु:ख तुम्हें सुकृतियोंपर गर्व करना सिखाता है, तुम्हारी प्रवृत्तियोंको अन्तर्मुखी करता है, यथार्थ दृष्टिको खोलता है और जीवन-प्रवाहको सीधा चलने देता है।

याद रखो—सांसारिक दु:ख तुम्हें मनको स्वामी बनाता है, भविष्यमें सच्चे सुखके साधन बतलाता है, हृदयको पवित्र और उदार बनता है तथा उत्कर्षकी ओर ले जाता है।

याद रखो—सांसारिक दु:ख वैराग्य और उपरतिको उत्पन्न करता है, बुद्धिको शुद्ध करता है, दीन-दु:खियोंके प्रति सहानुभूतिके भाव जाग्रत् करता है और अधिकारके केन्द्रसे हटाकर कर्तव्य-परायण बनाता हैं

याद रखो—सांसारिक दु:ख विनयी और नम्र बनाता है, मोह-निद्रासे जगाता है, दूसरोंके के प्रति सद्भाव पैदा करता है और श्रेष्ठ जनोंका सम्मान करना सिखाता है।

याद रखो—सांसारिक दु:ख साध्यका स्मरण कराता है, विलास-भ्रमका भंग कर देता है, आत्मशक्तिको प्रकाशित करता है और मानव-जीवनको सफलताकी ओर ले जाता है।

याद रखो— सांसारिक दु:ख तुम्हें धर्ममें लगाता है, ईश्वरके आश्रयमें ले जाता है, आत्माका उत्थान करता है औ नरक-यन्त्रणासे बचाकर सद्गति प्राप्त कराता है।

याद रखो—मोहके कारण ही तुम सांसारिक भोग-सुखोंको चाहते हो और सांसारिक दु:खोंको भयानक मानकर उनसे भागना चाहते हो। विश्वास करो, जो सुख भगवान्का विस्मरण कराकर भगवान्की ओर अरुचि उत्पन्न कर दे, उसके समान कोई भी हमारा शत्रु नहीं है। और जो दु:ख विषयोंसे हटाकर भगवान्की ओ लगा दे, उसके समान हमारा कोई मित्र नहीं है। इसी प्रकारके सुख-दु:खोंकी यह बात है और इसी दृष्टिसे सांसारिक सुख-दु:खका निरीक्षण और परीक्षण करके उनसे लाभ उठाना चाहिये।

भगवान्की प्रसन्नताके साधन

याद रखो—जगत्में जितने भी चराचर प्राणी है, सबके अंदर आत्मा तथा अन्तर्यामीरूपसे भगवान् विराजमान हैं। भगवान् ही उन सब रूपोंमें प्रकट हैं। अतएव उनकी सेवा करना, उन्हें सुख पहुँचाना और उनका हित करना तुम्हारा ध र्म है।

याद रखो—यदि तुम जगत्के प्राणियोंसे द्वेष-द्रोह करते हो, कठोर वचन कहकर उन्हें मर्म-पीड़ा पहुँचाते हो, क्रोध ा तथा अभिमानके वश होकर उनका अपमान-तिरस्कार करते हो एवं कामना और लोभके फंदेमें पड़कर उनका स्वत्व हरण करते हो तो तुम्हारे बाहरी पूजन और दानसे भगवान् कभी प्रसन्न नहीं होंगे।

याद रखो—यदि तुम छल-कपट करके लोगोंका धन लूटते हो, मीठे बोलकर दूसरोंको धोखा देते हो, अपने अधि ाकार तथा शक्तिका प्रयोग करके गरीबों और असहायोंको दबाते हो तो तुम्हारे बाहरके आडम्बरसे भगवान् कभी प्रसन्न नहीं होंगे।

याद रखो—यदि तुम अनाथों और असमर्थोंको डराकर या फुसलाकर अनुचित लाभ उठाते हो, सत्ता, वैभव और पदके प्रभावसे गरीब पड़ोसियोंके घर-द्वार छीनते हो एवं अधिकारियोंके साथ षड्यन्त्र करके सरल हृदयके लोगोंको

ठगते हो तो तुम्हारी पद–मर्यादा–नेतागिरी या थोथे धर्मात्मापनसे भगवान् कभी प्रसन्न नहीं होंगे।

याद रखो—यदि तुम विधवाओंके धनको धोखेसे हड़प जाते हो, उनका अपमान–तिरस्कार करते हो, उनके साथ बुरा व्यवहार करते हो और उनको मीठी–मीठी बातोंमें फँसाकर धर्मच्युत करते हो तो भगवान् तुम्हारे तिलक–मालाओं, खादीके कपड़ों या सेवकके स्वाँगसे प्रसन्न नहीं होंगे।

याद रखो—यदि तुम अपने मनमें दम्भ–दर्प, वैर–विरोध, क्रोध–हिंसा, अभिमान–गर्व, छल–कपट और राग–द्वेष आदिको भी रखते हो और ऊपरसे साधु सजे रहते हो तो भगवान् तुम्हारी उस कृत्रिम साधुतासे और तुम्हारी उपदेशभरी शास्त्रवाणीसे प्रसन्न नहीं होंगे।

याद रखो—भगवान्‌की प्रसन्नताके लिये किसी बाहरी आडम्बरकी, वेश–भूषाकी, बोल–चालके ढंगकी, उपदेश–आदेश देनेकी, किसी प्रकारका स्वाँग बनानेकी और साधु सजनेकी आवश्यकता नहीं है। भगवान्‌की प्रसन्नताके लिये तो चाहिये—निर्मल मन; जिसमें अहिंसा, सत्य, अलोभ, संतोष, दया, अस्तेय, अभिमानिता, अदम्भिता, वैराग्य, प्रेम, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, नम्रता, उदारता, मधुरता, गम्भीरता, धीरता, सहिष्णुता, शुचिता, श्रद्धा, धर्मभीरुता, क्षमा और ऋजुता आदि दैवी गुण भरे हों और सबसे प्रधान रूपमें चाहिये-भगवान्‌के प्रति मनमें अहैतुकी विशुद्ध भक्ति।

याद रखो—मानव–जीवन बहुत थोड़े कालके लिये प्राप्त है और प्राप्त हुआ है भगवान्‌को प्रसन्न करके उनको प्राप्त करनेके लिये। यदि यह कार्य इसजीवनमें न बन पड़ा और विषय–विलासमें ही जीवन बीत गया तो उससे केवल जीवनकी व्यर्थता ही नहीं होगी, महान् पापका संग्रह भी होगा, जो अनन्तकालतक दु:ख देता रहेगा।

अवसर हाथसे मत जाने दो

याद रखो— तुम अकेले आये हो और अकेले ही जाओगे। यहाँकी न तो कोई चीज तुम्हारे साथ जायगी और न कोई आत्मीय स्वजन ही जायगा।

याद रखो—आज घरमें तुम्हारी बड़ी आवश्यकता है। तुम भी ऐसा मानते हो कि मुझसे ही सारा काम चलता है, मेरे न रहनेपर काम कैसे चलेगा? पर तुम्हारे मरते ही कोई–न–कोई व्यवस्था हो जायगी और कुछ दिनों बाद तो तुम्हारे अभावका स्मरण भी नहीं होगा।

याद रखो—जैसे आज तुम अपने पितामह आदिको भूल गये हो और अपनी स्थितिमें मस्त हो, ऐसे ही तुम्हारी संतान भी तुम्हें भूल जायगी।

याद रखो—तुम व्यर्थ ही आसक्ति तथा ममताके जालमें फँस रहे हो और मानव–जीवनके असली ध्येयको भूलकर जिससे एक दिन सारा सम्बन्ध छूट जायगा और कभी उसकी याद भी नहीं आयेगी, उसीमें मनको फँसाकर, जीवनको अधोगतिकी ओर ले जा रहे हो।

याद रखो—तुम पहले कहीं थे ही, वहाँ तुम्हारो माता–पिता, घर–द्वार, पत्नी–पुत्र आदि भी होंगे ही। आज तुम्हें जैसे उनकी याद ही नहीं है, वे किस हालतमें कहाँ हैं, इसका पता लगानेकी भी कभी चिन्ता मनमें नहीं होती, वैसे ही यहाँसे चले जानेपर दूसरे जन्ममें यहाँके सब कुछको भूल जाओगे।

याद रखो—सम्बन्ध अनित्य और काल्पनिक होनेपेर भी जबतक तुम्हारी इसमें ममता और आसक्ति है, तबतक

तुम्हारी कामना–वासना नहीं मिट सकती एवं जबतक कामना–वासना रहेगी, तबतक दुष्कर्म भी बनते ही रहेंगे और जबतक दुष्कर्म बनेंगे, तबतक सुखका भी मुख कभी भी नहीं दीखेगा।

याद रखो—जबतक तुम यह सोचते रहोगे कि अमुक परिस्थिति आनेपर भगवान्का भजन करूँगा, तबतक भजन बनेगा ही नहीं, परिस्थितिकी कल्पना बदलती रहेगी; अतएव तुम जिस परिस्थितिमें हो, उसीमें भजन आरम्भ कर दो। भजन होने लगनेपर परिस्थिति आप ही अनुकूल हो जायगी।

याद रखो—भजनमें मन लगनेपर संसारके बन्धन स्वयमेव शिथिल हो जायँगे। भगवान्में ममता और आसक्ति हो जायगी, तब घर–परिवार, धन–सम्पत्ति यश–मान आदिकी हथकड़ी–बेड़ियाँ अपने–आप कट जायँगी। फिर इसके लिये कोई अलग प्रयास नहीं करना पड़ेगा।

याद रखो—जगत्से भागनेकी चेष्टा करोगे, इसे छोड़ने जाओगे तो और भी जकड़ोगे। इसे छोड़नेका प्रयत्न छोड़कर भगवान्में लगानेका–सब प्रकारसे लगनेका प्रयत्न करो। भगवान्की रूप–माधुरीकी जरा–सी झाँकी मिलते ही भोगोंके रूप–सौन्दर्यका–सुख–विलासका स्वप्न तत्काल भंग हो जायगा। फिर इस ओर झाँकनेको भी मन नहीं करेगा।

याद रखो—मानव–जीवन अजगरोंकी भाँति लम्बे कालतक नहीं रहता। फिर इस समय तो बालक तथा तरुण भी सहसा मृत्युके शिकार हो जाते हैं। अतएव बुढ़ापेकी प्रतीक्षा न करके तुरंत भजनमें लग जाओ। यह अवसर हाथसे निकल गया तो पीछे सिवा पछातनेके कोई भी उपाय नहीं रह जायगा।

याद रखो—भगवान्ने तुमपर कृपा करके संसार–सागरसे तरने और भगवान्का प्रेम प्राप्त करनेके सोर साधन सुलभ कर दिये हैं। इन साधनोंको पाकर भी यदि तुम असावधान रहोगे और इनसे लाभ नहीं उठाओगे तो तुम्हारे समान मूर्ख और कौन होगा?

भगवान् श्रीकृष्ण और उनकी स्वरूपाशक्ति श्रीराधिकाजीके स्वरूपका यथार्थ ज्ञान उन्हींको है। दूसरा कोई भी यह नहीं कह सकता कि इनका स्वरूप ऐसा ही है। जो कुछ भी वर्णन होता है, वह स्थूल रूपका और आंशिक ही होता है। भगवान् श्रीकृष्ण समग्र ब्रह्म या पुरुषोत्तम हैं। ब्रह्म, परमात्मा, आत्मा–सब इन्हींके विभिन्न लीला–स्वरूप हैं। श्रीराधाजी इन्हींकी स्वरूपाशक्ति हैं। श्रीराधाजी और श्रीकृष्ण सर्वथा अभिन्न हैं। भगवान् श्रीकृष्ण दिव्य चिन्मय आनन्द विग्रह हैं और श्रीराधाजी दिव्य चिन्मय प्रेम विग्रह हैं। वे रसराज हैं, ये महानुभाव हैं। भगवान्की इन्हीं स्वरूपाशक्तिसे अनन्य कोटि शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, जो जगत्का सृजन, पालन और संहार करती हैं। भगवान्ने स्वयं कहा है–जो नराधम हम दोनोंमें भेदबुद्धि करता है वह चन्द्र–सूर्यकी स्थिति–कालतक कालसूत्र नामक नरकमें होता है।

जब युगल सरकार कृपा करके अपने दुर्लभ दर्शन देना चाहें तभी दर्शन हो सकते हैं। उनकी कृपा ही उनके साक्षात्कारका उपाय हैं।

(**श्रीराधा-माधव-चिन्तन** नामक पुस्तकसे)

16 सितम्बर–निश्चल भावसे विश्वासके साथ मनको आज्ञा दो–रे मन तू मेरा सेवक है। मेरी सत्ता और चेतनासे तेरा जीवन है। तू मेरी एक स्वीकृतिमात्र है। मेरी आज्ञा मान और जैसे मैं चाहूँ वैसे रह। इधर–उधर किया तो मैं तुम्हें नष्ट कर दूँगा।

(**दैनिक कल्याण-सूत्र** नामक पुस्तक से)